'अपना सब कहिया धनिक होयब?' ओ जिज्ञासासँ पुछलकनि।
'से किएक?'
'स्कूलमे हमरा बड्ड जोर सँ भूख लागि जाइत अछि।'
'खा क ऽ जे जाइ छ ऽ तइयो?' ओ पुछलथिन।
'से तँ मधुबनी घुमतीए लग पचि जाइत अछि।' हमरा पाइ कहाँ रहैत अछि। जहाँ कहाँ दैत छी पाइ? कए टा विद्यार्थी त अपना संगमे जलखै अनैए। खूब खाइत रहैए। नहि त जेबीमे पाइ रखने रहैए। कीनि कीनि क ऽ चिनिया बदाम कि बिस्कुट खाइत रहैत अछि। हमरो बड मोन होइत रहैत अछि, बाबू जी।' बेटाक ई बात-सुनि क ऽ बड कचोट भेलनि हुनका। मुदा ओ किछु बजलाह नहि।
'बाबू जी, अपना सब सब दिन एहिना गरीब रहब?' बेटा अनचोकहि पुछलकनि। हुनकर ध्यान टुटलनि।
'नै-नै सब दिन कतहु एहिना गरीब रही?' ओ बुझऔलथिन।
'कहिया धरि रहबै?' ओ पुछलकनि।
'हमरो लोकनि सब दिन गरीब नहीं रहब। हमरो सबहक दिन फिरत।' ओ बुझऔलथिन।
'अपना सबहक दिन कहिया फिरत?' ओ पुछलकनि।
'फिरबे करतैक दिन। देखहक ने।' ओ कनी खौंझाइत कहलथिन।
'कोना बुझै छियै से अहाँ?' ओ पुछलकनि।
'हमर बाप कहने छलाह।' ओ शान्त स्वरें कहलथिन।
'की कहने रहथि?' ओ फेर पुछलकनि।
'कहने रहथि जे दुखक दिन बीति जाइत छैक तँ सुखक दिन अबैत छैक।' ओ कहलथिन।
'कहिया?' रमानाथ पुछलकनि।
'जल्दीए।' कहलथिन।
'तैयो कहिया?' रमानाथ के पिताक उत्तरसँ संतोष नहि भेलैक।
'जहिया तों खूब नीक जकाँ पढ़ि लिखि क ऽ पैघ भ ऽ जयबह। खूब ज्ञानी भ ऽ जयबह तखन।' ओ बुझऔलथिन। संगहि सभ गाम भरिक लोक सबमे मेल भ ऽ जयतैक तखने।'

उचितवक्ता

गंगेश गुंजन

उचितवक्ता

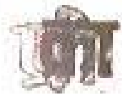
[मैथिली कथा-संग्रह]

डॉ० गंगेश गुंजन

●

क्रान्तिपीठ प्रकाशन

एल० आइ० जी० एच० फ्लैट-37
लोहिया नगर, पटना-800020.



पारम्परिक आवश्यकताक अनुसारे हमहुँ एतऽ लेखकक विषयमे संक्षिप्त सन परिचय छापऽ चाहैत छलहुँ, परन्तु लेखक मना कऽ देलनि। लेखकेक शब्द मे :
"कथा सभके' स्वयं बाजऽ दियौक आ' पाठक वर्ग स अपने गप करऽ दियौक। एहि लेल मध्यस्थता की ? ओकालति जकाँ नहि बुझाइत छैक से ? कथा सभ अपने बाजओ आ' उपस्थित करओ अपन पक्ष।"

—प्रकाशक

☐	अवसर	: २६ मार्च १९९१ ई०
©	सर्वाधिकार सुरक्षित	: श्रीमती कान्ति सर्जना
☐	प्रकाशिका	: श्रीमती इन्दु बाला सिंह
☐	आवरण शिल्पी	: श्री भुवनेश प्रसाद डौंडियाल
☐	अवधारणा	: लेखक
☐	मूल्य	: पचास टाका मात्र सजिल्द पचहत्तरि टाका मात्र
☐	प्रकाशन	: शान्तिपीठ प्रकाशन, एल०आइ०जी०एन०फ्लैट37 लोहिया नगर, पटना-२०.
☐	मुद्रक	: ए० आर० प्रिंटर्स, डी-१०२ न्यू सीलमपुर, दिल्ली-५३

UCHITVAKTA : A SHORT STORY COLLECTION IN MAITHILI. BY DR. GANGESH GUNJAN.

ई पोथी अपन श्रद्धेय भैया आ' भौजी, श्री राजेश्वर झा तथा श्रीमती अपर्णा देवी कें सादर समर्पित !

●

उचितवक्ता

क्रम । पृष्ठ संख्या

शब्दक सरोकार

॥ एक ॥ सूचना-संचारक विश्वव्यापी विस्फोट सँ आइ जीवित धरतीक एकहु टा कोन बाँचल नहि अछि। सम्पूर्ण मानव-समाजक ई पराभव छैक जे ओकरा, ओही सब किछु सुनऽ, जानऽ तथा सोचऽ-कहऽ-करऽ पड़ि रहल छैक जे ओकर प्रयोजनक नहि छैक जाहि सँ ओकर सरोकार नहि छैक ।

हमरा इहो बुझाइत अछि जे जतेक रास विचार आ' दर्शन एखन धरि सृजित आ' प्रचलित होइत रहल अछि तथा जे संस्था, तकर बाद संगठन वा व्यवस्था पद्धतिक रूप धरैत अछि से अपना आपनी कऽ मात्र एक टा खास नाव जकाँ भऽ जाइत अछि । सबजाना नाव नहि, एक जनिया नाव । ताहि नाव कें सब, अपनहि दिशा मे अपने बाँहिक जोरें पतवारि सँ, अपनहि दृष्टिकोणें खास कऽ खेपैत अछि । खेपैत जाइत अछि । आन सभ बात-विचार, ओकरा दृष्टिकोण मे प्रायः अप्रासंगिक लगैत छैक. जखन कि एहन सभ टा विचार-खेवैया हमरा एकसरुआ एक भग्गु मलाह जकाँ बुझाइत अछि।

ओना, कालक अनादि अनन्त प्रवाह मे, एक संग नाव खेवैत अनेक विचारक नाविक एकहि तरहक समाने उद्देश्यक छथि से आभास भऽ सकैत अछि, परन्तु से प्रायः भ्रम थिक । कारण जे ओ सभ, अपना-अपना लक्ष्य मे पृथक्-पृथक् छथि । मन मे तें प्रश्न उठब स्वाभाविक लगैत अछि जे एतेक युग सँ आइ धरि एतेक तरहक विचारधारा, एतेक-एतेक दर्शनक उद्भावना तथा प्रचारक संगहि संङ्ग समय-समय पर समाज द्वारा ओकरा स्वीकार अस्वीकार करबाक उथल-पुथल कऽ दै बला जनान्दोलन किएक होइत रहैत छैक ?

तें सूचना-संचारक एहि महाविस्फोट मे हमरा एहि लोक-सत्यक अनुभव होइत अछि जे सम्प्रति साधारण मानव समुदाय स्वयं के मात्र हेरायल-भुतिआयल तथा नाना प्रकारें अपना कें ठकायल अनुभव कऽ रहल अछि । कए ठाम तँ सम्भ्रान्त वर्गीय सत्ता सँ परिचालित एहि समाजक अस्तित्व मे ओ अप्रासंगिक भऽ गेल अछि । युग प्रचलित कुल शासन-पद्धति साम्राज्य-वाद, पूँजीवाद, साम्यवाद, लोकतंत्रीय समाजवाद आ नव प्रजातंत्र आदि-आदि

सभ मे ओकर अस्तित्व मात्र गनती अर्थात् आँकड़ाक रूप मे रहि गेल छैक तथा आब अपन एहि पराभव कें सही-सही अनुभव कऽ सकबाक भाषा आ' लोक-विवेक साधारण जन कें प्राप्त भऽ गेल छैक तें ओकर अंतर मे एक टा निर्णायक उपक्रमक प्रक्रिया चालू भऽ चुकल छैक । ओ स्तब्ध नहि, चुप अछि एखन । समय पर से, स्वाभाविक परिणाम जकाँ सभक सोझाँ अयबे करतैक निर्णायक उपक्रम, से हमर-लेखकक आत्म विश्वास तथा दृढ़ आशा । विचार-युद्ध, सत्ता-संघर्ष, तुच्छ राजनीतिक स्वार्थ-संग्राम आ तज्जन्य आयल संपूर्ण मानवीय मूल्य पर चतुर्दिक विपत्ति कें, अपन गत तीस-पैंतीस चिन्तन-वर्षकें देखैत, हम स्वीकार करैत छी जे हमर लेखन स्वान्तः सुखाय अछि।

॥ दू ॥ लेखक अपन समाज सत्य, समय-सत्य एवं समकालीन विचाराभिव्यक्ति-माध्यमक निर्भीक प्रयोक्ता, तें 'उचितवक्ता' होइत अछि एही तर्क सँ कृति सेहो स्वयं उचितवक्ता होइत अछि जकर कि आजुक समाज मे घोर अभाव । एहि पोथीक नाम तें, 'उचितवक्ता'—कथा-संग्रह धरैत छी ।

बारह टा उचित वक्ता छथि एहि संग्रह मे । पहिल कथा-संग्रह अन्हार इजोत ६४ ई० मे छपल रहय । दोसर संग्रह मैथिली अकादमी पटनाक प्रकाशन-प्रसुति-यन्त्रणाधीन अछि, आब तँ ६ वर्ष सँ प्रायः । तेसर संग्रह ई (यद्यपि प्रकाशित दोसरे संग्रह थिक) १९९१ ई० मे । कएक वैचारिक एवं व्यावहारिक कारणें, लेखकीय-सम्वेदना तथा दृष्टि विकासक ध्यान रखैत, एहि संग्रह मे पैंसठि ईस्वी सँ अठासी ईस्वी धरिक अपन किछु कथा अपने लोकनिक समक्ष निवेदित करैत छी । एतऽ कोनहुँ प्रकारें हमर ई मान्यता नहि अछि जे ई सब, सभटा हमर प्रतिनिधि कथा-रचना थिक । नहि । हमरा बुझाइत अछि जे एक-एक शब्द जे हमर कलम सँ निकलल, हम सभक उत्तरदायी छी तें ओ सब हमर प्रतिनिधित्व करैछ ओहो शब्द, कथा, कविता किंवा अन्य विधाक रचना जकरा कदाचित् समय नहियो मानत । सब हमरे । जेना स्वस्थ सुन्दर सक्षमक संगहि संग कोनो एक टा विकलांग अविकसित सन्तानक जनक सेहो होबऽ पड़ैत छैक कहियो । ओहो बच्चा ओही पिताक । तें वैह ओकरो जवाबदेह ।

॥ तीन ॥ सभ कथा समय, सत्य तथा लेखकीय आदर्शक पृष्ठभूमि मे कयल गेल लेखकक आत्म संघर्षक कथा-सृष्टि थिक, से कहबा मे हमरा कोनो तारतम्य नहि अछि । ई सब टा, एहिना शब्दक काया नहि धऽ लेलक, प्रत्युत मानस मे स्वरूप ग्रहण करबाक एक टा प्रक्रियाक अंतर्गत सृजित भेल अछि । छुच्छे घटना अथवा कथानक कोनो श्रेष्ठ रचना नहि बनैत छैक । श्रेष्ठता समय,

बोध, इतिहास-विवेक, समाजक सम्पूर्ण परिस्थिति आ' तकरा विषय मे लेखकक दृष्टि-भंगीक सर्जनात्मक प्रयोग सँ निमित होइत छैक। दृष्टि आ' दृष्टि-भंगिमा रचनाकार मुख्य पूंजी थिकैक आ' प्रयोग-कौशल ओकर साधना। ताही अर्थ मे हमर मत कहैत अछि जे, जे जतेक महान् कृति होइछ से अपन अतीत आ' वर्तमानक समक्ष ओतेबे महान् व्यंग्य सेहो रहैत अछि।

एहि कथा सभ मे जखन स्थान तकर स्वयं भेटैत चलय तँ हमर सार्थकता अन्यथा अनेक प्रतिक्रिया सादर शिरोधार्य।

॥चारि॥ अपन सभ उपलब्धि कें हम, सर-सम्बन्धीक आ महिलेक खाड़ीक लेखक-कविक आशीर्वाद कऽ बुझैत छी तथा मित्रवर्गक स्नेह शुभकामना। तें हुनका लोकनिक संगहि कृतज्ञता आ' आदरपूर्वक स्मरण रहैत छथि-भैया-भौजी, सरस्वती जी-नुनू, छोटका भैया-छोटकी भौजी, हमर कनियाँ, हमर मित्र, प्रभास कुमार चौधरी, भीमनाथ झा, रमणजी आलोचक साहेब मार्कण्डेय प्रवासी, सुधा जी सुषमा, अवधेश-भाभी, देवेन्द्र, नरेन्द्र, रणविजय, इला, सरिता, शंकर मोहन झा, मुकुल, सत्येन्द्र, चन्द्रेश, आ' मंजु, विजया, शैलेश, हमर बाल सखा धीरु भाव तथा यार, सिन्हा साहब व्रजी भौजी, स्व० एस० अखिल, भगवतीचरण श्रीवास्तव, अजय, सुरेन्द्र अबोध, प्रो० रामबुझावन सिंह, केदारनाथ कलाधर, मधुकर गंगाधर, हीरानन्द शास्त्री जी, सुधांशु शेखर चौधरी जी, पं० रामदयाल पांडेय, डॉ० कुमार विमल, निशान्तकेतु, भगवती शरण मिश्र अपन रेडियो गुरु केशव पाण्डेय जी, नर्मदेश्वर उपाध्याय जी··· हिनका लोकनिक आत्मीय छविक अमृत सिलसिला अछि।

तखन अंततः सर्वोपरि एकटा समाज! समाज जाहि मे हमर माँ-पिता सँ लऽ कऽ नाडीन गार्डिमर तथा मदर टेरेसा आ' मोलायस बेंजामिन धरि छथि।

ए०आर० प्रिंटर्स प्रबन्धक श्री कुमरकान्त चौधरी, श्री विजयचन्द्र झा, श्री सत्येन्द्र मिश्र, श्री उमेश झा तथा प्रिय भातिज कलाकार चि० शान्तनु पाण्डेय एवं श्री भुवनेश प्र० डौंडियालक स्नेह सक्रिय सहयोगहि सँ ई पोथी छपब संभव भऽ सकल अछि। तें सबकें हृदय सँ धन्यवाद।

॥पाँच॥ हमरा सभ गोटय कें एकर विशेष हर्ष जे ई पुस्तक चि० शैलू बाबूक जन्म-दिनक (२६ मार्च) उपलक्ष्य मे प्रकाशित भऽ रहल अछि। □ गुंजन

बेलगाँव
नई दिल्ली

युद्धे युद्ध

बारह घंटाक भीतर, ई तेसर बेर। ओ होटलमे आबि क' बैसल। माथ पर बिजलीक पंखा घुरमी करैत छैक। मूड़ी उठा क' ओ एक बेर अस्पष्ट पाँखि सबकें देखलक आ' फेर साँस छोड़ैत कुर्त्ताक बुताम खोलि लेलक। भीषण गर्मी। जानि नहि कोना लोक जीयत? इच्छा भेलैक जे बर्फक पानिसँ भरि छाक नहाय। कपारसँ घाह् चूबल रहैक।

दू छन ओ सोचलक, कनीकाल तक बिना किछु बजनहि चुपचाप पंखा तरमे बैसल रहय। एही बिचार-सङ्कें ओकर पपनी खसि पड़लैक। फेर जेना चौंकैत लजा उठल। क्यो देखि क' की सोचत? बाटे-घाटे सुति जायवला प्राणी।

बेयरा सम मे ठाढ़ भ' गेलैक। ओ बिना देखनहि, ओकरा एक ग्लास पानि द' जाइ लेल कहि क' साँस छोड़लक। बेयरा चल गेलैक। सोझाक अयना पर, अनायास आँखि गेलैक। पानिक छिटका सबमें दगायल अयना मे अपन आकृति ओकरा बेसी डेहियायल लगलैक।

एहन जीवन जीबैत आइ नौ वर्ष सँ बेसी भ' रहल छैक। एकटा असकर कोठली, होटलक भोजनक जीवन आ' चाह आ' निश्चित घंटासँ बहुत बेसी घंटा तक बिना अतिरिक्त मजूरीक कार्य करैत जीवन। भोर-साँझ, दिन दुपहर बीच सड़क पर चलैत जीवन। आ' सुस्ताइ लेल कोनो चाहक दोकानमे पाँच मिनट-सात मिनट धरि ठहरैत, पाइ चुकबैत आ' पैर आगाँ बढ़ि जाइत असकरुआ डेगक अंतहीन जीवन!

ओकरा बुझएलैक, जीवनकें जतेक मनःस्थितिमे ओ अनुभव कयने अछि, बहुत कम्मे लोक क' सकल हेताह, मुदा फेर तामसो उठि गेलैक। अपना विषयमे ओकर अतिवादिताक प्रवृत्ति पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल छैक। वस्तुतः ओ जीवनकें बहुत कम रूप मे बुझने छैक।

आगाँमे पानि राखि, कन्हा परहुक तौलियासँ हाथ पोछैत बेयरा प्रतीक्षा कर' लगलैक मुदा ओ एहु बेर चुप रहल। खाली, ग्लास उठा क' पाँच-सात घोंट पानि घोंटि गेल। बेयरा भरिसक खौंझा क' चल गेलैक। मालिक डँटै छैक। दिन भरि मे कतेको बाबू अहिना घंटा भरि पंखा तरमे बैसि क' चल जाइवला अबैत छथिन। मात्र ग्लास भरि पानि आ' एक प्याली चाह।

ओ सोचलक किछु खाइ लेल मंगबए । जेबीमे एखन पाइक खास अभाव नहि छैक । मुदा जानि नहि किएक फेर बेयराकें सोर क' एक प्याली चाह द' जाइ लेल कहलकैक आ' आब आतुरतासँ प्रतीक्षा कर' लागल चाहक ।

अइ बेरमे आबि क' सब दिन ओकर माथ टनक' लगैत छैक आ' सौंसे देह जेना आलससँ टूट' लगैत छैक । ओ एकटा हाफी छोड़लक आ' मुँह पर चुटकी बजौ-लक । बगलहिमे आबि क' तुरन्त बैसल किछु नवयुवकक गर्म स्वर सुनि-सुनि तामस उठलैक । ओ सभ अपनामे एकबारक पन्ना लए झगड़ा क' रहल छलाह ।

'पहिने हमरा देख' दे' ।

'देखौ ने, मुदा एकटा पन्ना हमरा दे । तावत हमहुँ त' देखिदैक' ।

'धम्हे, द' दै छियौ' ।

जानि नहि मामूलियो गप्पकें लोक किएक हल्ला क' दैत छैक ? होटलमे आबी त' हल्ले मचबैत । कनीकको काल त' शान्ति सँ बैसब सीख' लोक······

'एँ रौ, ई त बाढ़िक भीषण प्रकोप छौक ?'—आशंके फाटल स्वर ।

'कोन इलाकामे रौ ?'

'धम्हु—देख' दे । अपनहि सभक इलाका···''

तेकर बाद ओ युवक पूरा गंभीरतासँ पढ़' लागल···''राती रात अचानक बाढ़ का पानी बहुत चढ़ आया और पूरा गाँव बह गया । लगभग डेढ़ सौ घर बर्बाद हुए । बेघर लोगों के सेवार्थ···''

एकाएक जेना रेडियोकें मिझा देल जाइक । ओ ध्यान कें एकदम्मसँ हटा लेलक आ' सोच' लागल । एतनीटा जीवनमे नहि जानि कतेको बाढ़िक दहायल घर-अंगनाक करुण गाथा देखि-सुनि चुकल अछि । बाढ़ि ओहिना अबैत छैक आ' हजारो लोक एहिना अनाथ भ' जाइछ । ई बाढ़ि ओकरहु जीवन मे आदियेसँ लागल छैक ।

चाहक गंध जखन नाक धक' पैसलैक त' ओकर ध्यान हटलै । प्यालीक डंटी पकड़ि क' उठौलक आ' एक घोंट पीबि कात मड़ुक टेबुलकें देखलकै । सभ युवक ओकरासँ अवस्थामे कम रहैक । सबहक आकृति पर तखन अनुभवहीन चिन्ता रहैक । देखि क' ओकरा मन करुणासँ भरि गेलैक । मनहि मन जेना बाजल—'चिन्ताक गप्प नहि बंधु, घर आंगन फेर बनि जाइत छैक, खाली आवश्यकता होइत छैक रौद-बसातकें सहैत जाइक···' ओ चाह पीबैत रहल आ' मनहि मन आश्वस्त होइत रहल, जेना ओ चिन्तित युवक सभ ओकर मनोभाव सुनि लेने होइक ।

भ' सकैत अछि, अइ युवकमेसँ कोय, हु-बहु वैह हो जे सात-आठ वर्ष पहिने ओ स्वयं छल । ओ सोच' लागल ।

समयक सङ्ग सबटा स्मृति, घटना नहि मिटा सकैत छैक । कतोक एहनो स्मृति होइत छैक जे कहियो नहि छुटैत छैक ।

ओकर मन अनायास व्यतीतजीवी होब' लगलैक । तखन लगलैक ओकरा आगाँ मे अतीतक ओ समस्त घटना, व्यक्ति बैसल होइक आ' ओ दुःख-सुखक गप्प करैक मुद्रा मे आबि गेल हो ।

आब त' वर्षोक ठेकान नहि छैक । जानि नहि कए वर्ष भेलैक ?

साँझ पड़बा मे कनीक देरी रहैक । गामक वातावरणमे बाध्यसँ घूमि रहल माल-जालक घंटी आ' खुरक स्वर भर' लागल रहैक । बड़दक पैर पर धूरसँ धूआँ उठ' लागल रहैक आ' भगवतीक चिनवार पर, तुलसीचौरा लग मझिली काकी दिवारी लेस चुकल रहथिन आ' भनसाकोठलीमे चूल्हि पजारैक उद्योगमे लागल रहथि । दलानसँ हटि क' एकपेड़िया कात मे टूटा नेना माटिक घर-आंगनमे अपस्याँत । टूनू दुपहरियेसँ हरान छल । दुपहरियामे त' भोज-भात सेहो भेल रहैक । घरवासक भोज । अखैक हरि-यर-हरियर झालरिवला पातक थारीमे चिकनी माटिक पूआ, कादोक दही आ' पिलौ-झियाक नढ़आ, तिलकोड़ाक पाकल फड़क पनतोवा···परसल गेल रहैक गृहणीक मर्यादिसँ मण्डित सात वर्षक रंजना, कपार पर, माटि-पानिसँ सनायल ओझरायल केश लेने नोथारीक पुछारीमे व्यस्त आ' आठ-नौ वर्षक जयन्त ! ओ घरवैयाक दायित्वसँ चिंतित, धोंरियासँ अपने डांड़ केँ कसैत, पेट परहक माटिकें पोछैत···'पैतोवा चाही ? है, हइये लिय' । आ' एकटा पाकल तिलकोड़ाक लाल भुजंग फ'ड़ पात पर ।

नोथारी सब चल गेल रहथिन्ह, ओलक पातक पान आ' सिककठिक कारी-कैलनी फरक सुपारी ल' क' । रहि गेल रहय टुनू सिजू !

आगाँमे गायक गोबर आ' माटिसँ नीपल-पोतल आंगन आ भिजले माटिक चाबा पर. मंठोक खुट्टा पर टांगल नारसँ छारल कर्पैक चार । मुखमुद्रा गंभीर वस्तु-वादक व्यवस्था आ, कोठीक स्थान, बखाड़ी-तक केर व्यवस्थाक चितामे निमग्न । धान बेसी हेतैक तें बखारी चाही । बखारी त' दलान पर धनहु बना लेल जेतैक । बाबूकें कहल जयतन्हि जे नानी-गामसँ बएलगाड़ी पर बहुत रास बाँस मँगा दिअ' । फेर खूब मजगूत बखाड़ी बनतै, ऊँच आ' बड़की टा कोठवाला बखारी । अइ बेर बड़ धान हेतैक···

ओम्हरसँ रहिकावाली सोर पाड़ैत अयलै । आ' शासनक स्वरें बाज' लगलै,—''रंजू बौआ, एतेक अन्हार भ' गेलै आ' अहाँ एखन धरि खेलेमे लागल छियै ? वैह माँ खिसियायल छथि । जल्दी चलियौ ''।

टुनू नेना डरें सकदम्म, सभ खेलाइ-धुपाइमे मोने ने रहलैक कनीवको जे अन्हार भ' गेलैक । माँ आइ अवस्स मारथिन्ह ।

'जन्तु, आब फेर काल्हि भोरे खन खेलायब । की ने ?' जयन्त चुप ।

'बेस रंजू' । तकर बाद रंजू, रहिकावालीक सङ्ग अपना अंगना चलि जाइत रहलि । जयन्त अन्हारमे ठाढ़ अपन छोट-छिन घर-आंगन देखैत रहल । फेर स्थिरे पयरे ससर' लागल अपना दलान दिस । आनि नहि ओकरा आइ कतेक खिसिऐथिन्ह माँ ? यद्यपि आन दिन कोनो खास नै खिसियाइ छथिन, तइयो आइ कनी बेसी अन्हार भ' गेलैक अछि । भ' सकैत अछि खिसियाथिन्ह, ''अन्हार भ' गेलैक आ' अहांकेँ अंगनाक बाट नहि फुरल एखन धरि ? अन्हारमे कतेक साँप-कीड़ा बुलैत रहैत छैक से होश नहि छनियो ?''

आइ जयन्त चुपचाप सुनि लेत । किछु ने बाजत । नहि त' फेर काल्हि खेलाइयो नइ जाय देत जयतैक मुदा तैयो ओकर पएर थम्हकऽ लगलैक ।

माँ आइ चुप रहथिन्ह । ओ चुपचाप पँलथी परसँ पानि ढारिक' पएर-हाथ धोब' लागल । फेर छोटकिनमा पीढ़ी पर बैसी क' खयलक आ' ओछाओन पर पड़ि रहल । माँ आइ पहाड़ा सेहो पढ़' नहि टोकलथिन । जयन्त आँखि मूनि सूति रहल आ' भरि राति सपनामे अपने छोट-छिन घर-अंगना देखैत रहल···

भोरे निन्न टुटितहि आँखि मीड़ैत दौड़ल गेल अपन घर लग । पहुँचतहि कोढ़ धक द' रहि गेलैक । ई की भ' गेलैक ? चारू कात पानियेँ पानि । माटिक कतहु कोनो चेन्ह ने बाँकी । खाली उज्जर-उज्जर पानि । ने एकपेड़िया, ने ओ माटिक घर-आंगन सब किछु दहा क' चल गेलैक ।

जयन्त केँ ठक-मुड़ी लागि गेलैक । फेर किछु मिनटक बाद ओकर पएर रंजूक अंगना दिस बढ़' लगलैक —जा क' कहि दैक जे आइ भोज-भात किछु नहि हेतैक । घर त' बाढ़ि दहा क' ल' गेलैक ।

ओहने एकटा बुढ़िया बाढ़ि एक राति घरमे सुतलि रंजूकेँ सेहो दहा क' लेने चल गेलैक घर समेत । राता-राती घर काटि क' खसि पड़ल रहैक पानिमे । तेकर बाद, बीच मे कएक वर्ष बीत गेल रहैक बाढ़िवेक पानि जकाँ । जयन्त पैघ भ' गेल रहय । एकटा गाँवमे बियाह भेल रहैक । एकहि वर्षक बाद फेर ओहिना भयानक बाढ़ि आयल रहैक आ' ओकर फूसक घर खसाक' दहा देने रहैक । खाली ओ दुनू प्राणी बाँचि गेल रहय । बाढ़िमे घर-घर करैत स्त्री आ' आगाँ बड़का टा प्रश्न-'आब सुनू, हमरा कमाय जाय पड़त ।' ओ स्त्रीकेँ कहने रहय त' चौंकि गेल रहैक ।

'कत' ?

'कलकत्ता । दोसर ठाम गेनहुँ कोनो विशेष लाभ नहि । सुनैत छी ओत' बड़ जल्दी आ' नीक नौकरी भेट जाइत छैक ।' पत्नी मानि लेने रहथिन ।

पत्नीकेँ एकटा सुन्दर घरक मनोरथ छलनि । जाहिमे भगवतीक चिनवार हो, आ' दूध औंटक अलग चुल्हा आ' जाँत बैसेबाक स्थान । चारमे टांगल फूसर्सँ आयल सीक हो आ' जाफरी देल जंगला । ओलती मेँ गाड़ल ढकी ।

जयन्तक परोक्षमे एकाकीपनक भय ततेक नहि रहलनि । पाइ-कौड़ी जमा भ' गेने नीक घर ठाढ़ क' लेत, चारि बीघा जमीन कीनि क' घर बैसि रहत आ' करत ठाढ़सँ कुसियारक खेती । कतेक रुपैया होइत छैक । नौकरी त' मतलबे इएह । पाइ-कैंचा जमा क' किछु खेत-पथार बना ली आ' गामे पर गृहस्थी कर' लागी ।

मुदा अनमन पत्नीक सोचलहेक अनुसार किछु नहि भेलैक । वर्षहु ओ रहि गेल कलकत्ता । रुपैया सेहो कमायल । मुदा मासे-मासे स्त्रीकेँ किछु खास रकमक मनिआर्डर करवाक अतिरिक्त किछु नहि क' सकल । वर्ष-दु वर्षमे दस दिन लेल गाम गेल । संतानहीन अपन स्त्रीकेँ बोल-भरोस देलक आ' लटकल ओलतीमे बाँसक नव पाढ़ि-खुट्टा लगा क' गाम सँ घूमि आयल ।

'हे कोनो व्योंत क' क' ईंटेबाक कुर्सी दिया दियौक । नै त' एना साले-साले खुट्टो बदलने किछु फल नहि' ।

'तकरे इन्तिजाममे लागल छी किछु टाका जमा भ' जाय त' बुटा कोठली ठाढ़ क' नेव ईंटेबेक । ऊपर खपड़ो रहतै त' नै कोनो'···पत्नी संतुष्ट भऽ गेलीह, भविष्यक प्रतीक्षामे । हालेमे मरि गेल छ मासक बच्चाक तकलीफ हुनका कम भ' जाइन—नीक थिक । आब जे आओत तेकर भाग्य नीक रहतैक । पक्कामे रहत । ओकरा जकाँ वर्षा मे त' नहि भीजत ।

जयन्त भदवारि बिता क' जाइ लेल तैयार । आब दिने कतेक बाकी ? रुपैया-पैसा ततबा जोड़ि लेलक अछि जे माटिक गिलेबा पर पजेबाक देवाल ठाढ़ क' लिअए ।

ओकरा मनमे बसात जकाँ उत्साह भरि गेलैक । पत्नीक चिट्ठी अयलइए । अइ बेर जयन्तकेँ अवश्य निरोग आ' दीर्घायु बेटा हेतैक । ओकरा अबबाक समय तखन हेतैक जखन ओ पक्का घर ठाढ़ कऽ चुकत ।

ओ कतेको रंग-बिरंगक कल्पनासँ होटलमे बैसल भर' लागल । शरीर एखनहु थाकले रहैक, मुदा ओ सोच' लागल—मनुष्य प्रत्येक ओहन सुखकेँ बिसरि जाइत अछि जाहिसँ कनीको पैघ सुख भेटि जाइत छैक । तें पैघसँ-पैघ दुःख विस्मृत भ' जाइत छैक, कारण दुःखेक अनुपातमे ई संसार पैघ-पैघ सुखसँ सेहो भरल अछि ।

चाहक अंतिम घोंट लैत ओ बड़ प्रसन्न छल आ' रुपैया जोड़ि रहल छल । एतेक वर्षक अनवरत परिश्रमक बाद किछु मासमे ओ एकटा घर बना सकत जाहिमे ओ रहत, स्त्री रहतैक आ' धीया-पूता । आओर जकरा सुतलेमे कोनो बाढ़ि दहाक' नहि

स' जयतैक । ओकरा भेलैक, एखने पड़ाय गाम, आब असकर नहि रहब । गाँवसँ एतेक दूर परदेशमे''' ।

पाइ देब' काउन्टर पर आयल । सड़क पर भीड़ लागल रहैक । सभक आकृति पर चिंतायुक्त जिज्ञासा । होटलक रेडियोकेँ घेरने सभ ठाढ़ रहैक आ' चुपचाप सुनैत '''अरे ई त' विशेष समाचार बुलेटिन थिकैक आकाशवाणीसँ'''! ओ साकांक्ष भ' गेल आ' सुन' लागल । श्रोता सभक आकृति पर तामस आ, अभिमानक चेन्ह स्पष्ट रहैक । सभ क्यो जेना साँसकेँ थाति क' ठाढ़ रहय । जयन्त कनीक आओर आगाँ बढ़ि क' पुछारी कयलकैक । बीचहिमे एकटा सज्जन बड़ निषिद्ध सन गारि देलथिन । जयन्त केँ अपना देश पर आकस्मिक आक्रमणक ज्ञान भेलैक । ओकरा कानमे प्राय: सामूहिक रूपेँ पड़ल जाइत गारि 'इस बार बर्बाद कर दो स्साले को'''पड़ोसी और मित्र देश का नाटक करके छुरा भोंकता है पीठ में'''' क्रमश: मद्धिम होइत गेलैक । जयन्त स्वयं बड़ क्रोधित भऽ गेल ।

मनुष्य कहिया हएत मनुष्य, नहि जानि । मामूली स्वार्थक एहि युद्ध-वृत्तिक विनाश कहिया भ' पाओत से नहि कहि । छोटसँ-छोट गप्पक लेल एतेक-एतेक मनुष्यक नाश ? एतेक तबाही ! जयन्तक शान्तिवादी प्रकृति एकाएक जेना पजरल दियासलाइसँ सटि गेल पेट्रोलक टिन भ' गेलैक । उत्तेजनासँ ओकरा देहक नस-नसक सभटा धमनी, प्रतिकारी आक्रोशसँ भरि गेलैक''''''आब त' एहन परिस्थिति मे एकटा नहि समस्त घर-आँगन दहाड़-दहाड़ पर लगैत छैक''''''ओकर आँखि विचित्र भावसँ चमक' लगलैक। ओकर साँस बड़ी जोरसँ चलक लगलै' । □

सड़ी

—'तोरा मनमे कोनो पछतावा छौक ?' ओ पुछलकैक ।

ओकरा ठोरपर ओकर किछु मेंही आ स्वादिष्ट स्वादक सूक्ष्म तह जकाँ सटि गेल छलैक । ओ माथ हिला कऽ—''नहि'' कहलकैक आ खिक्खन विहुँसलि । ओकरा अनुभव भेलैक जे भरिसक ई ओकर मन पतिअयबा लेल बिहुँसि रहलि-छैक । असलमे ओ दुखसँ भरलि छैक आ पछता रहलि छैक । ई सभ टा होयब, ओ पछिला दू घंटासँ खाली सह्य करैत रहलि अछि । ओ सम्पूर्ण बुद्धिमत्तासँ ओकरा देखऽ चाहलक । ओकरा आँखिमे एक टा पारदर्शी शक्ति भरि गेल रहैक ।

पहिने ओकर कातेमे ठाढ़ि भेलि रहैक । ओ पुछने रहैक जे 'अहाँ एतऽ एकसरे की कऽ रहल छी ?' ओ अपनाकेँ गुकपबाक चेष्टा करने रहय । फेर कंठकेँ साफ करैत कहलकैक—''हम यथार्थसँ हटिकऽ एतऽ आबि गेलहुँ अछि ।''

—'अहाँ कोनो बात', अपन 'पुरना घर' मन पाड़ि रहल छी ?' ओ पुछलकैक ।

—'नः । मात्र एक टा प्रत्यक्ष वातावरणसँ बचबाक हेतु एतऽ आबिकऽ ठाढ़ छी । हमरा हृदयक अधिकांश भाग धह्-धह् जरि रहल अछि ।'

— 'अहाँक आँखियो लाल लगैत अछि । ओ कहलकैक—'अहाँ देखियौक अपन मुँह अयनामे । सत्ते ।'

ओ अपन मुँह देखलक । ओकर आँखि काते-काते लाल भऽ गेल रहैक । आ ओकर सुतोमे तँ बहुत पातर शिरा सभ प्रखरभऽगेल रहैक। ओ घबड़ाहटि आ उत्तेजनासँ चुप रहय । आ ओकर पंखामे चलिकऽ बैसबाक आग्रहकेँ कय बेर टारि चुकल छलैक । पछिला दू घंटासँ ओ एके बातक उत्तेजनासँ परेशान छल ।

—'तोहर तटस्था सहज छौक कि बनौतरी—जानि-बूझिकऽ ? ओ कोनो आशासँ पुछलकैक ।

—'अहाँकेँ की लगैत अछि ?''

ओ नहि बूझि सकैत छलैक । ओ नचार भऽ आँखि घुमा लेलकै । दुनू चुप छल । आब कोठलीमे पंखा घुमि रहल छलैक । नेना पीठपर झूलि रहल छलैक । भरि मोहल्लाक दुपहरिया कोठलीमे तेना समा गेल रहैक जेना ओ घर नहि, गली

हो। ओ खूब गम्भीरतासँ खौंझा रहलि छलि। ओकर-कान-लागल छलैक दरबज्जा पर। ओकरा चिन्ता लागल छलैक ओकर पर। ओ आङनमे बर्तन-बासन माँजि रहल छलैक।

—दुनू एक दोसराकेँ देखलक। फेर दोसर दिस देखऽ लागल। फेर हँसऽ लागल। फेर चुप्प भऽ गेल। आब मोहल्लाक आवाज बाजऽ लगलैक।

—'अरे, किछु बाजू !' ओकरा जेना मन पड़लैक।

—'बुझिये ने पड़ैत अछि जे की होयत ?' ओ असमर्थतासँ बाजल।

—'की होयत ?' ओकर स्वरक व्यंग्य बड़ कटगर छलैक।

ओ बजऽ लागल, जेना ओ ओकर व्यंग्य बुझबे नहि कयलकैक।

—'तोहर मतलब ?'

—'मतलब की ? भोरेसँ एके टा प्रश्न छल—अहाँ कखन आयब। आबि गेलहुँ। बस।' ओ कहलकैक।

—'अबबाक की अर्थ छैक ?'

—'अहीँ कहू की अर्थ छैक ? अहाँ आबि गेलहुँ। एहिमे की अर्थ भेटल ?' ओकर बात खूब ठीक छलैक आ एक टा ठेकनगर स्थानपर चुभ दऽ गड़ल छलैक। ओ अपन कछमछीकेँ अपना अज्ञानतासँ झँपबाक प्रयास करैत रहल। ई प्रयास ओकरा व्यर्थ बुझाय लगलैक तँ किछु बजबाक बात मन पड़लैक। ओकरा दिस ओ बहुत ठीकसँ देखलकैक।

—'अर्थ किएक नहि छैक ? बहुत छैक। तोरा की बुझाइत छौक सभ टा 'अर्थक' आकृति तत्काले साफ-साफ बनिकऽ सोझाँमे ठाढ़ भऽ जाइत छैक ? ओकरा रंग-रूप पकड़ैत समय नहि लगैत छैक ?'

ओ अकस्मात् सहमत भऽ गेलैक। ओकरा आश्चर्य भेलैक। ओ दुनू हरदम विवाद पर उतरि जाइत अछि। ओ बड़ बजन्ता आ तेज छैक। गलतियो बात धरब तँ हटयबामे पूरा समय लागि जाइत छैक। ताहूमे वेसी काल ओ नहि हटत। ओ बड़ अपनत्वसँ देखलकैक। ओ ओकरे दिस तकैत बेस गम्भीर आ उदास भऽ गेलि छलैक। ओकर ई चेहरा ओकरा छू लेलकैक। ओकरा गर्दनि पर एक टा मोलायम पातर सोर सिहरि रहल छलैक आ स्थिर रहलाक बादो ओकर कानक झुमका हिलि रहल छलैक।

—'रोजे तँ ई होइत छैक। हमरालोकनि बात करैत छी। की अर्थ छैक ?''

ओकर एहि उलझन सन बातपर ओ चौंकल। तैयो सहज बनल रहल।

—'हम डेराइत छी। हमरा डर होइत अछि पूरक इच्छा सभसँ।' ओ कुर्सी पर पसरि गेल। टाङ आगाँ पसरि गेलैक। पयरक आङुरसँ ओकर तरवा छुआ

गेलैक। ओकरा नीक लगलैक। ओ, ओकर दहिना कान देबालपर ओठङैत-ओठङैत करीब-करीब पड़ि जकाँ गेलि छलैक।

—'पूरक इच्छाक माने ?'

—'जेना चाह पीबाक आवश्यकताक संगे चहदानी, चम्मच, प्याली इत्यादिक आवश्यकता होइत छैक ने ? अर्थशास्त्रे मे पढ़ने छलिऐक।'

आब फेर ओ सभ चुप रहल। फेर ओकरा सभक चारू कात गाँसे मोहल्लाक दुपहरिया बाजि रहल छलैक। ओकरा सभक ऊपर कपारपर पंखाक हनहनी घुमि रहल छलैक।

—'किछु बजैत नै छी किएक ?' ओ अनचोकेमे पुछलकैक। सोचिकऽ ओ पड़ल जकाँ छल जे अगिला कतेको मिनट धरि कोनो गप्प-सप नहि चलतैक।

—'हमर छाती धधकि रहल अछि।''

—'तऽऽऽ ?' ओकर आँखि, आकृति आ ठोरपर एक टा चतुर स्त्रीक दुष्टता छलैक।

—'कतहु चल। हमरा सङे कतहु चल।'

—'छातीक धधकब बन्द भऽ जायत ?' ओ अपन प्रश्नपर एको रत्ती नहि बिहुँसलि।

ओ जल्दीमे 'हूँ' कहलकैक। परन्तु ताबत उदास भऽ गेलि छलैक।

—'चल।'

—'कतऽ लऽ जायब ?' अपन एहि प्रश्नसँ ओ ओकर पाँखि कतरि देलकैक। काल्हि, परसू, चारिमो दिन ओ ई प्रस्ताव कयने रहैक ओकरा सोझाँ। ओकरा चुप भऽ जाय पड़ल रहैक। गाँसे शहरमे एको टा स्थान एहन नहि जतऽ ओ अथवा ओकरा सभ सन कयो अपना जकाँ एकान्त भऽ गप्प कऽ सकय। शहर बेहद बेकार अछि। ओ खिसियाकऽ सोचलक आ हारि कऽ बैसि गेल।

—'ओहि दिन तँ अपने कहने रहीँ जे कतहु लऽ चलू।' ओ ई बात मनेमे सोचलक, बाजल नहि। बाजल एहि प्रसंगक अगिला अंश।

—'कतऽ चलबै ?' ओ चौंकि गेलैक।

—'अहाँ की सोचि रहल छी ?' पूछैत काल ओ एक टा बान्हल खुशीक अनुभव कऽ रहल छलि से ओकरा बुझयलैक।

—'हमर माथ जरि रहल अछि। पहिला दू घंटासँ हम तंग-तंग छी। हम जाउ ?'

व्यंग्यसँ ओ हँसि देलकै। बजलैक किछु काल बाद।

—'कतऽ जायब ? सड़कपर, भीड़मे, अपन प्रिय रेस्त्राँमे, कतऽ ?'

—'छुच्छे सड़कपर चलैत रहलासँ बात नहि बनतैक ?'

—'से तँ अहाँ जानी। मुदा शान्तिक लेल ने जायब ?

—'नहि। अशान्तिक लेल।'

—'तखन जयबाक जरूरति ? एतऽ तँ अशान्त छीहे ?'

—'नहि। सोझाँक एहि ठोस अशान्तिसँ नीक अछि दूरक काल्पनिक अशान्ति। तोरा एतेक लग, एतेक पैबन्दीमे रहि सकब असम्भव होइत अछि हमरा।'

—'तँ हमरा मुक्त कऽ दियऽ।'

ओकर कहबामे कोनो चुनौती वा कोनो याचना नहि छलैक। मात्र कर्त्तव्य सूझयबाक एक टा सूचना मात्र छलैक। ओ विवश बुझाय लागल। ओकरा भेलैक जेना ई बात ओ अपनेसँ सोचि लेलक अछि, ओ नहि बजलैक। चुपचाप ओकरा देखैत रहलैक। ओ अपन आ ओकर मुक्तिक बात सोचि रहल छल। ओ स्वयं बन्दी भऽ चुकल अछि। ओहो बंधनमे अछि। ओ दुनू अपना-अपना मुक्तिमे आरो बन्हाइये जा सकैत अछि। ओकरा मनमे छलैक जे ओ ओकरा खूब लगमे आबि कऽ बैसय आ विचार करय जे दुनू गोटे कोना-मुक्त भऽ सकैत अछि ?

ओ अपन एक मात्र बेटाकेँ चुम्मा लऽ रहलि अछि। आ ओ देखि रहल छलैक चुपचाप। कोठलीमे फेरो पूरा महल्ला छलैक। पंखामे घरघराहटि छलैक। हलहली नहि। बाहरक बरंडापर ककरो चलबाक आहटि छलैक आ ओकरा कानमे, आँखिमे जिज्ञासा।

ओ आँखि मूनि लेलक। माथ झारलक। खोपा ठीक कयलक। आँचरकेँ सम्हारलक। ओकरा दिस तकलकैक।

—'माथमे बड़ दर्द अछि। सोझाँमे अन्हार लगैत अछि।' ओ ओहिना बजलैक।

—'लगैत नहि छौक, सत्ते अन्हार छौक—वैह हम। मुदा ई कहु तँ जे माथमे दर्द किएक छौ ?''

—'कमजोरीसँ भरिसक। दू दिनसँ खेनाइए नहि खयलिऐक।' ओ नेनपनीसँ हँसलि। जेना उत्कीर्णा कयने हो।

—खेनाइ नहि खयलेँ—मतलब ? काज पर तँ जाइत छलेँहेँ! तोरा कतऽ टेलिफोनो कयने रहियौ......।''

—'भुखले की काजपर नहि गेल जाइत छैक ? अहाँ हरदम बाहरे चलि जाइत छी। दौड़-बरद्दावला नोकरी छोड़ू। अहाँक आफिसक टेलिफोन ऑपरेटर बड़ दुष्टराज अछि।'

—'छोड़। खयलेँ किएक नहि ?'

—जिद्दमे। देखिऐक कतबा कालधरि बिनु खयने चलि सकैत छैक।'

—'फायदा ? जिद्दक मतलब ?

—'सत्त सुनि सकैत छी ?'

—'कहु ?'

—'देहमे शक्ति रहैत अछि तँ मनक सभ विकार जीवित रहैत अछि, सभ क्षण शिष पर फूलक थोका लऽ कऽ डाही मारैत रहैत अछि। अब्बल शरीर हल्लुक बुझाइत रहैत अछि। कालिह राति, आइ राति खूब निश्चिन्त भऽ कऽ सुतलहुँ। निफिकिर भऽ कऽ।'

—'विकारसँ की मतलब छौक तोहर ?' ओ अज्ञान बनैत पुछबाक नाटक कयलक।

—'विकार मतलब विकार। सोचब, प्रतीक्षा, घृणा, प्रेम, शरीरक अन्हर बिहाड़ि सभ किछु! रेशमक बिरड़ोमे मचकी झुलैत मऽ मली पलंगक देह-नृत्य......।'

ओ चुपचाप ओकरा दिस तकैत रहल। ओकरा ओ चंचल आ उत्तेजित बुझाय लगलैक।

—'मुदा मात्र किछुए काल भेल अछि खयना। अहाँक अयबासँ चारि मिनट पहिने खयलहुँ अछि। देह सुनसुन बाजि रहल अछि। बिहाड़िमे पड़ल अछि आब।' ओ केबाड़ खिड़की दिस देखऽ लागल जे दुनू पट्टा दू दिस रहैक।

ओ ओकरा किछु कहबाक बात सोचैत-सोचैत बेसी काल चुप रहि गेल। वैह फेर ओकरा टोकलकैक किछु बजबा लेल।

—'आब चलबाक चाही।' बाजल।

ओ हल्लुकेसँ हँसऽ लगलैक।

—'तोरा हँसी किएक लगलौ ?'

—'अहाँ भारी डरबूक आ बकलेल छी। ई बात ओ कठोर आ आघातक स्वरमे बाजलि छलि। ओ कठमठाकऽ रहि गेल। अपन इच्छा आ कायरताक द्वन्द्व ओकरा फेर मथि रहल छलैक। ओकरा दिस आँखि उठाकऽ तकबाक ओकरा साहस नहि भेलैक।

—'उदास होयबाक बात नहि छैक परन्तु, दिव्या अहाँसँ अपन सम्बन्ध जे खतम कयने होयति से एही बातपर, से हम ठीक-ठीक जानि सकैत छी। ओकर प्रस्ताव कयलोपर ओकरा अहाँ अपना एकसर घरमे जाहि कारणेँ नहि लऽ गेलिऐक से अहाँक कोनो आदर्श नहि, कायरता छल अहाँक।

ओ उत्तेजित भऽ गेलि छलैक।

—'हमरा घरमे ओकर जयबाक मतलब छलैक ओकर सर्वनाश । तों जनैत छँ ई बात जे ओ कुमारि छलि । हमरा पर विश्वास करैत छलि । तखन ई विश्वासघात नहि होइतैक ओकरा प्रति ?' ओ बचाव आ प्रश्न सभसँ घेराएल छल ।

—अहाँ घरमे एकसरे रहैत छी से बात ओकरा बूझल रहैक तथापि अहाँक घर जयबाक ओकर इच्छा स्वाभाविक आ अधिकारपूर्ण छलैक । अहाँ लेल जे विश्वासघात अछि से ओकरा दृष्टिमे अहाँक पौरुष लगितैक । स्त्रीकेँ पुरुष चाहिऐक मात्र ।'

—'हमरा कनियों दुःख नहि । किएक तँ हम ओकरा कहियो प्रेम नहि करैत रहिऐक ।' ओ कहलकैक ।

—'से भिन्न बात । मुदा अहाँ उत्तेजित किएक छी ?'

ओ मूड़ी निहुरा कऽ बैसि गेल । 'कोठली ओकरा घुमैत बुझि पड़ऽ लगलैक । खिड़कीसँ कैकटा मुँह ओकरा हुलकी मारैत बुझि पड़लैक ।

मुदा ओ आलसेँ पड़ऽ—पड़ऽ सन भऽ गेलि । ओकरा आँखिमे फेरो वैह तटस्थता छलैक । एलेक कालसँ ई तटस्थता ओकरा अखरि रहल छलैक ।

उठिकऽ ओ कोठलीमे चक्कर देबऽ लागल । ओ ओकर पीठपर नजरि देने देखऽ लागलि । दुनूक अनुभव एहि बातक रहैक जे दुनू चुप अछि ।

—'अशान्त नहि बनू । बैसू कुर्सीपर आरामसँ ।' ओ बड़ स्नेहसँ बाजलि । ओकरा दिस ओ देखियो नहि सकलैक । खाली ओकर हल्लुक हँसीक खिलखिली कानमे पैसलैक । एहिबेर ओ देखलकैक ओकरा । मनेमन ओकर दुनू तरहत्थी बढ़लैक आ ओकर दुनू गाल समेत ओकर चेहरा दुनू हाथमे आबि गेलैक ।

—'अहां कल्पने-कल्पनामे जीबैत छी ।' ओ गंभीरतासँ बाजलि ।

—'हमरा बुझिए ने पड़ैत अछि जे हम की करी ?' ओ खौंझा कऽ दयनीय भऽ गेल । ओ मुदा बिहुँसि रहलि छलैक । ओकरा देखने जा रहलि छलैक । ओकर आँखि फेरो थम्हि नहि सकलैक ।

ओ टहलि रहल छल । कोठलीक चारू दिससँ ओ अपन अस्तित्वक घेर दऽ रहल छलैक । आँखि ओकर स्थिर रहैक । एहि बेर ओ एक डेग थम्हि कऽ ओकरा तौललक। एकदम आगाँ बढ़िकऽ ओकर कन्हा छूलकैक । ओ चुपचाप बैसि गेलि ।

ओकर बाँहि पकड़िकऽ ओ अपना दिस घिचलकैक । चुम्मा लऽ लेलकैक । ओ ओकर बाँहिक बन्हनमे इच्छापूर्वक ढील होइत झूलि गेलि रहैक । ओकर माथ ओकर बामा छातीपर पड़ल रहैक । ओकर आँखि झँपा रहल छलैक । ठोर काँपल जाइक । ओकर तरहत्थीसँ अपन तरहत्थीपर दबाब ओकरा नीक जकाँ अनुभव भऽ रहल छलैक । एक बेर खूब तेज-तेज धधकि उठल छल दुनू ।

ओ चुपचाप रहैक । ओकरे देखने जा रहलि छलैक । आँखिमे कोनो शिकायतिक भाव नहि छलैक । ओकरा देखिकऽ बुझाइक जे ओ तटस्थ नहि रहि गेलि अछि । ओ चुपचाप अपनेमे चिन्तित भऽ गेल रहय । कायरता आ विश्वासघातमे की भेद होइत छैक, ओ सोचि रहल छल ।

—'की सोचऽ लगलहुँ ?

—'किछु नहि । तों की सोचि रहल छँ ?' ओ लजाएल जकाँ पुछलकैक ।

—'अहाँकेँ सत्ते, वास्तविकतासँ बेसी कल्पना नीक लगैत अछि । बात बहुत गलत थिक ।' ओ खूब बौद्धिकतासँ शक्ति लगा कऽ कहि रहलि छलैक ।

—'से मानबाक तोहर आधार ?'

—'अहांक आंखिक रूप-रंग । लोककेँ घटनामे होबऽ पड़तैक । घटना सभक चर्चा, विवरण वा संस्मरण कि कल्पनामे नहि । घटनामे होयबे होयब थिक, अर्थवान थिक । बस ।'

माथ झुकौने ओ गुनैत रहल ।

खिड़कीसँ, थोड़के फाँकमे सन्हियाँ कऽ पैसैत बिलाइ जकाँ सूर्यक प्रकाश कोठलीमे आबऽ लगलैक । ओहि प्रकाशमे ओकर मुँह उदास आ चिंतित लागि रहल छलैक ।

—'तों पछता रहलि छँ ?' ओ सहमैत, अपराध भावनासँ पुछलकैक ।

—'ऊहूँ ।' ओ माथ हिला देलकैक आ तृप्त आँखिसँ ओकरा देखबा उपक्रम करऽ लागलि । ओ की करी की नहि वाहि स्थितिमे बैसल रहल छलि ।

—'हम तोहर कृतज्ञ छियौक ।' कहैत ओकर कंठ किंचित बाझि गेलै परन्तु ओ अपन बेटाकेँ बहुत दुलार करने जा रहलि छलि । ओकर चेहरापर बहुत उल्लास वा उत्साह नहि रहैक, यद्यपि ओ बिहुँसि रहलि छलि ।

... हम तोरा कोनो तरहक छुटकाराक किछु टा आशा नहि दऽ सकै छियौक । तों तँ जनैत छँ ।

—'हमरा छोड़ू । अहाँ अपनोटा अपन बनाओल बन्हन काटि कऽ जीयब तँ सीखू ।'

—'तोहर मतलब ?'

—'आब अहाँ जाउ ।' किछु सोचैत ओ हड़बड़ा कऽ बजलैक—''ओ कखनो, एखनो कोनो गाड़ीसँ आबि सकैत छथि—दूर परसँ ।'

—'के ?' ओ पूछि तँ बैसलैक मुदा तुरत्ते संकुचित भऽ गेल ।

ओकरा कन्हापर सटल बच्चाक देहमे कोनो संचार नहि छलैक । जानि गेल छलैक ओकर माय आब एखन ओकरा दुलार नहि करैतक ।

—'चली ?'

ओ माथ हिला देलकैक । फेर दोसर दिस देखऽ लागलि । ओ ओकर माथ छूलकैक । बदलामे ओ एकर तरहत्थी-पाँचो आङुरकेँ दबाकऽ कतेक क्षण धरि अपना हाथमे धयने रहलैक ।

ओ आबि गेल । ओकरा ठोरपर बहुत सूक्ष्म स्वादक नहि कहि सकबा योग्य तहु सटल छलैक । ओकरा बुझाइ पड़ि रहल छलैक जे ओ उत्साहित अछि । मुदा, ओकर देग बड़ स्थिरसँ थाकल-थाकल पड़ि रहल छलैक । ओकरा मस्तिष्क पर सभटा ओ सभ छलैक जकरा गलत मानैत अछि ।

ई व्यवस्था दोसरो होइतैक तैयो, एहने किछु होइतैक की ?

अनिर्णीत ओ एकटा फटीचर दोकानमे चाह पीबऽ पैसि गेल । बहारक भीड़ जाइत रहलैक-लोकक रेलम-पेल सड़कसँ ।

ओ फेरो अपनाकेँ घटनाक कातमे ठाढ़ अनुभव कयलक—घटना मे नहि । ई ओकरा लेल खूब खराप बात छलैक । □

सपना कायम

एक टा नौजवान रहय । महत्वाकांक्षी रहय । जेना कि कोनो नौजवान भेल करैत अछि । ओकर परिस्थिति-माने आर्थिक, नीक नहि रहैक । ओ खूब सोचल करय । अपना मनक लक्ष्य धरि पहुँचबाक प्रयास मे दिन-राति चिन्तित रहैत रहय । अपना चिन्ता मे ओ ततेक व्यस्त रहय जे ओकरा देखि कऽ क्यो ई कहि देल करैक—'ई नौजवान जानि नहि, कोन विचार मे भुतियायल रहैत अछि ।'

टोल पड़ोसक लोक ओकरा मादेँ एहन कोनो गप्प सोचैत छैक आ' बाजल करैत छैक ओकरा एहु बातक पता नै छलैक । ओ बेशी-सँ बेशी व्यस्त रहैत छल अपने आप मे । एक तरहेँ बलहप्पनीक सीमा धरि ।

ओकर स्वास्थ्य औसत रहैक । काठी काया सेहो साधारण । रहन-सहन अति साधारण जेहन कि मध्य वर्गक धनहीन कोनहु युवा लोकक भऽ सकैत छैक । ओ जखन बाट पर चलय तखनो गंभीर आ जिम्मेदार लोक जकाँ । ओना ओकर सबटा व्यवहार आ' चालि-ढालि एक टा सामान्य आ बुझनुक मनुष्य जकाँ रहैक, तैयो ओकर गंभीर रहबाक स्वभावक कारणेँ लोक अपना-अपना मोताबिक ओकरा विषय मे उटकरी लगबैत रहय आ मोहल्ला मे किछु ने किछु चर्चा ओकरा दऽ होइतहिँ रहैक । कउखन सनक सहानुभूति मे जे—'च् च्—' बेचारे फलाँ बाबूक बेटा एना भऽ गेलैन तँ ओना भऽ गेलैन ।'' एहिना, किछु गोटय अकारणोँ क्रोध सँ ओकरा विषय मे बाजल करैक, जेना कि कम पढ़ल गरीब समाज मे होइत छैक । ओ पढ़ि लिखि कऽ बेरोजगार जरूर रहय । से बात सब के बूझल छलैक ।

नौजवान मे एक टा विचित्रता छलैक । ओ सब राति एक्के टा सपना देखैत रहैक । सुतैत रहय समये पर आ, उठबो करय समये पर । एहि मे ओ कहियो अनियम नै करय । मुदा रोज दिन एकहि टा सपना सपनाय । ई बात हमरो बहुत बाद मे जाकऽ पता लागल तऽ ।

हम, जे अहाँके ओइ नौजवान दो सुना रहल छी, ओकरे पड़ोसिया रही आ मोन मे ओकरा लेल निश्चिते एक टा पैघ भायक स्नेह छलय । ओकरा हम खूब बुझनुक विचारक युवक मानैत रहियैक । तेँ ओकरा वास्ते चिंतितो रहल करी । यद्यपि ई बात ठीक सँ हमहुँ नहि जानि पबियैक जे आखिर ओ एना कियैक अछि

जे लोक सब ओकरा विषय मे कएक ठाम तऽ निन्दा सेहो कऽ दैत छैक आ जकरा कारणेँ ओकर मन मे क्लेश पहुँचैत हेतैक ।

संयोग सँ, एक दिन प्रातः मे हम अपना कोठलीक सोझाँ मे दतमनि करैत रही । इएह सात-सवा सात बजैत रहल हेतैक । ओम्हर सँ ओ युवक आबि रहल छल अपन सहज चालि-ढालि सँ ।

जखन ओ लग आयल तँ देखला सँ बुझायल जे ओ थाकल अछि आर इहो लागल जे भरिसक कोनो चिन्ता-फिकिर मे ओ राति सुति नहि सकल अछि ।

हम ओकरा आओर लग पहुँचबाक प्रतीक्षा करैत रहलहुँ जखन ओ एकदम लग आबि गेल तँ विनम्र भाव सँ प्रणाम कयलक ।

—'भोरे भोर कहाँ चललऽ ?' हम ओकरा पुछलियैक ।

—'एहिना''कनी'''।' ओ अपन संयमित संकोची स्वर मे कहलक आ जाय लागल ।

—'बड़ हड़बड़ी मे छऽ भाय ? कियेक ने अपना दुनू भायेँ एक-एक प्याली चाह पीबि ली। हमरो दतमनि सम्पन्ने भऽ रहलए ।' हम आग्रह कयलियैक ।

—'हड़बड़ी कोनो विशेष नहि, परन्च भाइजी, एकर कोनो जरूरति नहि एखन ।' ओ क्षणभरि ठमकैत बड़ शिष्टता सँ आपत्ति कयलक ।

—'नहि, जरूरतिक कोन बात ? तो मुँह तँ अवस्से धो नेने होयबऽ ।' हम पुछलियैक ।

—'हुँ, से तँ हम अहल भोरे तैयार भऽ जाइत छी सब दिन ।' ओ कहलक ।

तावत चाह आयल । दुनू गोटए बैसि कौ स्वादि-स्वादि पीबऽ लगलहुँ ओहि दिन । ओही दिन ओइ युवक दऽ किछु गहीर गप्प सब बुझबा योग्य भेल । ईहो बुझल भेल जे ओ सब राति एकेटा सपना सपनाइत अछि । ओहू राति ओ वैह स्वप्न देखैत रहय कि ओकर पिता निन्न मे खूब जोर सँ डरयलखिन आ घिघिया-घिघिया नाकौ दैत उठि गेलखिन । युवकक निन्न टुटि गेलैक। निन्न ठीक तखनहि टुटलैक जखन कि ओकरा सपना पूरा होइते लेल रहैक । तकरा बाद तँ खौंझायल मनें ओकरा सूतल पारे नहि लगलैक । निन्न नै भेलैक ।

ओकर सपना बिच्चहि मे टुटि गेलैक ताहि बात सँ ओ खूब तमसायल रहय ।

पिता मामूली मुंशीक काज करैत छलखिन कोनो कपड़ा-सेठ कतऽ । ओ सब पुरान ढहल ढनमनायल किरायाक कोठली मे रहैत रहय । सूतल ने, छत सँ किछु छोट सन टुकड़ी झड़ि क, पिताक छाती पर खसि पड़ल रहैन । तेँ ओकर पिता खूब जोर डरा गेल रहथिन ।

जाहि राति ओ अपन सपना संपूर्ण नहि देखि पबैत छल तकरा प्रात ओ भरि दिन खूब बेचैन, अगुतायल खौंझायल रहय । ई सब बात ओ बड़ इमनदारी सँ सुनौलक हमरा ।

ओ चाह घोंटि रहल छल, मुदा जेना खूब रुष्ट भाव सँ ।

—'आखिर ओ कोन सपना छ ? तों की देखैत छहक रोज सपना मे ?'

—'देखैत छियैक...(ओ किंचित रुकल)...देखैत छियैक जे घरक चार तैयार भऽ गेलय, बेली फूल सब लाल टह-टुह भऽ गेलैये, बाबू गाय दुहि रहल छथि, घर्र-घोंऽऽऽ घर्रर घोंऽऽऽ, आ हमर छोटका भाय अपन फटलाही पोथी सब पर गत्ता लगा रहलए काल्हि रहलए जे ओकरा सबक नहि बना भऽ रहल छैक, आ सोझाँ मे एकटा खूब झमटगर लताम क गाछ छै, ताहि मे बहुत रास नारिकेर फरल छैक लुधकल — तकरा महल्लाक खूब नान्हि टटा नेना-भुटका लोभायल आँखियेँ देखैत छैक—टुकुर-टुकुर मुदा ने तोड़ि पाबि रहल अछि ने खा पबैये उदास भऽ जाइत अछि सब बच्चा...ओ सब भूखल अछि...फेर देखैत छी—कोठली सँ माँ गीत गाबऽ लगैये..." रोज दिन ई सपना देखैत छियैक ।

—'फेर ? हम पुछलियैक ।

—'फेर की ?' जेना ओ उत्तेजित भऽ उठय—"सपना पुरा तँ होइअय नहि काल्हियो राति ठीक तखने टुटि गेल निन्न जे कि माँ गीतक भास उठबैये लेल छल । हमरा स्वप्न मे माँक गीतक बड़ प्रतीक्षा रहैये । हमर माँ भरि जीवन कहियो कोनो गीत नहि गाबि सकलए ।'

कहैत-कहैत ओ जेना थाकि गेल ।

थोड़े काल धरि ओ चुपचाप बैसल रहल, फेर एकाएक अफसोच करऽ लागल—'नहि जानि कियेक, हम सपना कियेक देखैत छियै ?' ई बात ओ बड़ बेबस जकाँ होइत कहलक । जेना ओ कोनो अपराध करैत अछि जे कि ओकरा कथमपि नहि करबाक चाही ।

—'तों उदास कियेक होइत छऽ ? सपना देखब किछु खराब बात त नहि छैक संसारक महान-महान लोक स्वप्नदर्शी भेल छथि । चिन्ता कथीक ?' हम ओकरा अपनत्व सँ बुझौलियैक ।

—'नै, से बात नै । दुख ई होइए जे हमर स्वप्न पुरा भइये रहल छल कि टुटि गेल ।'

—'कोनो हर्ज नै । संभव छैक आइ से पुरा भऽ जाय ।' हम आश्वासन देलियैक ।

ओ क्षणेक रहल । फेर उठल, प्रणाम क कऽ चल गेल ।

ठीक दोसरे दिन भोरे-भोरे ओ बिहुँसैत पहुँचल, आ उत्साह सँ बाजल-भाइजी, हम अपन सपना पूरा देखल आइ। आइ हम माँक गीत सुनलहुँ आ नेना-भुटका सभकेँ नारिकेर खाइत देखलियै।' कहैत काल ओकरा मुँह पर दिव्य हर्षक भाव पसरल छलैक। देखबा योग्य।

ओइ दिन ओ जेना मात्र एतबे अनुभव करबऽ हमरा लग आयल रहय आ असोरा सँ उतरैत रौद जकाँ चलि गेल रहय।

फेर हम ओकरा विषय मे सुनलियै जे कतहु सँ—कोनो शहर सँ अपना बाबू के एक टा चिट्ठी लिखलकैये जे ओ नीकेँ अछि, चिन्ता नहि करै लेल। ओ एक टा कोयला खान मे मजूर भऽ गेलय।

एहि समाचार के सुनि कऽ हमरा, सबसँ पहिने मोन पड़ि गेल, कोयला खान मे बहाल भेला सँ पहिनेक ओइ युवकक स्वस्थ गोर सौम्य देह। ओकर रंग तँ कोयला-कारिख पर इजोत जकाँ छिटकैत रहैत हेतैक...।

मुदा हमरा ओकर स्वप्नक चिन्ता रहय जकरा विषय ओ किछु ने लिखने रहैक। ओइ युवकक ई स्वप्न तँ कोनो गंभीर मनोविश्लेषके जानि पाओत, हमरा सन साधारण लोक खाली एही चिन्ता सँ भरल रहय जे आखिर ओ एहन स्वप्न कियेक देखल करैत अछि ?

पता नहि आब ओतऽ ओकर पड़ोसी सब ओकरा कोन नजरि सँ देखैत छैक। हुनका लोकनि केँ केहन आदमी लगैत छनि ओ युवक ?

ओही दिन ने कहियो एक बेर भोरे ओकर छोटका भाय हाथ मे एक टा अलमुनियाक गिलास लेने हमरे दिस सँ जा रहल छलैक त हम ओकरा सोर कयलियैक आ पिता आ भायक विषय मे पुछलियैक।

भैयाक चिट्ठी तँ अयलैये मुदा ओहि मे अपन पते ने लिखलखिनहेँ ओ। बाबू कोन ठेकान पता पर लिखथुन किछुओ ? आइ काल्हि खूब जोर दुखित छथि पड़ल। '''नोकरीओ छुटि गेलनिहेँ ''।' ओहि लड़काक आँखि नोरा गेलैक आ गऽर लागि गेलैक।

—'हम तोरा संगे चलबऽ तोहर घर। तों कतऽ जा रहल छ' एखन ?' हम पुछलियैक।

—'आध पाव गायक दूध लाकऽ बाबूक वास्ते।' कहलक आ आगाँ बढ़ि गेल। हमरा ओकर पैघ भायक स्वप्न मोन पड़ऽ लागल जाहिमे ओकर पिता गाय दूहि रहल छथिन।

हम खूब व्यग्रता सँ प्रतीक्षा मे रही जे ओ छौंडा जल्दी दूध लऽ आपस

आबय। हम एम्हर ओम्हर चलैत-फिरैत कएक मिनट बिता देलहुँ ओहि दिस तकैत जेम्हर सँ ओ छौंड़ा अबै लेल रहय। नहि जानि एतेक देरी कियेक भेलैक ?

आ कि ताबत ओ अबैत देखाइ पड़ल। ओ खूब आस्ते-आस्ते आबि रहल छल। एहन मन बुझाइत रहैक जेना ओ अपना घर दिस आबहियेँ नै चाहैत हो। मुदा जेमाने डेगे अबैत ओ हमरा लग मूड़ी खसा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। हम देखलियै आ पुछलियै—'भेटलऽ गायक दूध ?'

ओ विवशता सँ मूड़ी हिलौलक—'नै।' गिलास खाली रहैक। तकरा बाद हम ओकरा दिस तकबाक साहस नहि कऽ सकलहुँ। मुँह दोसरे दिस लेने कहलियै—'कोनो बात नहि'''।'

—'चलऽ आइ तोहर घर देखि ली।' हम कहलियैक आ ओकरा सङ्ग भऽ गेलहुँ।

भाग्य देखियौ, ओही दिन एखबार सबमे कोयला खानक ओहि भयावह दुर्घटनाक विषय मे समाचार सब छपल रहैक। जाहि मे बहुत रास खान मजूरक मृत्युक आशंका कयल जाइत रहैक। आ हमरा सोझाँ पड़ल युवकक रोगी बूढ़ पिता जाहि निरीह आँखियेँ हमरा दिस तकने छलाह मे तेहन अनन्त भावनाक लहरि छलैक जे हमरा लेल एकदम नव्य रहय। हम तकरा बिसरि नहि सकल छी। मासक मास सँ कोयलाक खान सब मे ओइ नौजवान मजूर केँ ताकि रहल छी—अपन ओइ किरायाक कोठली मे आपस नहि गेल छी।

आब तँ हम खूब साफ-साफ अनुभव करैत छी जे सब किरायाक कोठली मे मृत्यु तुल्य जीवन जीन्ह हार लोक, सहोदर भाय होइये।

ओ हमर भाय अछि। □

एगारहम चिन्ता

प्रिय भाइ साहेब

आशा रखैत छी जे सपरिवार नीकेँना होयब। हम एकटा खूब अंसटिया कार्यसँ, (अर्थात् ओहिसँ छुट्टी पयबाक लेल) बहुत दिनसँ पटना आबऽ चाहि रहल छी, किछु त परिवारी ओझरौहटि आ दुःख-विपत्ति, आ बेसी 'नोकरी'क व्यस्तता, तेँ कय-कय बेर कार्यक्रम स्थिर भऽ जाइत अछि, फेर अपने ठामपर पहुँचि जाइत अछि। तखन सोचैत छिऐक ई पटना यात्राक कार्यक्रम बुझाइछ जे कय मास कि वर्ष पहिने बनौने रही। ठीक छै। फेर बनायब। एहि फेर कार्यक्रम बनोलेब' बला बातपर सत्ये बुझाय लगैए जे हमर वयस तीस वर्षसँ, बेसी भऽ गेल। एतबोपर ठीक छल, मतलब एतबे मानि लेने। परन्तु कहाँ? बुझाय लगैए जे एक टा हम व्यक्ति—तीस वर्षक पुरा 'देश' बनि गेल छी आ' 'कतहु' जयबाक (योजना पुरा करबाक) कार्यक्रम बना रहल छी आ तीस वर्ष बीति गेल छी।

कोनो एक टा मनुक्खक, तीस वर्षक पुरा 'देश' भऽ जायब केहन गम्भीर व्याधि भऽ सकैत छैक तकर कल्पना जेँ, कि अहूँ एही संसारक लोक छी, कऽ सकैत छी। नहि जानि अहाँक तीसम-एकतीसम वर्ष केहन टटका आ वद्धिष्णु लगैए, ई बात हम हेरायल कलमे लिखि रहल छी। बहुत दिनसँ अहूँ नहि लिखलोहेँ भरिसक किछु। नहि ने। किएक तँ संवादक सभटा माध्यसँ हमरा लेखेँ खूब गड़बड़ भऽ गेलैए। यद्यपि हमरालोकनि आइयो ओतबे—'फगुआह-दशमियाह' छी। माने तारीख गनैत रहैत छी आ दिल्ली कि पटना कि भागलपुरमे नोकरीक समय बेचैत रहैत छी। संभव छैक, अहाँ दिल्ली लेल, विनोद जी बुलहा किया रहिका लेल। प्रभास पिंडारुच आ भीम भाइ कोइलख लेल···।

मुदा कोनो 'दशमियाह' भावुकतामे नहि, एकटा तीस वर्षक वयसक लोकक मानसिकतामे एहि पत्रापत्रक पेँपी उगल बूझू।

सुभ्यस्त शास्त्रार्थ बहस आ व्यवस्थाक फलस्वरूप आशावाद मे खूब इतमीनान सँ वर्षक वर्ष जीवि लेब हमरालोकनिकेँ आबि गेलय आब। हमरालोकनिकेँ मुदा हमरे गामक 'खनगांववला' बरहीकेँ नहि, जकर दरबज्जापर नित्य भोरेसँ हर फालोक मरम्मति मे खचान-बसिला बजरब चालू भऽ जाइत छैक···?तखन जेँ कि कहलहुँ 'हमरालोकनि'

केँ, तेँ एतऽ प्रयोजन एतबे। अपितु···जेना, सेहो ई बूझा रहल अछि, एहि पाँती धरि लिखैत काल, जे प्रयोजने की? ई बात बहुत 'टाल्ह' ढंगसँ ने तँ बूझल' ने कहल जा सकैए! जखन देशीय संदर्भ मे समग्रतासँ समाजकेँ देखबाक उपक्रम करी तँ वैज्ञानिक होयब अपेक्षित कि दार्शनिक होयब, कि समाजशास्त्री—अर्थशास्त्री होयब कि राज-नीतिज्ञ कि कवि-साहित्यकार होयब अपेक्षित?

हम जनैत छी, एकर जबाब देब अहाँक बाध्यता नहि। संभव छैक, एतबा संघटित भऽ कऽ एहि प्रश्नकेँ लेबाहि ने होइ अहाँ। किन्तु ई मानब हमरा लेल बहुत स्वाभाविक आ आवश्यक अछि जे हमरा सङे एहि प्रश्नमे अहाँ हमरा सङ्ग छी। आ, हम जेँ कि से मानैत छी तेँ ई पत्र।

बेसी मैथिली समालोचक अहाँकेँ (नव-पुरान सभ) उभयवर्गीय नागरिक दाम्पत्य-जीवनक कुशल कथाकार कहैत छथि आ ई अपनालोकनिक समाजक, ऊपरसँ ठरल-ठरल मुदा भीतरसँ हाहाकार करैत दिन-रातिक भूकम्पी सत्य छैक तेँ एखनो एकटा हमरा अनुभव भेलए से लिखि रहल छी। एकरा कथा कहबैक कि समाजक कोनो एक टा स्थिति, नहि कहब, मुदा भेलै से कहैत छी। कहिते नहि छी, इच्छा रखैत छी जे अहाँ एहिपर चाही तँ किछु लिखी—अहाँ अपना कौशलसँ एहि स्थितिक समाधान-कथा कही। घटना ई अछि जे :

हम पटना आयल छी। आइ साँझ बजार गेल रही, काल्हि। आब कतेक व्यस्त आ साँझ-रमनगर भऽ गेलैक अछि छोटो स छोट शहरमे, से तँ जनिते छिऐक ई तँ पटने थिक! ऊपर सड़कक बिजली-बत्तीक प्रकाश आ नीचाँ दुनू कात मोटर, फटफटिया आ लोक सभक भागमभाग। किछु पैदल चलनिहार सभ। तावत देखलिऐक जे श्रीमती अंजू भरिसक ओकर भतीजी वा बहिन-बेटी आ ओकर छौ वर्षक बेटा एक कात बाटे सड़ कसँ आबि रहल छलैक। बेटा कने बेसिए अगली बुझायल। सड़क बीच मे बड़का ड्रम सभकेँ चारूकातसँ कारी उज्जर रंग रंगि कऽ बैसा देल जाइत छैक, ओ छौंड़ा एकबेक कूदिकऽ ताहीपर चढ़ि गेलैक आ माय-माने श्रीमती अंजू व्याकुल भऽ कऽ चिचिया जका उठलैक आ दौड़िकऽ बेटाक बाँहि पकड़ि घीचऽ लागलि सड़कक कात दिस। ओकरा जानमे जान अयलैक जेना गाड़ी-नीचाँ बेटा पिचाइये गेल होइक, आब बाँचि गेल होइक। सड़कक व्यस्त आबा जाहीमे किछु असंभवो नहि छलैक।

श्रीमती अंजूक एना चिन्तित आ व्याकुल भऽ जायब खूब स्वभाविक छैक। हम ओकरा पछिला पन्द्रह वर्षसँ जनैत छिऐक जखन ओ दयानन्द स्कूलमे अठमा कि नौमा क्लासमे पढ़ैत रहय। आसमानी नील कुर्ती, उज्जर सलवार-ओढ़नी आ जुत्ता मोजा पहिरिकऽ स्कूलक बस पर चढ़िकऽ जाय-आबय! माय बड़ मानैक, भाइ-भाउजि सेहो। पाछाँ भरिसक किछु परिवारी विघटन सभ भेलैक। भाइ-भाउजि माय सँ फराक।

बाप भरिसक रहबे नहि नहि करैक। पाछाँ माय कि भेलैक से नहि कहब, भरिसक मरियै गेलैक। मुदा मरबो कयलै तँ बड़की बेटी ओतऽ। जतऽ जीवनक अंतिम दिनमे ओहि बुढ़ियाकेँ अपन बेटा पुतहुसँ निराश्रित भऽ कऽ एहि कोरपच्छू अंजुकेँ लऽ कऽ बेटी-जमाय ओतऽ आबिकऽ रहऽ पड़लैक। हमरा ई बात नीक जकाँ बूझल अछि, एही डेरा सँ अंजु कालेजोमे पढ़लक। माने बहिन-बहनोइ आ बहिन बेटी-बहिन बेटाक सङ रहल। पाछाँ एक दिन कतेक दिनक बाद, एहिना फ्रेजर रोड बाटे जाइत रही तँ देखलिऐक खूब गहना-गुड़िया सुन्दर साड़ीमे उब-डुब सन करैत रिक्शापर चल जा रहल छलय। विशेष बात ओकर व्यक्तित्वक छलैक-र्पष सन खोपा। खोपाक जड़िमे खूब टटका बेली फूलक बेणी लेपटल। भरिसक वर संगे सिनेमा देखऽ जा रहलि छलि। फ्रेजर रोड पर ई एक टा नीक दृश्य छलैक ओकरा बास्ते, जे ओकरा पछिला कय वर्षसँ जनैत छैक।

बहुत दिनक बाद इहो पता लागल जे श्रीमती अंजु हमर एकटा 'भाभी'क सह-पाठिनी। ओ हमरा कहलनि, आब अंजुकेँ निबहब कठिन छैक। अंजु अपना बहिनक ओतऽ घुरि आयलि अछि। एक टा बेटा छैक। कतहु कोनो स्कूलमे मास्टरनी बनऽ चाहैत अछि। एम० ए० राजनीति शास्त्रमे कयलक पटने विश्वविद्यालयसँ। भरिसक बी० एड० सेहो। मुदा भेटैत नहि छैक नोकरी। हम भाभीकेँ एकटो सवाल कयनि-यनि—"ई बात हमरा आइ धरि बुझऽमे नहि आयल जे अंजुला (हमरा अंजुले कहब नीक लगैए) अपन बहिनोइ सङे किएक रहैत अछि? बियाहक बादो बहिनोइ संगे रहबाक की तुक छैक? अहांक तँ सखी अछि, कहू तँ!"

भाभी कोनो जवाब नहि देलनि। खाली एँह जे ओ लड़की विचित्र छैक। ओकरा मदति होयबाक चाही। बेटाकेँ कोनो ना पढ़ा-लिखा रहलि अछि। पति छैक कहांदन कोनो 'बिजनेस मेन' सिटीमे ओकर अपन कारबार छैक। लेकिन सम्बन्ध तँ टुनू गोटेमे एँह छैक आब।"

—"दोष ककर छैक। कोनो जरूरी तँ नहि जे अहांक मित्र अछि तेँ एकर दोष नहि होइक?"

—"से हम कहैत छी? मुदा तरो कोनो खास रुचि कहाँ लैत छैक? आब तँ दू वर्ष भऽ गेलैक। एक शहरमे रहैत'''।'

ताही अंजु दऽ पछिला दिल्ली-यात्रामे भाभी कहलनि जे आब एक प्रकारसँ ठीके छैक। अंजुकेँ आब पटनामे नहि देखि सकबैक। आब ओ पटना छोड़िकऽ चल गेलि। कतऽ गेलि, ककरा सङ गेलि, किएक गेलि से नहि जानि। हम तथापि जिद कयलियनि—जे "अहांके एँहो बूझल होयत जे कतऽ गेलय।" मुदा ओ अनठिअबैत

कहलनि जे—"डालमियांनगर दिस कतहु'''।" मुदा आब ओ जरूर पछिला जीवनसँ निश्चिन्त भऽ गेल होयत। एक टा नव-जीवन होयतैक। सभटा तोड़ि-ताड़िकऽ गेलय।

—एकर मतलब तलाक भऽ गेलैक?

"नहि से कहाँ भेलैक। एहि अर्थमे निश्चिन्त जे आब ऐ जीवनमे ओकरा अपना बहिनोइक ओतऽ फेर घुरिकऽ शरण नहि लेबऽ पड़तैक। अहाँ कल्पना कऽ सकैत छी, ई केहन भयावह छैक सभ्य समाजमे एकटा विवाहिताक अपना बहिनोइक ओतऽ शरणार्थी बनब? किछु नहि। अहाँ लोकनि लेखक नहि, लेखकक नाढ़ड़ि।"—ओ एहि भर्त्सनाक संग चुप भेलि छलीह।

—"मुदा कपड़ा-लत्ता, रहन-सहन तँ एकदम राजकुमारिये जकाँ लगैत रहैऐ। से फेर कतऽसँ?"

—"जहिया छलै छलैक। वरो तँ पुर्जा-पाटीवला लोक छैक ने! मुदा आब नहि। आइ-काल्हि नहि। खैर, आब तँ ओहनो खिस्से खतम! भल कयलक। हम तँ बुझैत छी जे ई निर्णय जीवनक अनिश्चितता, संघर्ष आ अध्यापक विरुद्ध तथा-कथित वैवाहिक संबंध विषयमे ओकर अपन ई निर्णय खूब ठीक छैक। जीवि तँ सकत। बहिनोइक ओतऽतँ नहि घुरत'''!" ओ अन मन एकटा शुभेच्छु सखी जकाँ साँस छोड़लनि। जेना घाट पर नाव लागि गेल हो'''

आ एँह एतहिसँ हमर ई खिस्सा, आजुक, समाजक, जीवनक विचारक ई खिस्सा शुरू होइत अछि।

हम एहि दुआरे नचार भऽ गेलहुँ लिखबा लेल जे ओ माने श्रीमती अंजु (जकरा हमरा अंजुला कहब नीक लगैए) फ्रेजर रोड पर ओही दिस जा रहलि अछि। व्यस्त ट्राफिकक जनमारा खतरासँ अपन एक मात्र अगली बेटाकेँ बचबैत।

एहि बेरक दिल्ली यात्रामे भाभी कहने रहथि जे आब सँ अहाँ रौद कि पानिमे अंजुकेँ फ्रेजर रोडपर जाइत कहियो नहि देखि सकबै। ओ नव-जीवन लऽ कऽ शहरसँ डालमियांनगर दिस कतहु चल गेल अछि।"

मुदा आइये साँस फेर श्रीमती अंजुला फ्रेजर रोडपर ओतेक रतिगर समयमे ओही बाटे जा रहलि अछि। हमरा पछिला कतोक वर्षसँ बूझल अछि जे ओम्हरे ओकर बहिनोइक घर छैक। अर्थात ओ फेर ओतहि जा रहलि अछि।

ई प्रसंग हम किएक लिखलहुँ अहांकेँ लकर बहुत कोनो ठोस व्याख्या मनमे नहि अछि। मुदा, लिखलहुँ ताहिमे एकटा मानसिक आधार आ जरूरति ई अवश्ये लागि रहल अछि जे मैथिलीक समालोचकगण अहांकेँ आधुनिक मध्यवर्गीय नागरिक दाम्पत्य जीवनक कुशल कथाकार मानैत छथि। ई घटना अहांक जानकारीमे पड़िकऽ अपन

कोन प्रकारक स्वरूप धरत से नहि कहि । जानी अहाँ । मुदा एहिपर हम कोनो कथा नहि सोचि रहल छी ।

आर करीब करीब ठीके ।

हँ, एक टा पत्र भीम भाइक नामे संलग्न अछि । भेटि जाइन हुनका । डाकक दोष कि हमर पता-ठेकाना लिखबाक, कैक टा चिट्ठी नहि भेटलनिहेँ । ई पत्र जरूरी, तेँ दोसर डाकपिन अहाँके बनाकऽ निश्चिन्त होबऽ चाहैत छी ।

इति अहाँक

....

भीम भाइ,

आब तँ बुझाइत अछि जे पत्राचार पर्यन्त करब पराभव । कतहुसँ कोनो आप्त लोकक चिट्ठी भेटैत छैक तँ लोक हुलाससँ लिफाफ फाड़ैए आ संबोधनक बाद पहिल पाँती जे पढ़ैए ताहीसँ 'कुशल-क्षेम' शुरू भऽ जाइत छैक । मतलब जे "तोहर भौजी" बहुत दिनसँ दुखित छथि पहिने भेल जे कार्यक एतेक रास भार आ एतेक घर-आङनक संकीर्ण परिधिमे एतेक रास धीया-पुता तकर फेर दुःख-रोग आ अभावसँ दबायल-दबायल कय बेर लोक अनेरो रोगी बनि जाइत अछि । तेँ सोचिकऽ मार्कण्डेय डाक्टर केँ देखौलियनि । फेर सोचलहुँ जे दू मास भाय लग पठा दियनि, देहमे चैन होयतनि तँ नीके भऽ जयतीह । दवाई जहाँ धरि सम्भव भेल सऽ कऽ देलियनि । मोनमे छल जे भाय लग गेली हय, सभ तरहेँ नीक रहतनि । कमसँ कम देहमे तँ खूब आराम होयतनि । नीके भऽ जयतीह । अपना, बैह गामसँ नकरी, नकरीसँ गाम करैत रहैत छी । अपनो मोन नीके नहि रहैए । ताहिपर मुन्ना-मिन्टूक चिन्ता । मिन्टू तँ बूझि पड़ैए जे हरवाही करता । एको पाइ पढ़ैमे मोने ने दैत छैक । मारि-पीटि कऽ थाकि गेलहुँ । कय टा प्रलोभन दऽ कऽ थाकि गेलीहेँ जे, ओतऽ घुमा अनबऽ नीक जकाँ पढ़ल करऽ, ई वस्तु कीनि देबऽ, रोज स्कूल गेल करऽ । मुदा व्यर्थ, कतबो मारि लगैत छैक तैयो फेर गछि लेत जे जायब काल्हि सँ । मुदा फेर बैह । खाली खुर्पी-कोदारिमे बेस बेस रमल । बाड़ी भाँटा कि मेरचाइकेँ थल्लो ई मे पोखरिसँ पानि पटबैमे बेस मोन लगैत छैक । पढ़ाइक नामपर अस्सी मोन पानि पड़ि जाइत छैक देह पर ।

गामक वातावरणो ठीक नहि । अपनेमे असहयोग आ अन्याय । तेँ मिन्टूक भविष्य की होयतनि नहि जानि । खेतिये करितथि । सेहो कथी पर ? जे जथा-पात अछि ताहिपर परिवार सेपायत ? आरो जे दू बीघा भूमि अछि तकर आदि सभ, एक कयने रहैत छी तखन तँ कहुना कऽ घर-गृहस्थीक व्यवस्था चलैए आ सोड़हल्नी खेतीपर भऽ

जाय तँ लोक खायत की ? जतबो छैक सेहो सम्हरिकऽ उपजै तखन ने ! बैह एहू बेर एखन धरि वर्षा नहि भेलैक अछि । कतेको मेघ लगैत छैक तँ कार्यालयक कागज जोड़ैत-जोड़ैत चिन्ता करऽ लगैत छी जे खेतमे पानि लागत, कोना हर-हरवाहक ब्योँत कऽ कऽ ताक पर सभ टा कऽ सकब । मुदा बैह रौदी । पानि नहि । की होएतैक एहि बेर लोकक! एखन धरि भरि गामक रोपनी समाप्त भऽ जाइत छलैक ! खगता सभ तँ नहि मानतै! पितरपक्ष शुरू होयतैक आब । रोज थोड़-बहुत तोषारी होयबाक चाही । जे बड़ दूर भऽ गेलाह, खैर, तनिक तिथि छोड़ल जा सकैए । दादाजी कि दाइकेँ तँ नहि छोड़ल जयतनि । भऽ गेल, कदू नेनक भाव मधुबनीमे चौदह टके भऽ गेलैक । चाउर कि दालि किछु टा तँ घरसँ नहि निकलनिहार ! दरबज्जाक ओलती लगक ओल उपाड़ियो तँ तरकारी-तीमनक इन्तिजाम नहि भऽ सकतैक । नोकरीमे तँ एहन नहि चलय । दशमी लगचियलैक । इष्टदेवताक पूजा कि आने आन खर्च होयतैक । कतऽसँ होअय ? धीयापूताक नव वस्त्र हे नहियोँ होउक । मुदा अन्यान्य मथदुखबी! कतऽसँ होअय । किछु माथ काज नहि करैए । भनसाघर नेवरुकेँ छरौने रही, कोन-कोन श्रद्धानियेँ ओहन महग खढ़क इन्तिजाम कयने रही बलाटसँ । भऽ गेल पछिले वर्षसँ चूबऽ लागल । ड्योढ़ी-टाटक आने सँ बाट छैक । गाममे करची पर्यन्त दुर्लभ । कतोक तरहेँ कहिकऽ लाल सँचारिबोक हिसाब किताब लगाकऽ टाट बन्हबाकऽ घेरबौने रही । खतम । आँगन बेपर्द होइबर । करी तँ कतऽ सँ करी । सभसँ तँ बेहुनो मानसिक दुःख-व्याधि लोक खेपि सकैए कोठीमे चाउर रहै तँ । सेहो तँ छैक नै । मुँहपर तँ जाबी नै लगतैक । नहि लगतैक तँ फेर एतबे दरमाहामे एतेक टा अड़वाल चलय कोना । एही सभकेँ सोचैत-सोचैत मोन बड़ थाकि गेलय । पहिने साइकिल सँ नकरी चल जाइ, किछु बुझयबो ने करय । आब साहसे ने होइत अछि । खैर, इष्टदेवताक जे इच्छा होयतनि से होयतैक । कतेक माथ धुनू ?

एम्हर तोहर भौजी दऽ तार आयल जे मोन खराब छनि । जाकऽ गामे लऽ अनलियनिहेँ । फेरसँ सभ टा जाँच भेलनिहेँ, एक्स-रे सेहो । मुदा साफ-साफ किछु रोगे ने कायम करै छै डाक्टर । एम्हर देहक स्थिति ई, जे ऊज्जर । एक ठोप शोणित जेना देहमे नहि । भनस-भात पर्यन्त ममतेकेँ करऽ पड़ैत छैक । ओकरा बुते सम्हरै नै छैक मुदा उपाय की ? नहि देखल जाइत छनि तँ टपरल-टपरल जाइत छथि भनसमे । ई कोना चलय आ कतेक दिन से नहि जानि । मोन फेर घोर-घोर अछि ।

तोहूँ कोनो चिट्ठी नै लिखलऽ । कोना छैक धीया-पूता सभ ? बौआसिनोकेँ सुनलियनि जे बड़ कमजोर भऽ गेल छथि बच्चो सभ छै बैह । तँ ओतऽ तँ सुभीता हेतऽ, सभकेँ नीक जकाँ देखाकऽ ठीक सँ दवाई कराबक चाही ।

अपने नों, सेहो सुनलों जे बीमार रहैत छह। देहपर ध्यान देबाक चाही। बीमारीकें अनठियाबक नहि चाही। हमरा लोकनिकें देहे तँ पूजी थिक। बैह जँ खसि पड़ल तँ परिवारे बिलटि जाय ने! तें अनठबहक नहि, कोनो नीक डाक्टरसँ जाँच कराकऽ दबाइ खाह।

बलवस्थावनो आबि रहल छैक। सभ बच्चासभकें लऽ कऽ गाम आबिजइहऽ। मै छुट्टी होअह पहिने तँ कम सँ कम निशा पूजा धरि तँ अवश्ये सभ गोटे आबि जाइ जाह। धीया-पूतासभ निशा पूजा देखत। बाबूओ काकाकें ई बड़ जरूरी लगैत छलनिहें जे परिवारक लोक भरि बर्ष कतहु रहय नोकरी-चाकरी, मुदा निशा पूजा धरिमे अवश्य उपस्थित रहय इष्टदेवताक पूजामे।

चिन्ता नहि करिहह। कहिया धरि अबै जयबह, से लिखि दिहह पहिने। तोरा चिट्ठी लिखबामे किएक एतेक आलस होइत छह, नहि जानि। एतेक-एतेक दिन धरि लोकक कुशल-क्षेम नहि जानि सकला पर लोककें कतेक चिन्ता होइत छैक से बुझबाक चाहिऐऽ ने।"

ई पत्र हमरा गामसँ हमर छोटका भैयाक अछि भाइ।

माने हमरो गाम अछि। एक घर छलय। माँ छलि, पिता छलाह। से सभ टा आब समाप्त अछि। अर्थात् आब नहि अछि। गाम तँ अछिए। मोन सेहो ओहीसँ गँथायल अछि। घाव लागल माछ जकाँ कतबा दूर धरि बंसीक ताग जाइत छैक, तोखरिमे तरे-तर घायलो भऽ कऽ अपना मोने चेष्टा करैत छी तँ बंसीमे आर गँथायल जाइत छी, कारण, बंसीक छीप खूब नीक जकाँ भीड़पर गाड़िकऽ बंसी खेलनिहार कतहु गेल अछि…। ई निर्विवाद छैक जे ओ आओत आ हमरा छीपिकऽ ऊपर कऽ लेत…। ई तँ भेल नियति। मुदा नियतिवादी लोकक नियति नहि। अहाँक ओ कविता जे अछि—'…नियतिक ई धुरी अछि…

ओ संसार नहि भेटैए आब कतहु। आब ओ परिस्थिति नहि भेटैए कतहु। पछिला बेर भनसा घरक असोरा पर बैसलों। भौजी बेस नीक जकाँ राम्ह कयलहा चाउरक रोटी पकाकऽ नोन-तेल अँचार, हरियर मेरचाइ देलनि। खाय बैसलों। दूइये-कऽर तँ खयने होयब कि बेसीसँ बेसी बरख तीनिएँ-चारिक एक टा गोर-नार रोगी बच्चा मैल-कुचैल तेरह ठाम फाटल गंजी पहिरने, जाहिसँ ओकर पेट हुलकैत रहैक, चुपचाप आबिकऽ लगेमे ओलती लग ठाढ़ भऽ गेल। हम भौजीकें पुछलियनि, ककर बच्चा छैक ई? ओ उबियायल मात्सर्यें ओकर जे परिचय देलनि से जेना करेज दरकि गेल। अयँ, इ नेना ओकर बेटा छिऐक! एहिना बोआकऽ अँगने-अँगने घूमिकऽ पेट भरै छैक? एकरे बापके बुद्धिनारायण झा मास्साहेब स्कूलमे दुर्गास्थानमे पढ़ैक हेतु जखन लेल कतेक चेष्टा कयने रहिऐक जे पढ़ि-लिखि लैक किछु। नहि पढ़लक। जेठ भाइ

कतऽजनसँ एकटा महींस कीनि अनलकैक आ एकर बाप ओकर चरवाही करऽ लागल…। विचित्र दुर्भाग्य!

—"आब तँ एहन भऽ गेलैक ई। दुइए-तीन मास पहिने तेहन सुन्नर मोटायल मोटायल छलैक जे देखितिऐक तँ किछु ने फुरैत। सुन्नर। आब तँ रोगी भऽ गेलैए। पेट एतेक टा उगि कऽ भऽ गेलैए। पिल्ही छैक कि की? के देखतैक? खाय-पीयक बेरमे ठेनि कऽ एहिना पठा दै जाइत छैक, बुझि पड़ैए…।" ओ नेना चुप्प, ओलतीमे ठाढ़। हमरा बुते कओर उठाकऽ मुँह धरि लऽ जायब कठिन। भौजी ओकरा बजाकऽ खाय देलथिन।

मुदा अहीं कहू भाइ, 'भीख' दऽ कऽ जीवन आ समाज बदलल जा सकैए? कहियो? एतेक व्यापक 'बालरोग' केहन स्वस्थ युवा-समाजक भविष्य बनि सकैए? आब तँ एक वर्ष आर बढ़ि गेल होयतैक ओकर वयस। बाप बेकारीमे त्रिकाल भाङ पीबैत छैक आ मसनुरिया सभ सङ 'ग्राम सुधार कमिटी' बनबैए। ककरोपर पंचैती बैसबैए, कोनो मुँहदुब्बर लोककें अकारण डंड दैए। अपन ग्राम-सुधार समितिकें ओसभ कखनो 'युवा कांगरेस'क ग्राम-शाखा, कखनो छात्रसंघर्ष समितिक स्थल सब-कमिटी कहैए'…

बहुत नौजवान अछि। मंगले-मंगल कऽ कीर्तन करैए'' कखनो जाति-पाँति न तोड़बाक चाही ताहि पर सभा करैए। कखनोप गछलाहा रुपैया नहि दऽ सकलापर कन्यागतक दरबाजजापर नँ बरकें घुरा अनै जाइए''।

खैर, गाममे अहाँ गाम जकाँ बहुत रास बेरोजगार अछि। कोनो बाट नै छैक ककरो। ई ग्राम, लोक कहैए जे मिथिलाक सांस्कृतिक वैभवक केन्द्र छल। मिथिलेकें गौरवान्वित करैत छल, विद्वानसँ लऽ आचार-विचार सभमे''।

पछिला तीस वर्षमे एहि गाममे क्यो एहन 'राजनेता' नहि भेल जे मधुबनी-बाट परक मुगलकालीन टूटल-भखड़ल 'अइँठरवा' पुलक मरम्मति पर्यन्त करबा सकैत, सड़क, बिजली आ आन वस्तु तँ जाय दियौक आ ने कोनो तेहन लोकक बेटा-बेटीसँ हमरा गामक बेटा कि बेटीकें बिवाह भेलैक जे सरकारक बड़का आफिसर हो जे अपन बेटा कि बेटीक मात्सर्यमे हमरो गाम, थोड़े सरकारी 'सुभीता' सैंति कऽ पठा दितय। हमर गामकें भेटलैक अछि हमरा सन तुच्छ लेखक!

मुदा, अहाँ गाममे सुनलोहें जे आब प्रायः ई सभ सुभीता भऽ गेल अछि पक्की सड़क, बिजली…

हमरा गाममे एखनो दशमी पर्यन्तमे बुढ़लोकनिकें भरि-भरि जाँघ थाल-पानि हेलिकऽ दुर्गास्थान जाय पड़ैत छनि। अहाँ सोचब खत्ता बाटे किएक जाइत जाइ छथि, मुदा हमरा गामक 'सड़के खत्ता छैक ने'''बीचमे सुनलहुँ इमर्जेन्सीये बीचे जे मुखियाकें

कय दस हजार टाका भेटलैक सड़कक मरम्मतिक लेल ! एक-दू ठाम खत्ता भरयबो कयलै'''एकरे भादवमे फेर बाटपर छोट-छोट डबरा कायम'''। लोकके कहि वेल गेलैक एतबे अनुदान भेटल रहैक ।

तें गाम एक टा धर्मसंकटी भाव-बोध जकाँ गर्दनि मोंकने रहैत अछि । होइए जे आब गाम नहि ''फेर कहियो नहि'''

एहनेमे गामसँ छोटका भैयाक चिट्ठी हमरा, कि छोटकी भौजीक चिट्ठी हमरा स्त्रीके आबि जाइए—'एते-एते दिनसँ चिट्ठी किएक बन्द कयने छऽ? चिन्ताने छी, धीया-पुता कोना छैक से ?"

आ, हमर ग्राम-बोध, पूजा-कालक-बड़का दादाक मंत्रोच्चार जकाँ जीवन्त भऽ जाइत अछि आ चानन ककाक दुर्गापाठ जकाँ'''। बड़का माय, काकी, छोटकी काकी, गोरकी काकी आ हमर माँ—दुर्गापाठ सुनैत ओलोकनि आ धूमनक सुगंधसँ व्याप्त आँगन-भरि टोल'''

माँ कहय—'हम जाइछी पाठ सुनऽ। घरमे जिंजिर चढ़ा देनियौंए ! भूख लागह तँ काढ़ि कऽ खा लिहऽ ।"

एम्हर सुनलहिँ चानन काका सेहो दमासँ तबाह छथि । बड़ कष्टमे, शरीरें, मोने, सभ तरहें ।

जानि नहि, हमरा गामके की भऽ गेलैए ? हमरे की भऽ गेलए ?

तैयो गाम किएक 'बुलाइत' रहैए ?

भाइ, ई एना बुझाइत रहब की छैक ?

अहाँ अपना गामपर कोनो कविता-एक टा सम्पूर्ण कविता सोचि रहल छी ? फेर कखनोकऽ हम ईहो सोचैत छिऐक जे अहाँ यदि कथाकार रहितहुँ तँ एहि सभ स्थितिके कोना लिखितिऐक ?

हैं भाइ, एक टा कार्यक भार। ई चिट्ठी प्रभासके भेट जाइनि । अहाँ-लोकनि, अवश्ये डाकबंगला लगक चाह दोकान वा फेजर रोडक गोपीमे बैसिते होयब किछु क्षण कऽ'''

प्रिय प्रभास,

बीचमे एक बेर दू दिनक वास्ते पटना गेल रही । तों अपना पिताक बरखीमे गाम गेल रहें । आब त कय मास भेलैक । हमरो बाबूक बरखी एम्हरे किछु मास पूर्व भेलनिहें । तोरा त बूझल छौक—हम नहि जा सकलहुँ । नहि किएक गेलहुँ, तकर कोनो साफ-साफ कारणो नहि बूझल अछि । मुदा, नहि गेलहुँ । छोटका भैया रुष्ट भेलाह, समाजमे किछु गोटे हमरापर 'आलोचको' बनल होयताह । बनथु । सुनलहुँ जे

दुनू भाइ अपना-अपना घर-असोरापर बेस भव्य ब्राह्मण भोज कयलनि । एक भाइ विभव सँ, एक भाइ व्यवहार सँ । ठीके छनि । सम्भव, हमर स्वर्गीय पिताके पहि लागल होइनि बेटा लोकनिक ई भव्य-भोज । एहन महगी आ अकालमे एतबा तामतिसँ आयोजित ई भोज हुनका नीक लागले होइनि ! भऽ सकैए अपन छोटका बेटा अर्थात् हमरा पर चिन्ता भेल होइनि—बुझि पड़ैए, ओहिना अभाव आ कष्टमे अछि'''माफी देने होथि, नहि कहुबो !

मुदा हमरा तँ ओहुनो गाम जयबाक कोनो प्रश्ने नहि छल । तोरा जकाँ 'सामग्री उत्साहक' ओहुनो हमरा स्वभावमे शुरुहे सँ कमी अछि । तों त हजार बजारक व्यवस्था कऽ कऽ बरखी कऽ अबै छें पिताक । नहि जानि अपन आमदनीए सँ कि 'कर्जा-बर्जा' कऽ कऽ ? पहिलुक सम्भावना तँ ओना हमरा कम्मे बुझाइत अछि । जे हो ।

हमर त एहन भोज-भातमे ने आस्था अछि ने रुचि ! तकर कारणो छैक । माँक बरखी रहनि । नवे-नवे नोकरी धयने रही । छोटका भैया कहलखिन—आब सँ हिनको कमाइसँ माँके भोज होउक । हम टाका पठौलियनि तँ अवश्ये, मुदा भोज लेल नहि । हमरा भारी पाखण्ड लगैए ई-खाली ब्राह्मण भोजन ! ब्राह्मणो केहन तँ जनिका घरक कोठीमे स्वयं कय-कय बर्षक मे हिंचका चाउर मोनक मोन धयल रहैत हो'''तें हम लिखने रहियनि जे माँक उपलक्ष्यमे ई टाका खर्च हो अवश्य, मुदा भोज-भातमे नहि । आ हम अपन विचारो लिखने रहियनि जे कोना खर्च हो । ई विचार एखनो गामक लोकके अरघब केहन कठिन छैक, से तँ बुझले छौक'''। किछु गोटे द्वारा हमरा, 'नै बुझैत छथिन', 'नेना छथिन', तँ 'ई छथि' 'ओ छथि' कहल गेल, 'अलौकिक बात-विचारक' घोषित कयल गेल'''।' हमर पिता कहलखिन— नै:, ठीक छैक । माय हुनकर, ओ यदि अपन कर्तव्य एहिना करऽ चाहैत छथि तँ आपत्ति की ?' छोटका भैयाके आदेश भेलनि —'लिखलखुन अछि, तदनुकूले व्यवस्था कऽ देहुन ।'

ताहि मुक्त विचारक प्रगतिशील पिताक श्राद्धमे जखन अपने भायक कर्जखोर होबऽ पड़ैत छैक लोकके तँ विडम्बना नहि कहौ एकरा तँ आर की ? दैहू भाइ पिताक श्राद्धमे अधिकांश टाकाक व्यवस्था कयलनि, खर्च-वर्च भेलैक । पाँच गोटे पंचक गोष्ठी (यद्यपि छलाह ओ लोकनि पित्ती, भाइ सभ, ओहि प्रसंग पंच !) श्राद्धक स्वरूपक निश्चय भेलासँ पूर्व हमरा दुनू छोट भाइसँ ई वचन लऽ लेल गेल छल जे एखन हाथमे टाका नहि अछि, मुदा टाकाक व्यवस्था कऽ कऽ एक सेहाइ अपना-अपना हिस्साक टाका जेठ जनके घुरा देबनि !

पसिन्न हमरा एकदम नै छल ई श्राद्ध-फाद्ध । मुदा, पिताक शोक आ सामाजिक, पारिवारिक रूढ़िक असरि आ दबावक वातावरणो विचित्र होइत छैक'''

फेर ईहो मोनमे भेल जे लोक हमर विचार नहि बुझत, बुझत ई जे फलां बाबूक छोटका बेटा केहन कंजूस आ कुपुत्र भेलनि !

कुपुत्र बुझल जायब असह्य छल, अछि, तेँ सभ टा शर्त—अपितु आदरणीय अग्रजक 'अनुबंध' चुपचाप स्वीकारऽ पड़ल छल'''पिताक श्राद्ध सम्पन्न भेल छलनि आ भव्य भोज भेल छलनि ''द्वादशाहक दोसरे दिन भैया पंच सभकेँ आमन्त्रित कऽ कऽ घरमे बैसौने रहथि। माय, पित्ती, माभ बड़ अपमानजनक आ स्वर्गीय पिताक जीवन भरिक अर्जित प्रतिष्ठाक अपमान बुझायल'''हतप्रभ भेल ओहिना बैसल रहलहुँ जेना महराजक कहचरीपर रैयत सभ'''रहैत छलैक ताहि दिन'''मुदा छोड़ै ! ईसभ घटना तँ तोरा खूब बुझल छौक। गाँमे पोल भऽ गेलैक। फलां गामक फलां बाबूक भैयारी'''धिना गेलनि बापक श्राद्धक टाका लेल, घिना गेलनि'''।

ओसभ हमरा परिवारक कुलीन-समृद्ध इतिहासमे एक टा भयावह कलंक जकाँ बुझलैक। एक टा विचित्र स्थिति ई छलैक जे एहिसँ हमरा गामक समाजक कोनो क्षति नहि भेलैक, एतऽ धरि जे एक टा कोनो व्यक्तियोक किछु हानि नहि भेलैक। तथापि कलंक एहि दुआरे जे हमर स्वर्गीय पिताक मर्यादाक सभटा प्रतिकूल भेलनि। कुलीन परिवार-परम्परामे कलंक। एहि युगमे, एहि 75-77 ई० मे पर्यन्त हुनक स्वप्न छलनि भैयारीक सौमनस्य आ एकत्व भावना ! संभव छैक ? जतऽ मात्र पाइ सभ टा कऽ रहल छैक आ करा रहल छैक ? मनुक्ख, पाइ, जमीन आ दोकान भऽ गेल अछि ? जीवनक सभ महान मूल्य समुद्रमे'''स्वाभाविक छैक जे हमर एहि दोकानदारीमे कोनो सहमति आ सहयोग नहि रहल, ने अछि'''तेँ कर्जक टाकाक अदायगीमे हमर भैयाक नामे अपन हिस्सामेसँ जमीन रजिस्ट्री करबाक छल'''कचहरी आ जमीन रजिस्ट्रीसँ तेहन अपमानक आ अपराधजनित भयक बोध होइए जे मोन कबूल नै करलक। से किएक नहि करलक ?

तोँ पाठक आ आलोचक वर्गमे एही गामक सामन्ती संस्कार आ नागरिक ग्रामीण आधुनिकताक मर्मस्पर्शी कथाशिल्पीक रूपमे स्वीकृत छेँ तेँ हमरा जानि नहि किएक लागल जे अपन परिवार गाम आ तकर परिस्थिति तोरा सुनबियौ।

एहिपर कोनो कथा कहबाक हमरा लेल गुंजाइशो नहि अछि। कारण जे हमरा तँ स्वयं एकर पात्र बनऽ पड़त ! असम्भव !

भैया हमरा वास्ते बहुत कयने छथि जेना एक टा जेठ भाइ अपन छोट भाइ लेल कऽ सकैत अछि। एक बेर भगवनी भऽ गेल रहथि 58-59 ई०क मध्य धरिकेँ। भरि-भरि राति सिरमाने जागल बैसल रहथि, मोने अछि'''।

आइ भैयाक चिट्ठी फेर आयल अछि—''जे किछु पारिवारिक बटवारा संबंधी लट्टा-पट्टी बाँचल छैक से आबि कऽ सोझरा जायब बहुत आवश्यक'''।'

एहि चिट्ठीक मतलब हम बुझैत छिऐक—''कर्जक अदायगीमे हुनका जे हम खेत देने छियनि, तकर रजिस्ट्री नहि भेल छैक। उपजा लऽ रहल छथि। ताहिसँ मोन निश्चिन्त नहि छनि। चाहैत छथि जे कानूनी रूपसँ ठीक-ठाक भऽ जाइक माने हम लिखिये दियनि ! कहीं हमर मोन बदलि गेल आ जमीन पर दावा कऽ दियनि !''' सैह व्यवस्था चाहियनि ! हमहुँ सोचैत छिऐक, स्वर्गीय माँ, पिताक, भैया सबहक आ अपन सम्बन्ध, समयक प्रवाह आ जीवनक नव-नव समस्या नव संबंधक बोध। कतेक रास बात अनर्गल आबि गेलैए जे लोक 'आदरपूर्वक' स्वीकारने जा रहल अछि। ई कतर्जा, किएक अयलैक अछि एहन असुरक्षा आ अविश्वास ?

हमरो मुख्य समस्या सैह 'सम्बन्ध' अछि परस्पर सम्बन्धक विशिष्ट मानवीय संवेदनाक खूब विस्तृत धरातल। किएक लोक ओकरा छोड़िकऽ भाइक स्थान छोड़िकऽ दोकान भऽ जाइत अछि ?

तोरा तँ बुझले छौक, पिताक गेलाक बाद सभ किछुक समाप्त छैक हमरा घरमे। दू ठाम चूल्हि। दू दलान, बैसनिहारो लोकनि दू। बीच आङनमे टाट''' केहन घोषित अपमान बुझाइत छैक ? आ लोक एकरा एना बुझबैए— ''ई सभ सदा सँ भऽ अयलैक अछि, भैयारीमे बँटवारा, एकरा वास्ते क्यो दुःख करय ?'

हमहु बुझैत छिऐक बँटवारा। मुदा कि सम्बन्धो समाप्त ? या, यदि सैह तँ कोन मूल्य पर ? रुपैया आ जमीन दुआरे ? ई दुनू एतबा तामस, जे लोकक सभटा मौलिक बातोकेँ गाड़ि देअय ?

जेना कहलियौ, खूब अपमानजनक लगैत रहै। मुदा कोनो रस्ता नै छैक। भैया सभ टा रास्ता बन्द करअर लागल छथि, से तँ बुझाइत अछि, मुदा कोन अभाव वा काटमे से नहि बुझाइत अछि ? हम जनैत छी, एक दिन छलनि, खूब समस्या छलनि आ दरमाहा कम भेटनि। अभाव रहनि। मुदा आइ ? तखन ? मात्र आरो मात्र आरो ?

भैयाक तार-चिट्ठी-तार अबिते रहैत अछि। जहियासँ घर-घरारीक बँटवारा भेलय ई घटना साधारण छैक। फेर आयल अछि। एहि बेर स्वयं नहि लिखैत छथि—लिखबबैत छथि अपन अस्वस्थता बऽ आ हमरा लग बकियौता किछु रुपैया दऽ जे दवाइ होयतनि।

एकरो चिट्ठी खूब देरी सँ भेटल अछि। दिल्ली चल गेल रही ! भैया दुखित रहैत छथि, चिन्ता भेल। पाइ तँ तत्काल पठा सकबाक हालतिमे नहि छी। भैयासँ उऋण होइ लेल कोनो मोगल सूदखोरसँ टाका लेबऽ पड़त। एतऽ तँ सेहो संभव नहि।

फेर ईहो होइत अछि मोनमे जे रुपैयाक अभावमे भैयाक दवाइ रुकल होयतनि ? असंभव ! मोन फेर ईहो धिक्कारैए एकर मतलब जे भैया मात्र रुपैये लेल लिखल गिहें, अपन बीमारीक खबरि नहि देलनिहें···एकटा विचित्र द्विधाग्रस्त परिस्थिति छैक, सम्बन्धक शेष सामग्री बोधक दबाव आ एकदमसँ बदलि चुकल आजुक जीवनगत मूल्य आ संवेदनाक टूटल परिवेश···। बड़ विचित्र छैक। भैया एक टा सम्बन्धी द्वारा फेर सदेह समाद देलनिहें।

एकटा अभियोग सेहो—'दुखित रहो, फल्लांके तँ कम सँ कम एतबो चिन्ता भेलनि जे मुन्नोकेँ पठाकऽ जिज्ञासा तँ कयलनि। आ, फल्लां टाका तँ नहियें, पत्रक जबाब तक नहि देलनि···आदि (पहिल फल्लां माने छोटका भैया आ दोसर फल्लां माने हम···)। कतेक खुशी भेल चलू भने एके रत्ती भैयाकेँ ई अपेक्षा शेष छनि। हुनक दुःख तकलीफक हुनका भाय-परिवारक अपेक्षा बाँचल छनि ? मुदा, एहि टेमीक भुकभुकायबसँ कतहु सौंसे अन्हार कटय ?

मोन पड़ैए अन्हरिया राति ! बाबूक खड़ाउँ क खटर खटर···एक हाथमे छड़ी, लोटा, लालटेन, दोसर हाथमे छोटका ठोल आ टॉर्च ! जखन वर्षा कि वर्षाक संभावना तँ बाबू छत्ता सेहो लेथि संगमे ! बाबू कलपर जा रहल छथि, कहियो कऽ निसबद रातिमे बाबूकेँ एना पोखरि दिस जाइत निन्न टूटल रहलापर पछवारी कातसँ अपना कोठलीदिसँ बड़का भातिज पुछथिन—'पेट गड़बड़ अछि कि बाबू काका ?'

—''नहि। किछु मरोड़ जकाँ देलक। तखन तँ जावत एक बेर संदेह नहि छोड़ा लौं, निन्न नहि होयत।'' मुदा एतेक रातिकेँ अपना भातिजक ई पूछि लेब हुनका खूब आत्मबल बढ़बैत छलनि। भरि जीवन परदेसे रहलाह। वृद्धावस्था मे अहरिया लोकक गाममे जे जीवन भऽ जाइत छैक, तेहने छलनि ! अपन बेटा सभ हरदम तँ बाहरे···

आइ तँ बाबू कोना रहताह ? आंगनमे टाट लागल छनि। बँटवारामे कल, पैखाना टाटक ओहि कात पड़ि गेलैक।

जाय दे, हम किछु बेसिये भावनामे आबि गेलौहें। पिताक प्रसंग आबि गेल तें। आब ओ नहि छथि। ओ जखन ई नवका घर बनबौलनि (जकरा ओ गुमटी ठाढ़ करब कहथिन···) तँ सोचनो ने छल होयताह जे वैह पाँच कोठली पक्काक घर सभटा आपसी सौमनस्यक, अंतर्विरोधसाधक जड़ि भऽ जायत, भरि जन्मक मैयारी सौमनस्यक सपना ढहि जायत आ एक टा 'कोठली' लेल घिना जायत···

मुदा, ईहो तँ भरिसक तोरा गुनले होयतौक। भरि मिथिला तँ सम्बन्धे सम्बन्ध। गुकायल की छैक आब ?

हँ, एतबा चिन्ता आ दुःख जरूर होइए जे किएक नहि हमर ओ बाइस कि चौबीस हाथक पुरने फूसक घर बाँचल, जकरा हमर माँ स्वयं अपने हाथे जगिया माय-सकुन्ती माय संगे लेबने रहथ आ जकर असोरापर तीन टा मोझर हरदम लागल रहैत रहैक, चार हरदमे चूबैत रहैक आ दुपहरियामे माँ आङनमे देल सकै कि मड़आ कि धानक पथार ओगरैत ओगरैत चौकठिमे ओठङल ओठङल सूति रहैत छलथ···। टूटल, चूबैत घर छल हमरा लोकनिक खड़क। मुदा कम सँ कम मासमे एक टा चिट्ठी जरूर माँक बच्चाक (माने भैयाक) डाकपिन दऽ जाय हमरा लोकनिकेँ जाहिमे माँक दमाक की हाल छैक तकर चिन्ता रहैत छलैक आ माँओ कए बेर हुनका नया देल करय कोठमे जे एखन धरि बच्चाकेँ किएक ने पोस्टकार्ड लिखि देलहुन, कतेक दिनसँ चिट्ठी नहि भेटल-ए, मोन व्याकुल अछि।

आइ गामक अर्थ कोना बदलि गेल अछि हमरा लेल ! हमरा बेर-बेर होइए जे वैह फूसक घर होअय जकर असोरापर माँक उकासी करैत स्वर फैलैत रहैक आ सभटा जुड़ल-जुटल एकके अस्तित्वक सुख-दुःख, वर्तमान भविष्य जकाँ लगैत रहैक।

मुदा कहां ? गाम तँ गाम नहि आब। ने पिताक खड़ाउँक खटर-खटर ने माँक दमाक उकासी। आब तँ पाँच टा पक्का कोठलीक बाहरसँ एक मकान (भीतरसँ खोराक फाँक)···

हमरा नहि बुझाइत अछि जे तोरा ऐतेक रास ई सभ लिखबाक आधार-प्रेरणा की ? बहुत दिनसँ भरिसक तोरो कोनो कथा तथा प्रकाशित नहि देखि रहल छी ?

इति, तोहर-
·········

पुनश्च-

फेर एकटा पत्र पता लिखलाहा पड़लिऐ। बुझऽमे तत्काल आबि गेल। भैयाक चिट्ठी। चिट्ठी पढ़बामे भय जकाँ भऽ जाइत अछि। एहि बीचमे भैयाक चिट्ठी भेटबाक मतलबे रुपैयाक तगेदा आ जमीनक रजिस्ट्री। भेल जे राखि दिऐक। मुदा तत्काल सोचलहुँ, कतेक काल नहि पढ़ब ! पढ़ी।

अंतर्देशीय खोलऽ चाहलिऐक अछि तँ अनायास खुजि गेलै। लिखल छैक—

चि०......

शुभाशीर्वाद !

तोहर परीक्षा-फल देखि कऽ बड़ हर्ष भेलए। एहिना जीवनमे प्रगति करैत जाह से आशीर्वाद !

—तोहर भैया !

हम अकचका गेलहुँ। ने तँ हम कोनो परीक्षा पास कयलौहेँ एहि बीचे, ने आन कोनो प्रगति। दोसर जे ई पत्र भैयाक भऽ कोना सकैए ? पूरा पत्र देखलिऐक अछि। पत्र 28 दिसम्बर 67 ई०क छैक। पत्र भैयेक छैक।

मनुक्ख आ गोबर

महानवमी 10 अक्तूबर 1978 ई० एकटा भारतीय गामक प्रसंग ई विवरण अछि। गाम मिथिलाक। जकरा नाइ दिन कहल जाइछ पंचकोसी। जीवनक अंतिम दुर्गञ्जन महनिहार अभागल शेष बूढ़-पुरान आदमी सेहो कहैत छथिन-पंचकोसी। तकरा हेतु प्राचीन संस्कृतिक गौरव-बोधसँ पीड़ित रहैत छथि। हुनका सभकें अंगरेजी राजक सस्ती देखल छनि आ एहि तीस-बत्तीस वर्षक स्वतंत्र प्रजातंत्री राजक महगी सेहो।

एहि किछु वर्षमे बड़ विकास कार्य लागू भेलैक। अनेक रास भाषण, प्रकाशन सभ अयलैक सभटा एकरे प्रमाण साहित्यक वस्तु अछि।

किनको मतें—"गाम-गाम खूब आगाँ बढ़लैए. किएक तँ आब भिखराक बेटाकें पर्यन्त टेरेलिनक बुसट पहिरने देखबैक" किनको मतें—अंगोर बढ़लए आगाँ। एकटा जेहो पुरना मिडिल स्कूल चलैत छल से तँ चलाओल धारें ने लगलनि किनको चुते, देवालक पजेवा पर्यन्त मुखियाजीक कोठी सभक गोरा तर चल गेलैक आ साँझ प्रात बैसबाक चबुतरा बनि गेलनिहें..."

—'आ सड़क ? बिजली ?' क्यो नवोत्साही युवक फानि कऽ उदाहरण ठोकताह।

ई घटना वा विचार सौंसे देशक कोनो गामक भऽ सकैए। ओना हम गंगेश गुंजन, जे कि अहाँ लोकनिक-मैथिलीक लेखक छी तें अहाँ एकरा मिथिलाक कोनो गाम मानि लियऽ। अपने मने नाम राखि लियऽ, भरिसक से नाम एकदम फिट बैसत।

तँ ओही एक गाममे आब एकटा सड़क बनलए। ई सड़क बेस चौड़गर आ गंहीरगर सड़क ताहि दिनक डिस्ट्रिक्ट बोर्डक छलैक। एहि सड़क पर कय सड़क सँ पतिआनो बनल बैलगाड़ीक एक-एक टा लीख बुझू जे एक-एक टा नाली जकाँ रहैक। स्थिति ई जे डेढ़ कोस पर रेलवे स्टेशनक ताँगा-रिक्शावला ओहि गाममे अयबाक कृपा बड़ मोश्किल सँ बड़ महग रूपसँ करैक, तेहन जे बाबूए-भैया लोकनि बुते संभव। सेहो सभ मौसिम मे नहि।

से सड़क एहि बेरक 'गहूम दो, काम लो' अर्थात गहूमक बोनि दऽ क सड़क निर्माणक सरकारी योजनामे एहू सड़कक दिन फिरलै। आ माटि चढ़ाओल गेलै। खाधि खाव ऊँच सड़कक रूपमे बनि गेलै। एहनामे जेना कि होइत छैक, ग्रामीणमे किछु गोटेक बेटा उफक्त रान कमे दुर्गास्थानलँ लऽ कऽ बाबक बान्ह धरि भाषण करथि—'ई मुखियाजी गामकें स्वर्ग बना देलाह। की देरी। भऽ गेल एही माम धरि सड़क पीच भऽ जायत गाममे शहर धरि रिक्शा मोटर, बस दिन राति दौड़ैत रहत। करैत रहू भरि मुलुक भ्रमण। पहिने जकाँ नहि जे घरोमे निकलब परामत्र भवधारि बीतओ नें जाय-आबी।' अर्थात् धन्य ई मुखियाजी गामकें स्वर्ग...!

दोसर कोनो क्षुब्ध युवा ठाढ़-पठाँई ओकरा कंठ मोकै पर तैयार—'दूर छी। अहाँ नें मुखियाक दलाल छियै। सभटा सरकारी गहूम अहाँक मुखियाक पेटमे आ अहाँ सन-सनक कोठीमे...। स्वर्ग बनबैत छथिन। जतबा गहूम सरकार देलकैए ततबामे पैर एहने सड़क बनैतै ? खाधि-खुधिके भरिकऽ कनी सोझ कऽ देलथिनहें आ स्वर्ग तैयार भऽ गेलनि...बइमान सभ नहि तन। एहनें कम गहूम भेटल छलैक कतौ गामकें कनी आँखि चियारिकें देखि अबियौ, केहन ठोस बनौलकैए ? मुखियाजीकें लऽ लेबनि कहबनि जेओ बी०डी०ओ० कें सेहो लऽ लेथि...जकरा सङे साझी छनि सभटा विकास कार्यक सरकारी आ पब्लिकक कोष...।'

स्वभावत: पहिने गरमा-गरमी आ तकरा बाद कनार फोड़ब्वलि। जे कि कतहु ने कतहु किछु ठोस तथ्य रहितो तँ महाभारतक वातावरण।

दस गोटे मुखिया बी० डी० ओ० क. तँ बीस गोटे निरीह ग्रामीण जनताक। ताहूमे विडंबना तँ ई जे एके परिवारक सदस्यमे पाटा-पाटी। दू गोटे मुखियावादी तीन गोटे मुखिया विरोधी। कुल मिलाकऽ गामक मतें ई निष्चय करब बड़ मुश्किलगर जे गाममे राजनीतिक चेतनाक विकास भऽ रहलए। खूब जोरसँ। अन्यथा बी० डी० ओ०क सोझांमे पाँच वर्ष पूर्व क्यो कल्ला अलगा सर्कस छल से आब राजनगरक दस टा इसकुलिया विद्यार्थी सभ घेराव कऽ देलक। भरि दिन बाप-बाप करैत रहलाह बी० डी० ओ० साहेब। परन्तु अनाज मजदूरी योजनामे जे किछुओ जतबा किछु कयलनि-पै घोटाला भेल होइक, ई धरि सत्ये जे गामक एक दू गोटे बाकायदा रिक्शा लेने अछि आ सवारी उघैए जकर उदाहरण दऽ कऽ मुखियावादी लोक सभ आ स्थानीय विद्यालयक समय-समयपर अपना भाषणमे कहैत छथिन जे 'सड़कक ई विकास नहि भेल रहैत तँ ग्रामक ई बेरोजगार पिछड़ावर्गक युवक सभकें रिक्शा चलाकऽ अपन जिनगी सुखमय बनयबाक रस्ता भेंटितैक किन्नहुँ।' अर्थात् सड़क गामक बेरोजगारीक समस्यामे एकटा बड़का समाधानमे रहलए...से एक जने बजलाह।

ई घटना यद्यपि नवमी दिनक नहि थिक मुदा थिक ओही गामक। जाहि पर एकटा बी०ए० पास बेरोजगार युवक कौशलेन्द्र झा समसाइत कहलकैक—'यौ भोंपू झा, समदू भाभट। अहाँक मुखिया वा बी० डी० ओ० कें छनि बूझल जे एहि गाममे

कतेक बेरोजगार लोक रहैए ? आ ई नहि बूझल छनि जे जाहि दू गोटे दऽ रिक्शासँ सुखी होयबाक उदाहरण देल अछि से दुनू टा सड़क बनबासँ पूर्वहि शहरमे रिक्शे घीचै छल···झूठे प्रचार करऽ आयल छथि जेना कि कोनो चुनाव होइबला···

—आहिरे बा, नै मन छौ, मुखियाक चुनाव नहि होइबाला छैक ? तेँ वातावरण बनबऽ अयलाहए ई भोंपू झा सभ ।' एक टा युवक तीव्र स्वरें पहिलुक बात कहैत व्यंग्य कयलैक ।

—'बेसी कबिलती नै छाँटू । बेकार समय बेर्बाद किए करैत छी ? जाउ जाउ, मुखियाक चबुतरा पर, एहि सड़कक धूरा उड़िया कऽ जमा भऽ गेलैए । नाङरिसँ बहारि आउ···।'

—'अयँ औ, तकर मतलब हमरा अहाँ कुकुर कहलहुँ ? अहांक ई सपरतीब ?' भोंपू झा क्रोधित भेलाह ।

—'अहा हा, कुकुर कहाँ कहलौं ?

—'नाङरि तँ कुकुरेके होइत छै···'

—किएक ? बड़दके नै होइत छैक नाङरि ?'

—'कतहु देखलिऐक अछि बड़द के नाङरिसँ असोरा झाड़ैत ?' भोंपू झा अत्यन्त क्रुद्ध भावेँ कहलथिन – 'ई तँ कुकुरे'···

—नाङरि सँ माछी-कुकुरमाछी तँ झाड़ि लैछ बड़द...।' ओ युवक किचकिचौल थिन । तावत जमा भेल किछु पक्ष-विपक्षक दस लोक आ घोंघाउज होबऽ लागल जे 'सड़क बनलासँ ग्राम विकास भऽ गेलै' आ 'सड़क बनला सँ गामक थोड़ी घास भेल' एहि दुनू वाद-प्रतिवादसँ झगड़म-झगड़ा ।

तखन फेर ई निराकरण जे फल्लाँ चौबट्टी परक पाकड़ि तर, के दोकान खोलओ अर्थात् गामक परमिट ककरा भेटओ, तकर उकरेहीमे पूरा गामक दुनू पक्ष-व्यस्त आ दौड़ बड़हामे कच्ची सड़कके धाँगि कऽ समतल करैत उपक्रम !

खैर तँ बैह एकटा गाम आ ताहि गामक ओहि सड़कक कथा कहैत छी । तखनोक बेर पहरक घटना ।

महानन्द बाबू जाइत रहथि दुर्गास्थान, दुर्गाकेँ प्रणाम करऽ । लोकक आवा-जाही लगले रहैक, छौंड़ा-छौंड़ीक बरोह सभ जा रहल अछि आबि रहल अछि । दुर्गा-स्थानमे आब तँ पहिने जकाँ छुच्छे बताशा वा गरी-सुपारीयेक मात्र दोकान नहि लगैत छैक । आब तँ पंचमेर मधुर आ टिकुली-सिन्नुरे नहि, पानक दोकानमे चारि-पाँच रंगक लाल हरियर कारी पीयर ब्रेसियर सेहो लटकल भेटत । यद्यपि पानक दोकानमे ब्रेसियरक तुक लगैत रहू । गरीब गुरबाक धिया पुता पर्यन्त एक टा मैल चिक्कटि खरूकी पहिरने, सौंसे देह उघार मुदा कपार पर खूब भव्य लाल टोप ! उटपटाँग जकाँ बुझायत ओकर बनाय-बाना देखिकऽ ठेहुनसँ नीचाँ डाँड़सँ ऊपर सम्पूर्ण उघार । वस्त्र नहि, मुदा लाल भव्य टोप ।

तेहने एकसरि छौंड़ी खूब हकमैत दौड़लि जा रहलि छलि से महानन्द बाबू देखलथिन । ओ पच्छिम दिस खूब जोरसँ दौड़ल जा रहलि छलि ।

बहुत आगाँ सँ हरिचरन कामति ओकरे गद्दह कऽ कऽ कहने रहथिन—''दौड़ै गे डिबनी ''जल्दी दौड़, नै त हुसि जयबें'''हौ बैह, ओम्हर, बंस बिट्टी लग ठामहि, दौड़ँ फुर्ती सँ ।''

ओ छौंड़ी डिबनी बिन्छोड़े पड़ायलि जाइत रहैक । तावत एकटा आर खूब ऊँच स्वर सुनयलैक—''मुनरा जल्दी करै रे हेऽऽऽ । दौड़िकऽ जो दुर्गास्थानक बाद, बसबाड़ि लग ठामहि राखल छौक बहुतरास छैक हेऽऽ । दौड़ँ । नै तँ कोय हँसोथि लेतौ रे···।'

एहि आह्वान पर एकटा छौंड़ा मुनरा अरिया खोंसैत पकिया सम्हारैत पड़ायल लैक लागि कऽ ओही छौंड़ीक पाछाँ पाछाँ ।

तकर बाद जेना आरो बहुत छौंड़ा-छौंड़ी के एहि सोर करबाक संकेत बुझा-गेल होइक और एक पतियानीसँ सभ ओही दिशामे दौड़ल जेना दौड़बाक प्रतियोगिता हो । महानन्द बाबूकेँ अंदाज लगलनि जेना कथित बंसबाड़ि लग किछु बँटा रहल छैक । किएक तँ बाढ़ि-साढ़िमे कहियो काल खरात, जकरा नेता सोकनि 'रिलीफ' कहैत छथिन से बाँटल जाइत होइक । बेसी गंभीर नहि होइत ओ मात्र एतबे सोचलथिन जे—'अपना गाम के तँ एम० एल० ए० साहेब' बाढ़िग्रस्त क्षेत्र घोषित' नहि करबा सकलाह । तखन एतऽ 'खरात' ?' मुदा हुनका दुर्गास्थानसँ आबि कऽ फेर पाठ करबाक लेल बैसबाक छलनि तेँ ओ डेग झटकारनहि बढ़ि गेलाह ।

हुनका कात बाटे छौंड़ा-छौंड़ी दौड़ैत आगाँ जाइत रहलनि । एकपेड़ियासँ उतरियो कऽ खेतो केँ धड़ैत ओ सभ दौड़-प्रतियोगितामे लागल रहल ।

जाइते-जाइत महानन्द बाबूकेँ बुझयलनि जे भरिसक ई जेना सभ मेला देखऽ दुर्गास्थाने आ रहल अछि । ओ अपन गेलाह दर्शन करऽ आ घुरबाक क्रममे जखन दुर्गास्थानक असोरासँ नीचाँ उतरलाह तँ देखलथिन जे कैकटा लोक करीब-करीब जोशमे दुर्गास्थानसँ आगाँ दौड़ल जा रहल छैक । हुनका एकर अर्थ नहि लगलनि । एक क्षण रुकैत अनुमानऽ चाहलनि मुदा नहि अटकर लगलनि ।

दौड़ैत एक टा लोककेँ चिन्हैत रोकलथिन—'किशुना की बात छैक हौ ? एना किएक दौड़ैत जाइ छऽ सभ कथी ?'

—'मारि बजरि गेलैए, सैह जाइ छिए ?' ओ कहलकनि ।

—'मारि ? कतऽ हौ ?''

—'बैह बँसबाड़ि लग ?'

—'बँसवाड़ि लग ? ककरा संगे हो ?'

—'से ठीकसँ नहि बूझल अछि।' ओ उत्साहमे बढ़ि गेलैक। महानन्द बाबू एक क्षण ठाढ़ भेलाह जे किछु साफ-साफ सप्प बुझबा योग्य हो। मुदा थोड़ेक काल ठाढ़ रहलाक बाद ई सोचि कऽ जे बँसवाड़ि ठामहि तँ छैक, बैढ़ु एही कलम बागक बाद। चलौ देखिऐ, बात की छैक।

ओतऽ ठीके लोकक खूब भीड़। गर्जन गर्जा भऽ रहल छलैक आ कय टा लाठीसँ लैस लोक सभ सन-सन कऽ रहल छल। महानन्द बाबूकेँ अंदाज नहि लगलनि परिस्थितिक। ओ आगू बढ़लाह तँ किछु लोक हुनकर अयबाक महत्व दैत चिचिआयल—रौ वहीं'' सब रौ, सान्त ने होई जो रौ। हे मालिक अबलखुनहि करऽ बहुत हिनके निसाफ ? अपने कपाड़-फोड़ब्बैल जुनि करँ जो रौ सार सब'''।

मुदा ओकर एहि ओजस्वी शिष्ट सुझावकेँ क्यो ने मानलकैक। घोंघाउजि ओहिना होइतहि रहलैक। महानन्द बाबू आर आगाँ बढ़लाह तँ किछु गोटे आर सावधान भेल। कनीक रस्ता देल गेलनि आ हल्ला किछु कम पर अएलैक। ओ आर आगाँ बढ़लाह तँ लोक आर बाट छोड़लकनि।

महानन्द बाबूकेँ तँ ठकमूड़ी लागि गेलनि। दृश्य ई छल जे दुटा पुरुष मानुष हरिचरन आ सिवचन एक दोसरा पर लाठी उसाहने आ बेर-बेर चुनौती दैत जे बापक बेटा छेँ तँ लऽ ओ तों ? दुनू-दुनूकेँ सैह कहैत आ एक कातमे एक टा बरख बसेक छौंड़ी आ बरख एगारहे-बारहेक छौंड़ा डरायल सहमल ठाढ़। दुनूक हालत देखलासँ बुझाइत जेना गोबड़सँ दुनूकेँ खूब स्नेह होइक। दुनूक देह माथ आ गालपर गोबड़ लागल आ चेहरा दुनूक उड़ल।

महानन्द बाबूकेँ चिन्हबामे आबि गेलनि ओ छौंड़ी पहिने जे दौड़लि छलैक ओ ओ छौंड़ा जकरा बादमे क्यो सोर कयने रहैक आ ओ लेक लऽ कऽ पड़ायल छल, आ हुनका भेल छलनि जे ओ सभ भरिसक दुर्गास्थान जा रहल अछि'''सैह दुनू तँ थिकैक।

—'की बात छैक हो ? किएक तोरा लोकनि'''?' महानन्द बाबूक एतबा कहनाक छल कि लाठीबला एकटा पुरुष बाजल—'अहाँ के नै जरूरति बजबाक। अहाँ छी कोरवाईक नेता। सान्त रहु। हम आइ एकरासँ फरिछाइए लैत छी। महानन्द बाबूकेँ लगलनि तँ खूब अधलाह, मुदा सान्त रहैत तथापि बुझौलथिन-

—'अपनामे की फरिछब्बैल हो ? आइ बीच दशमीमे ई अपनामे जे लाठी भाँजि रहल छऽ ई कोन काज करैत छऽ ? राम राम ! हटै आ एलय सँ ?''

—हटबै तँ नहि। मर्द बनैऐ। अछि एक बापक जनमल तँ उठा लियऽ।'

एकटा फेर देलकै चुनौती।

—हँ रौ बापक नहि तँ की तोरा अकौ पित्तीक जनमल ? हम उठयबौ, तो मर्द छेँ तँ रोकि ले।' कुल मिलाऽ दृश्य ई रहैक जे, जे पड़ौ ने दुनू मे सँ कि तँ एक, कि दुनूक कपारसँ शोणित बहितैक। महानन्द बाबू पेसो पेसमे पड़ल एक क्षण किछु सोचि नहि सकलाह। फेर एक बेर साहस करैत लगभग एकटाक हाथ झारैत कहलखिन—'सिवचन ! तोंही मानि ले। बुझनुक भऽ कऽ तोंहूँ सैह। एना क्यो झगड़ा करय अपनामे ? शान्त रहऽ। कहऽ हमरा। बात की छैक—किएक ई झगड़ा ?'

भरिसक किछु नर्मी अयलैक।

'हइए हमही कहैत छी ? हरिचरन बाजल—हमर कटिरवी पहिने दौड़ि कऽ आयलि आ ई गोबर हँसोथि कऽ रखलक। तखन एकर बेटा पहुँचलैक आ हमर कन्टिरवीक गोबर सभटा छीनि लेलकैक। तै पर हमर कन्टिरवी रोकऽ लगलैक जे किये लैन छेँ हमर गोबर ? तँ ई झोंटा नोचि कऽ धकेलि देलकैक आ झगड़ा करऽ लगलैक। हम जे पहुँचौ एतऽ तँ देखैत छी जे ई हमरा कन्टीरवी केँ गद-गद मारि रहल अछि। तै पर ओहो भम्होरि लेलकैए। हमरा देखलक तँ छौंड़ी कानऽ लागल। हमरा रहल नै गेल तँ हम ऐ छौंड़ा केँ एक थापड़ मारलिऐ। तँ पर एकर बाप हमरासँ लाठा-लाठी करऽ आयलए।'

—'गोबर कोनो सबटा तोरे बेटी बिछने छलौ ?' सिवचन कड़ा होइत पुछलकै।

—'त की हौ काका, वहुँ बाबाक सप्पत खाकऽ कहै छियऽ जे हम पहिने एतऽ जुमि गेल रही तखन ई छौंड़ा आयल आ हमरासँ छीनऽ लागल।' ओ छौंड़ी बीचहिमे कहैत फेर हिचुकऽ लागलि।

छौंड़ा चुप ठाढ़ रहैक।

—'ई तँ बड़ खराप बात सिवचन। तोरो सन बुझनुक लोक यदि तुच्छ एतनी गोबर लेल एना लाठा-लाठी करऽ लागय...?'

—'तुच्छ गोबर कहैत छिऐक, एतनी ? एतबामे कतबा कतेक चिपड़ी होइतैक से अहाँ पोर नै ने जनबै ? एक साँझक साँसे परिवारक बुतात छिऐ ई ?'

—'हँ रौ से खाली तोरे परिवारक एक साँझक बुतात छौ कि हमरो ?' पहिल लोक कोंधैँ बाजल।

महानन्द बाबू अवाक् एहि परिस्थिति केँ बुझबाक चेष्टामे ठाढ़ रहथि आ सोझाँमे पहिल लोकक फूटल कपाड़सँ टघरैत शोणित देखाइत रहनि आ एतेक कालक बाद आब जाकऽ देखाइत रहनि दुनू गोटेक बीच बहुत रास गोबर माटिमे मिझरायल किछु गोलिआओल आ किछु छिड़ियायल पड़ल।

ई तना-तनी बजरले रहैक कि क्यो मुखियाजीके सेहो देलकनि एहि कुकाण्डक सूचना। पहुँचला स्थल निरीक्षण मे। शान्त करौलनि सब टा। दुनू पाटीक बयान लेलनि। कनी काल गुरु गंभीर रहलाह। तावत कोनो भोंपू झा आसमर्द कयलनि—'मुखियाजी चेल चाह-पानक व्यवस्था करै जा कोइ हो?' लोकके अपन एहि घोषणासँ भोंपू झा हलदिलिया देलनि।

गुरु गंभीर मुखियाजी थोड़ेक कालक बाद बाजब शुरु कयलनि—"उपस्थित गामक लोक सब, ई बहुत दुर्भागक बात अछि जे अपना देसमे एतेक एतेक प्रगती भऽ चुकल अछि आ विग्यान के एतेटा अविस्कारक भऽ रहल अछि आ अपना गाममे एक रत्ती गोबरक वास्ते भाइ-भाइमे कपार-फूटय?'

—भाय-भाय नै मुखियाजी, हरिचरन आ शिवचन पित्ती-भातिज।

क्यो टोकलकनि।

—'भेलै। हमर कहै के मतलब अछि जे गोबड़क वास्ते कहीं लड़ाइ हो? हमरा पता चलल जे एक दिन आरो एहिना एहि नवका सड़क पर गोबर वास्ते किछु लोकमे झगड़ा-झोंटी भऽ चुकल अछि। ई तँ नीक बात नहि। गामक बदनामी होइत अछि। लोक सुनि कऽ हँसैए जे फलां गामक लोक एक चोत गोबरक लेल महाभारत मचवैये। ऐ सँ चेतबाक चाही हमरा यौर के। आखिर अपन पंचायत के परतीस्ठा बचायब हमरे अहाँक कर्तब्य अछि नै।'

मुखियाजी एक क्षण गुम रहैत फेर बाजऽ लगलाह—'नै: ई बड़ा चिन्ताक बात। पैघ समस्या। एकर समाधान तुरन्त हएब जरुरी।'

—'बिल्कुल मुखियाजी। बड़ आवश्यक।' एकटा दोसर भोंपू मंडलक उदगार छूटल।

—'हमरा जनैत एकर एकहि टा समधान होइत छैक।' मुखियाजी बजलाह।

—'से की?' एकटा तेसरा भोंपू झाक विनम्र जिज्ञासा।

—'ई, जे आइसँ एहि नवका सड़कक इलाकामे जतेक माल-जाल गोबर करय तकरा एक ठाम जमा कयल जाय आ ओकर कोनो तेहन उपयोग कयल जाय जे गामक समाजक उन्नति कयल जा सकय।' आइसँ सैह इन्तजाम करब जरुरी नहि तँ रोज गोबर वास्ते पंचैती बैसत। ई तँ ठीक नहि। तेँ आब ई गाम पंचायत औफिसक सम्पत्ति भेल।'

—'मुखियाजी, बड़ ठोस कहलिऐ। इन्तजामो कोनो कठिन नहि। रामजी राउतक छौंड़ा सब अनेरे बेहनाइत रहैत छनि। साँझि बाटक ठीका हुनके दऽ देल जाइनि। गोबड़ जमा करतैक आ एकटहे ठीका पर गोइठा बनबाओल जाय आ एकरा बेचकऽ

जे आमदनी हो तकरा पंचायत के विकास-कार्यमे लगाओल जाय?' बड़ उत्तम।' एकटा अन्य भोंपू चौधरि समर्थनमे व्यस्था देलथिन।

—से तँ एखन भेल ने। मुदा अहाँ लोकनिके बुझले होयत जे सरकार गाम-विकासमे तँ सै देहातक स्तर पर गोबर गैस योजनाके सफल करयबा मे बहुत तत्पर अछि। ताहू विचारसँ हमरा लोकनि गाम बासीके सोचब कर्तव्य अछि जे सरकारक एहि 'पुनीत गोबर गैस योजनाके' जान-प्रान सँ सहयोग दियैक।

हमरा विचारसँ ई गोबर संचय कालहि जाकऽ ग्रामीण गोबर गैस योजना मे सेहो बड़ योगदान करत। तेँ आइसँ इहेह निश्चय भेल जे सड़क इलाकाक सभ टा गोबर रामजी राउत जमा करबौता। ई संपति गाम-पंचायतक उन्नतिमे लागत।'

मुखियाजी अंततः ई व्यवस्था देलखिन आ सुभ्यस्त भावे चारु कात तकलनि। महानन्द बाबूके देखि एक क्षण कनी सिटपिटयलाह फेर स्थिर होइत बजलाह—'अहा, महानन्द बाबू? अपने कखन अयलियै? महानन्द बाबू चुप्पे रहलाह किछु जबाब नहि देलथिन। मुदा आजुक गोबरक तँ कोनो पचैनी भेले नै रहैक। हरिचरन अगुताइत जकाँ कहलकै—'से तँ बादमे मे ने। मुदा आजुक एहि गोबरक की हिसाब हेतै मुखियाजी?' बीचहिमे दोसर लठिधर पक्ष उत्तेजित भऽ गेल—'हेतै की?

हमर कन्टिरबीक गोबर की ओ लेत?'

—जबर्दस्ती। हमरो छौंड़ा गोबर जमा कयलकए ओकर किएक नहि?"

शिवचन दावी देलकै।

—'ककर बापक दिन छिऐ जे...

—'हाँ हाँ, शान्तिसँ काज करै जाउ। छिः छिः। एना जुनि लड़ै जाउ। मुखिया जी बुझौलखिन।

—'कोना नै लड़ब मुखियाजी? सुपत के हमर गोबर, उनटे एकर छौंड़ा हमरा छौंड़ीके मारबो कयलकए, ई अपने हमर कप्पारो फोड़ि देलक अछि आ ताहि परसँ गोबरो ओकरे! वाह रे निसाफ। भगवान सब देखैत छथिन।' ओकर क्रोध जेना विवशता सँ दबायल जा रहल छलैक।

—'बेस तँ एकटा करु।' मुखियाजी निसाफ कयलनि—"आधा-आधा गोबर दुनू गोटय बाँटि लियऽ। झगड़ा शान्त करु।"

—'से किएक यौ? आधा-आधा किथेक बंटायत। गोबर हमर छी आ हम एक रत्ती ककरो नहि लेबऽ देबै। जान दऽ देब से बरु मंजूर।' एक बेर फेर ओ उत्साह देखौलक। मुदा बीचहिमे एक टा भोंपू झा ओकरा धमकौलखिन—

—"बड़ मर्द नहि बनऽ। जान दऽ देता। बूड़ि नहितन। केहेन दिब तँ

मुखियाजी कहलखुनहें । बाँटि ले आधा-आधी । मुखियाजीक बातकें उठा देबहुक से तोहर अख्तियार नै छऽ ऐ गाममे।'

ओकर लाठी हाथ मे जेना तनाय लागल छलैक। महानन्द बाबूके बूझल छलनि जे शिवचन मुखियाजीक लोक छनि ओकरा विस कऽ निसाफकें हाँकने जयतैक। शिवचनकें लाभ देने जयतैक। ओ चुपचाप एक क्षण अपन कर्तव्य सोचैत रहलाह। तावत मुखियाजी पुछलखिन—"की महानन्द बाबू ? बेजाय कहलिऐक ?' महानन्द बाबूकें क्रोध आबि गेलनि ।

—'बेजाय ? बेश इन्साफ कयलिए अहाँ लोकनि। उनटे ओकर बेटा ओकर बेटीकें मारलकै, गोबर छीनि कऽ छोटि देलकै आ बाप अपने ओकर कप्पार फोड़ि देलकै, तेकर सभी अहाँ आबिकऽ शिवचन कें इनाम दऽ रहल छिऐक जे खूब कयलऽ। ई सँ अद्भुत न्याय भेल मुखिया। गाम के तँ अहाँ लोकनि भुजवा देबै आपसी झगड़ा करवा कऽ...

—'महानन्द बाबू। बड़ पालिटिक्स नहि झाड़ू। घमकू एतऽसँ। मुखियाजीके एहन गप्प कहैत एकहुरत्ती संकोचो नै भेल? एकटा भोंपू झा घुड़कल महानन्द बाबू दिस। मुदा ओ स्थिर रहलाह।

—'अहाँकें मुखियाजी भगवान छथि, पामीजी—जी हजूरीमे देह पर साफ अंगा झूलैये आ पानमें ठोढ़ रंगल रहैए। महानन्द खाली भगवाने टा कें भगवान कऽ मानैत छथिन।'

ई एहन अन्याय कयनिहारकें कयो किछु कहि सकैए...बीचहिमे भोंपू झा मुखियाजीक अतिरिक्त वफादारीमे लपकलाह महानन्द झाकें मारऽ कि तावतहि हुनका कप्पार पर सोहाइ लाठी बजरल आ ओ बपहारि कटैत बैसि रहलाह ठामहि।

तकर बाद तँ ओतऽ घमासान लाठी चलऽ लागल आ भयावह दृश्य उपस्थित भऽगेल। स्वाभाविक छैक जँ ओतऽ मुखियावादी आ मुखिया विरोधी दुनू प्रकारक गाम-लोक छल तँ खूब जमि कऽ लाठी बरिसल आ पड़ाहि लागि गेल।

प्रात भेने महानन्द बाबू आ ओहि हरिचन पर वारंट कटि गेलैक। मुखियाजी ई बयान देलखिन जे महानन्द बाबू दंगा करबौलनि। समाज विरोधी तत्वके रूपमें गामक शान्ति-व्यवस्थाकें नष्ट करैत छथि आ वैक-वार्ड फारवार्डक पॉलिटिक्स करैत छथि, हुनका जेहलसँ बाहर रहब समाज आ देशक लेल 'हानिकारक।'

मुदा हरिचरण जे बेयान देलकै ताहिमे ओ कहलकैक जे मुखियासँ बेसी तँ मुखियाक आगाँ पाछाँ नाडरि डोलौनिहार कुकराहा सब खराब होइए। तेँ ओकरा सबकें पकड़िकऽ धूनि देबाक चाही। पाछाँ देखल जयतैं। कहू तँ महानन्द बाबू पर हाथ उठौलक चण्डलवा। बाँचि गेलाह नहि तँ ओतऽसँ उठिकऽ धारेक कात जइतथि...

महानन्द बाबूकें पकड़ल नहि जा सकलनि से मुखियाजीक बेचैनी बनले रहलनि किऐक तँ हुनका बेर-बेर ई डर होइत रहनि जे महानन्द बाबू मुखियाक लेल उम्मीदवार हेबे करताह।

एहना परिस्थितिमे एहन कोनो गामक खिस्साक तात्कालिक अंत की भऽ सकैत छैक से अनुमान कयल जा सकैए। ओना वात्रा दिनमें विधिवत रामजी राउतक धिया पुता लाठी लकऽ सड़कक इलाकाक गोबर जमा करबामे तैनात रहैत छथिन आ सड़कक गोबर विधिवत गाम पंचायतक आय भऽ गेलैक अछि जकर उपयोग वकौल मुखिया, भविष्यमे सरकारक गोबर गैस संयत्रमे कयल जयतैक आ गामक सर्वाङ्गीण विकास कयल जयतैक।

ओतऽ गाममे एकटा अफवाह पसरल छैक खूब जोर सँ जकरा लोक हरिचरणक बयानसँ जोड़िकऽ उड़ौलकैये जे 'आइ काल्हि भोंपू झा सभक बड़ मंदी छनि। धोतीक डड़ुडा ढील छनि आ तेँ मुखियाजीकें बेचारेकें बेसी काल असकरे निकलऽ पड़ैत छनि। भोंपू झा सभ लाठीक डरें पतनुकान नेने छथि।

आ मुखियाजी महानन्द बाबूक खोजमे पुलिसकें बराबरि मदति कऽ रहल छथिन। □

अवसरक लोक

महेश प्रसाद आ बैसल-बैसल सात बेर बनाओल चाय कपमे दाढ़ी छीलि रहल रहथि तखन ओहिना समाचार होइत रहैक। एकाएक खौंझायल मन ठमकि गेलनि, किएक तँ आकाशवाणीसँ सभ टा समाचार गंगा आ यमुना नदीक बाढ़िक प्रकोपक छलैक आ लगभग एहि नदी-तटपर बसनिहार सभ टा नगर दऽ समाचारमे कहल गेल रहैक जे फलाँ ठाम गंगा खतराक निशानसँ एतेक फीट ऊपर बहि रहल अछि तँ यमुना एतेक।

महेश प्रसाद झाक बहुत रास सम्बन्धी सभ रहथिन एहि सभ शहरमे कैक ठाम जनिका विषयमे समाचार ई रहैक जे जबर्दस्त खतरा बनल छैक आ कय ठाम तँ नागरिककेँ चेतावनी दऽ देल गेल रहैक शहर छोड़िकऽ सुरक्षित स्थानपर चल जयबाक लेल।

सभ समाचार प्रमुखतः बाढ़िक प्रकोप आ तकरे खतराक बारेमे रहैक। महेश प्रसादक अपनो शहरमे गंगा खतराक निशानसँ बहुत ऊपर बहि रहल रहनि। मुदा अपना दऽ निश्चिन्त रहथि किएक तँ हुनकर घर गंगाक कातसँ बहुत ऊँचपर छनि आ हुनक घर धरि गंगा केँ अयबामे करीब-करीब दू टा खतराक निशान पार करऽ पड़तनि। तेँ अपना दऽ निश्चिन्त, मुदा पटना-दिल्लीक अपन बाढ़िग्रस्त सम्बन्धी सभक विषयमे काफी चिन्तित रहथि। मुदा, चिन्ते टा कऽ सकैत छलाह। किएक तँ अधिकांश रेल-मार्ग बन्द भऽ गेल छलैक आ दस किलोमीटर पहुँचबामे पचीस कीलोमीटर तय करऽ पड़ि रहल छलैक लोककेँ।

बाढ़ि अयलापर, जेना कि होइत छैक, सभ बेर, कैक प्रकारक बीमारीक प्रकोप बढ़ि गेल रहैक आ लोक ताहूसँ चिन्तित छल। ओहुनो कय माससँ लोक पाण्डुरोगसँ आतंकित छल। सम्पूर्ण आबादीक एक तेहाइ लोक एहि पाण्डुरोगक शिकार भऽ चुकल छलैक आ कय टा मृत्यु सेहो भऽ चुकल छलैक शहरमे, तेँ बेसी चिन्तित छल लोक। ताहि परसँ ई बाढ़ि जनित संक्रामक रोगक आतंक लोककेँ किछु भारी बुझयलैक। शहरक कय टा मोहल्लामे पसरि चुकल रहैक आ अफवाह ई छलैक जे अस्पतालोमे रोगीकेँ कोनो महत्व नहि दैत छैक। रोगीकेँ लऽ कऽ टिटिआइत रहू। क्यो नहि सुनत। रोगीक प्राण चल जायत, मुदा डाक्टर सभक अपन रवैयामे कोनो अन्तर नहि

होयतैक, तेँ लोक आर असुरक्षित आ भयभीत रहए। खान-पान' उठब-बैसब सभमे ओ भयभीत आ असुरक्षित रहय। वस्तु-जातमे से दामक वृद्धि आर मोश्किल। ओना, डाक्टर सभक निजी क्लिनिक सभ बेस आबाद ! ओतऽ ओ लोकनि खूब जमल। समय पर अस्पताल जयबाक, वार्डमे समय पर रहबाक हुनका लोकनिकेँ बिल्कुल जरूरी नहि लगैत रहनि। मंत्रीजी बड़ शान्त आ अहिंसावादी लोक, तेँ अस्पताली सफाइ कयनिहार कर्मचारीसँ लगाइत डाक्टर धरि सभ एक प्रकारक निश्चिन्तताक वातावरणमे जीबैत अपन अभ्युदयक दिशामे व्यस्त।

ओना बाढ़ि आबि अयलापर जेना कि कय टा सूतल संस्था सभ सुरफुरा कऽ उठि पड़ैए आ 'राहत कार्ज' मे जुमि जाइत अछि, कय टा बिन जन्मल समाजसेवी संस्था सभ जनमि कऽ तुरन्त 'गराहतकार्य'क सरंजाम जुटा लैत अछि आ कार्य करऽ लगैत अछि से सभ चालू भऽ गेल रहैक। स्कूल-कालेज सभक छात्र संगठन सभ सेहो सरकारी प्रेरणा वा आदेशसँ सक्रिय भऽ गेल रहैक आ टोला-मोहल्ला सँ रोटी, चिक्कस, दालि- पुरान कपड़ा सभ माँगि कऽ एकट्ठा करय आ अपन प्रभारी लोकनिक देखरेखमे तकर वितरण समारोह' मनावय—बाढ़िग्रस्त क्षेत्रमे जा-जा कऽ।

एम्हर रेडियो पर, अखबार सभमे सेहो बराबरि स्थानीय बड़ आदमी सभक अखिल भारतीय क्लब सभक अध्यक्ष वा महासचिवक, राजनेता आ महिला समाज सेविका लोकनिक वक्तव्य सभ बनादन प्रकाशित-प्रसारित भऽ रहल छलनि लगातार बहुत रास रूपक प्रसारित होइत रहैत छलैक जाहिमे बाढ़िसँ ग्रस्त लोकक इन्टर्व्यू सेहो रहैत छलैक आ मुखिया प्रखण्ड पदाधिकारी वा एही प्रभृति लोक सभके जान-प्राणसँ दिन राति राहत कार्यमे दौड़-बरहा करैत रहबाक आ बाढ़िपीड़ितकेँ पर्याप्त सुख सुविधा पहुँचाफोल आ रहबाक खबरि सभ लगातर प्रसारित भऽ रहल छलैक आ, गुनउबला दूरस्थ लोक सभकेँ मनमे आशा आ विश्वास जगैत छलैक जे कार्य भऽ रहल छैक।

रेडियो वा अखबारक समाचार सभक सब गामक बाढ़िसँ घेरायल रहबाक बात कहैत छलैक आ लाखो स्त्री-पुरुष बाल-बच्चा आ मवेशीक विपत्तिक कष्टक जानकारी दैत छलैक जनिका सभक उचित व्यवस्थाक लेल सरकार तँ अछिये बहुत रास निजी संस्थान सभ सेहो सक्रिय अछि। आ, लोक सभकेँ उपयुक्त स्थानपर लऽ जयबाक वास्ते, एतेक नाव, तँ एतेक ई-ओ ओकर व्यवस्था भऽ गेल छैक। कखनो-कखनो देशक बड़का-बड़का, औद्योगिक प्रतिष्ठान द्वारा सेहो दस हजार पाँच हजार राहत सहायता कोषक हेतु देल गेल राशिक उच्च स्वर चर्चा होइत छलैक आ लोक सुनैत छल, क्यो-क्यो तँ खूब आश्वस्त अनुभव करैत छल क्यो-क्यो सुनिकऽ विरक्त होइत छल। आश्वस्त होइबला लोकक कहब छलनि जे समस्या देशव्यापी छैक वा एकरा वास्ते जनबे कऽ सकैत छैक सरकार से बहुत छैक।

ते विरक्त होइत छलाह एहि सब परिस्थितिक गोष्ठीक आ सेमिनार एवं समाचार सुनिकऽ हुनक तर्क छलनि जे आखिर ई वर्ष वर्ष बाढ़ि अबिते किएक छैक ? ई कोनो एहि वर्ष तँ अयलैए नहि। कतेक वर्षसँ आबि रहल छैक आ तैँ मे जनजीवन केँ सभ वर्ष तहस-नहस कऽ दैत छैक तँ आखिर एकर चिन्ता किएक नहि भेलक सरकारकेँ एतेक दिन ? एहि भरोसे जे बहुत रास संस्था सभ छैक, बहुत मित्र देशक आ अपन विभाग सभक अनुदान सभ भेटैत छैक बाढ़िग्रस्त लोककेँ सहायतार्थ ताही उम्मीद आ विश्वास पर बाढ़िक समस्याक मूल रूपमे समाधान पर किछु सोचले नहि गेलैक आ वर्षक वर्ष करोड़ो अरबोमे राष्ट्रिय सम्पत्तिक सत्यानाश कयल जाइत रहलैक ?

पहिल प्रकारक लोक दोसर प्रकारक लोकसँ एहि प्रश्नपर नाराज होइत छलथिन जे अहाँलोकनि जे भऽ रहल छैक तकरा महत्व नहि दैत छिऐक आ एक टा अनर्गल प्रश्न ठाढ़ करैत छी जाहिसँ 'सेवा कार्य' मे तेजी नहि आबि पबै छैक ?

दोसर प्रकारक लोक पहिल प्रकारक लोककेँ कहैत छथिन—'अहाँक तँ हिसाब किताब लागि जाइत अछि वर्ष भरिक खाय-पीबाक एहि बाढ़िक सहायता कोषसँ। अहाँकेँ चिन्ते की ? मुदा एतेक लोक बाढ़िमे भसिया कऽ डूबि कऽ मरि जाइत अछि तकर दुःख वा चिन्ता अहाँक किएक हो ? रातिमे सपरिवार अपन बच्चाकेँ दुलार कऽ कऽ माय-बाप सुतैए आ भोर भेने बच्चा, बाढ़िमे कतऽ घर-सँगे बहा कऽ कालक मुँहमे समा गेल रहैत छैक माय-बाप बचा नहि पबैत अछि, भाय, बहीन, मवेशी सभक तँ बेहू समस्या छैक। अहाँलोकनिकेँ मतलब तँ 'राहत कार्य' जुटा देश भरिसँ अछि। जतऽ ततऽ पाइ जुटबैत छी तथाकथित आडिटक डरेँ किछु खर्च करैत छिऐक आ विशेष संग्रह करैत छी। भऽ गेल। तँ अहाँ सभ लेल तँ ई 'सीजन' थिक। व्यापारक सीजन। जेना भदवारिमे सभ दिन बजारसँ बोझक बोझ छत्ता बिका जाइत छैक तहिना बाढ़ि कि कोनो प्राकृतिक संकटक कालमे अहाँ लोकनिक व्यापार अथवा नफा शिखर धरि ठेकि जाइए...।'

स्वाभाविक छैक जे एहन वाद-विवादसँ झगड़ाक स्थिति उत्पन्न भऽ जाइक। आ एहि तरहेँ ठाँहि-पठाँहि कहनिहारकेँ समाज विरोधी, त्याग आ सेवामे आस्था नहि रखनिहार, घोर नास्तिक आ जनविरोधी प्रकारक लोक बूझल जयबाक वातावरण बनल रहैक।

एहने वातावरणमे भरि दिन बितलाक बाद संध्याकाल महेश प्रसाद बैसल रहथि आंगनमे। वर्षा नहि भऽ रहल छलैक। घोर उमस व्याप्त रहैक। बिजली अपना स्वाभाविक गतिसँ पछिला सवा घंटासँ गायब रहैक भरि दिनमे भरिसक ई चारिम बेर छलैक। महेश प्रसाद आंगनमे खुजले देहे बैसल रहथि। बाढ़िक

विभीषिका आ संस्था एवं सरकारी कुव्यवस्थाक खोखलापन पर भरि दिन लोक सभसँ विवाद भेल छलनि। सैह बात सभ मनमे घुरिआइत रहनि। मन तिक्त रहनि। ओ स्वयं बाढ़िग्रस्त लोकक वास्ते किछु करऽ चाहैत छलाह मुदा एक तँ नौकरी, दोसर परिवारी अभाव, चिन्ता। तेँ मन मसोसि कऽ बाढ़िक समाचारेसँ संतोष करैत छलाह, बड़ क्षुब्ध क्रोधित। बहुत रास युवक सम्पर्कमे रहनि, पूरा नगरीय कार्यकलापक सूचना रहनि जे फलाँ मोहल्लामेँ फलाँ संस्थाक फलाँ एतबा संग्रह कयलनि तँ आइ फलाँ गोदामक मजूर सभ अपन एक दिनक मजूरी बाढ़ि सहायता कोषकेँ दऽ देलकैक जे फलाँ सेठजी खोललनिहेँ...।

एहि अमानवीय 'चंदा-शोषण' आ तथाकथित सहायता कोष पर हुनकर देहमे, मनमे जेना धधरा लागि जानि। पूरा समाजक, विशेषतः अशिक्षित धर्मप्राण आ नैतिकताग्रस्त वर्गक लोक एहि कल्पित समस्याक समाधानी घोषणासँ हुनकर हृदय आतंकित बेचैन रहनि। मुदा सर्वत्र समाजमे व्याप्त रहैक ई रोजगार जकाँ वातावरण। ओ एकसरे कऽ की सकैत छलथिन एही सभ गुमधुनमे बैसल देह पर लुधकैत मच्छड़केँ उड़यबा लेल गंजीसँ हौंक रहल छलाह तखने दू टा युवक अयलनि। बैसऽ कहलखिन। ई दुनू युवक देखऽ-सुनऽमे नेनमुँहे, दुब्बर पातर मुदा गम्भीर आ साहसी तरहक कालेज-छात्र। बेसी काल अबैत छनि।

—'की बात मुकुल ? की हाल भऽ रहल छैक ?' महेश प्रसाद पुछलखिन।

—'की होतैक ? एहि समाजमे करबाक लेल छैक की ?' ओ रुक्ष छल। दोसर लड़का सेहो अपन चुप्पी आ गम्भीरतासँ एकर सहयोग देलकैक। दुनू खूब मित्र अछि।

—'करबाक लेल ? अखबार नहि पढ़लऽहुँ ? कहलगाँवसँ लऽ कऽ पूरा ओ इलाका बाढ़िसँ घेरायल छैक एतेक लोक तबाहीमे पड़ल अछि।'

—''किछु तबाही नहि छैक ? बहुत रास सरकारी अनुदान सभ चालू छैक। लोक उठा रहल अछि आ बड़ जोरसँ बाढ़ि पीड़ितक सहायता भऽ रहल छैक।' ओ आर तुर्श होइत कहलकनि।

—'सोँ एना भऽ कऽ किएक बाजि रहल छऽ ? खाली 'फलाँ मोहल्लासँ सुनलौं जे भूतपूर्व म्युनिसीपेलटी सभापति कतेक रास वस्तु, टाका जमा कऽ कऽ राहत कोषमे देलखिन अछि...फेर श्रीमती फलाँ दऽ सुनलहुँ जे अपन संस्था चलित महिला संघक कोषसँ, ओही बैनरसँ बड़ सक्रिय छथि, स्वास्थ्यक विरोधक बादो राति दिन भाग-दौड़मे छथि, सुनलौंहेँ जे ओ कार्यालयसँ पर्यन्त छुट्टी लऽ लेने छथि एहि राहत कार्यक लेल सपरिवार समर्पित छथि...।

—'समर्पित छथि सरकारी अनुदान मद सभक पाठौं आ बाढ़ि निरीक्षणमे

आयल गेल बड़का नेता सभक पाठी। स्वास्थ्य सेहो खूब ठीकठाक छनि। अपन स्वास्थ्य तँ ठीक आदमीकेँ आर्थिक मनःशान्ति, से पर्याप्त छनि। सीजन ठीक आ अपन बुद्धि तथा समाजक बेवकूफीक रूपमेँ खूब प्रसन्न छथि आ सीजनक पुरा-पुरा लाभ उठबऽमे अपन पति समेत, मित्र कुटुम्ब सहित खूब व्यस्त छथि। अगिला चुनावमे पतिदेवकेँ ठाढ़ो करतीह।'

—'एतेक बात तोँ किएक कहैत छऽ मुकुल? किएक रुष्ट छऽ?' ओकर क्रोध नीक लगलनि महेश प्रसादकेँ। तैयो पुछलथिन—'उचिते क्रोध छैक एकर।' जवाब चन्द्रेश्वर देलकनि—'बहुत धाँधली छैक सौँसे। बाढ़ि राहत कार्य नहि भेल, सिमेन्ट आ गोंजाक परमिट भऽ गेल। बहुत-बहुत घोटाला आ बेमानी चलि रहल छैक। जे बेचारा बाले बच्चे चारू कात पानिसँ घेरायल अछि से तँ कागजी बायबी आश्वासन पर रहुबे करत जायत प्राण नहि निकलतैक देहसँ। मुदा स्थिति की छैक जे किछु सामान पठाओलोँ जाइत छैक त उंचके मकानक छतपर खसि पड़ैत छैक चाहे बच्चाक लेल पाउडर दूधे किएक नहि हो। कारण की तँ हेलिकाप्टर तँ ओतहि उतरि सकैछ। सेहो वितरण भऽ जाओ तँ बात। छतवाला महोदय एतेक जे जान हुतिकऽ ओहुन ऊँच पँच मकान पीटि कऽ ठाढ़ कयने छथि तनिका एतबो लाभ नहि, अर्थात् किछु डिब्बा बिस्कुटो आ दबाइयो नहि? भऽ तँ गेल वर्षमे एक बेर तँ आमदनीक ई महान्स्रोत बाढ़ि। नकरा निरर्थक कोना जाय दियऽ। आ फलस्वरूप वर्ष भरि ओ बिस्कुट अधनिहार गेनिहारक स्वागतमे चाह काफी संगे प्लेटमे परसाइत अछि ...आ ड्राइंग रूम स्नेह निबहैत अछि।

धिक्कार छैक। मुदा कयनिहार लोकक लेल किछु करबोक कोनो गुंजाइशे नहि।

—'की बात की भेलैक?' महेश प्रसाद पुछलथिन।

—'काल्हि गेलहुँ कचहरीमे जे केन्द्रीय बाढ़ि राहत कार्यालय छैक। एक टा पैघ कोठली, बड़का टेबुल, कुर्सी सभ आ टेलिफोन। पहिने तँ प्रतीक्षा करऽ पड़ल जे बड़ो भेटय। फेर एक टा सज्जन पाठीक गोटेक चम्मच प्रकारक लोकसँ घेरायल कोनो दोसर कोठलीसँ अवतरित भेलाह। सभ अबितो-अबितो कनफुसकी जकाँ हुनकासँ गप्प करैत छल। ईहो बात किछु विचित्र आ रहस्यात्मक बुझायल। खैर, ओ बैसलाह टेबुलपर। कतहु सँ टेलिफोनक घँटी बजि पड़ैए हम अतबा कालसँ ठाढ़ रही, बाजि रहल छलैक। खैर-आब ओहिमेसँ एकटा चम्मच उठौलनि चोंगा आ 'हेलो' बजबाक कृपा कयलखिन।

ओम्हरसँ प्रायः जीपक माँग कयल गेल छलनि कोनो ठाम जाहि पर किछु सामान लादिकऽ पीरपैंती दिस जयबाक छलैक। ताहि पर ओ कहलखिन जे-'दो ही जीप है, दोनों बाहर है। अभी तो एक घंटा 'वेट' करना पड़ेगा' एक घंटा में टेलिफोन कर लीजिये।' भाई शाम हो जायगी तो हम क्या करें? सरकार साधन देती है नहीं अब दो ठो जीप से इतना बड़ा बाढ़ग्रस्त क्षेत्र संभालना...। भाई हम कोई है इससे मतलब नहीं...राहत कार्यालय से बोल रहे हैं।' चोंगा राखि देलखिन। बड़ा विचित्र रुखि लागल क्रोध आ वितृष्णासँ जेना प्राण घोंटाय लागल। मुदा हम तँ गेल रही राहत कार्यमे किछु नत्थक सक्रिय कार्य करय। ओतयऽ ई गप्प भेलैक। वस्तुतः अधिकारी व्यक्ति छलाह् पान चिबबैत टेबुलपर पानक बेस पैघ पतोड़ा सेहो राखल छलनि, ओ टेलिफोन पर जवाब देनिहार व्यक्तिकेँ प्रशंसात्मक भावसँ कहलखिन—'अच्छा, कहा। साले सब लगातार यही किये रहते हैं। अरे, इतनी सेवा करना ही चाहते हो तो एक ठो 'जीप' का इन्तजाम नहीं कर ले सकते? किसी से ले लो। ये लोग ऐसे ही हैं। सरकारी जीप मिल जाती है तो राहत-कार्य कर आते हैं। बेहूदे लोग। और यहां सरकार की हालत यह कि मात्र दो-दो गाड़ी मात्र दो जीप इतने बड़े क्षेत्र के लिये...

—'वैसे दुसरी जीप गई है कहाँ? क्योंकि पहली वाली तो सबौर तरफ गई है, दूसरी?

—'सर, उसे जरा पान लाने भेजा है। देख नहीं रहे हैं सूख गये हैं सब। भेरायटी के पास भेजा है।' आता तो होगा इसलिए मैंने घंटा भर बाद टेलिफोन करने कहा है।'

एक नम्बरक चम्मच, साहेबकेँ रिझबैत कहलखिन आ फेर हें-हें करऽ लगलाह। साहेब प्रसन्न भेलखिन आ खूब जोरसँ मुँहक पान चिबबऽ लगलाह। हमरा तँ जेना, शोणितक घोंट पीबिकऽ रहि जाय पड़ल। बड़ो ओतऽ हमरा दुनू गोटेक उपस्थितिकेँ महत्व नहि देबऽ चाहि रहल छल। ओ सभ अपन हँसी-ठट्ठामे मस्त छल। हारि कऽ हम ओकरा कोठलीमे पैसि गेलिए। एहि बातसँ ओ सभ जेना चौंकल।

—'की बात छै जी?' एक गोटा पुछलक।

—'हम बाढ़ि-पीड़ित लोकनिक वास्ते किछु करऽ चाहैत छी।' हम 'साहेब' केँ कहलिऐ, आ आदेश लेबाक मुद्रामे ठाढ़ भऽ गेलहुँ। —'हमरा काज दियऽ।'

—साहेब समेत सभ गोटे हमर एहि बातपर गुरड़ि-गुरड़ि कऽ देखऽ लागल। फेर साहेब किंचित विनम्र होइत पुछलक—'आप किस संस्था के हैं?'

—'जी नै। कोनो संस्थाक नहि छी हम।' हम कहलिऐक तँ जेना हमर ई गप्प ओकरा सभकेँ बड़ अनोन बुझयलै, अनसोहाँत।

—'संस्था के नहीं हैं, तब फिर कैसे करेंगे कार्य ?' ओ पुछलक।

—'किएक, हम असकर नहि कऽ सकैत छी ? काज करबा लेल संस्थाक होयब जरूरी छैक की ?' हम कनी रुक्खे स्वरें कहलिऐक।

—'सो तो है भाई। जरूरी है। हम आपको किस रूप में काम सौंप सकते हैं ?'

'एक टा कार्यकर्ता, एक युवकक रूपमे, आर कोन रूपमे ?' हम कहलिऐक।

— 'नहीं भाई, हम ऐसा नहीं कर सकते।' तखन फेर ओ हमरापर जेना 'कृपा' करैत सहानुभूतिमे सुझाव देबऽ लागल—'आप ऐसा क्यों नहीं करते, किसी संस्था से जुड़ जाइये और काम करिये।'

—असम्भव। हम कोनो संस्थामे नहि जुड़ि सकैत छी।'

—'तब फिर, कोई अपनी ही अलग एक संस्था बना डालिए। सुविधा रहेगी।' ओ आगाँ सुझाव देलक।

—'मुदा ई अलबत्त विचित्र बात छैक जे हम चाहि रहल छी एना कार्य करी आ अहाँ सुझा रहल छी संस्था बनबऽ।' खौंझयलहुँ हम।

—'लाचारी है। हम आप को कैसे रेकोगनाइज करें ? आप ही बताइये। हम आपको कैसे, किस आधार पर मानें ?' ओ खूब गम्भीर स्वरें पूछि रहल छलाह।

—'से हम अहाँके की बता सकैत छी हमर एतबे कहब अछि जे हम एहि परिस्थितमे अपन किछु सेवा देबऽ चाहैत छी।'

—'हम बूझते हैं आपकी भावना लेकिन हम लाचार हैं।' ओ बजलाह आ जेना हमरा पर दया करैत आगाँ कहऽ लगलाह—अच्छा, आप तो विद्यार्थी लगते हैं, ऐसा करिये, आप अपने कालेज से लिखा कर ले आइये प्रिंसिपल से।'

—जी नै। हम परीक्षा दऽ चुकल छी, कालेज छोड़ि चुकल छी। हमर एहि उत्तर पर ओ किछु चिंतित भऽ गेलाह आ फेरो किछु सोचऽ लगलाह।

—'अच्छा, एक काम करिये। आप किसी बड़े आदमी से प्रमाणपत्र ले आइये तो भी काम...

विचित्र बात अछि महाशयजी, हम चाहैत छी काज करऽ आ अहाँ हमरासँ बड़े आदमी' तकबा रहल छी। स्वाभाविक छलैक जे हमरा स्वरमे आब उत्तेजना भरि गेल छल। हुनक मुख-मुद्रासँ बुझायल जेना कि ओ तथापि हमरा पक्षमे किछु आर सोचि रहल छथि।

—अच्छा, आप एक काम करिये, आप नेहरू युवा केन्द्र सेही एक प्रमाण पत्र ले आइये। वह तो आप ही जैसे युवा के लिये है।' हम तँ खौंझा कऽ आगि होइत रही। तैयो किछु सोचैत विदा भेलहुँ ई कहैत जे—'देखी, कोशिश करैत छिऐक एक बेर।'

नेहरू युवाकेन्द्र पहुँचलहुँ तँ अधिकारी महोदय पैघ परियामे रोटी भरबा रहल रहथि, जे रोटी कमटा मोहल्लाक लड़की सभ पकौने रहैक। विभागीय कैमरा मैन चुल्हासँ लऽ कऽ रोटी भरबै धरिक पूरा दृश्यक फोटो घीचि रहल छल आ फोटोमे नीक अथवा लेल लोक बेलैत रोटी छोड़िकऽ अँचर वा ओढ़नी ठीक करऽ लगैत छलि। फोटोग्राफर कय कोणसँ अधिकारी समेत एहि दृश्यक फोटो उतारबामे अपस्यांत छल।

हम एक मिनट समय देबाक याचनाक संग जखन अधिकारी महोदयकें अपन उद्देश्य कहलियनि तँ ओ खूब गंभीर भऽ गेलाह। हुनकर ई गंभीरता ताहि सीमा धरि बढ़ि गेलनि जे ओ बड़ दार्शनिक मुद्रामे अपन असमर्थता बुझबऽ लगलाह।

— देखऽ बौआ ! हमरा ओतऽ जे लोक राहत काजमे संलग्न अछि तकरा सभक तँ एक टा निश्चित सूची छैक। आब आरो एहिसँ बेसी लोकक बारेमे तँ हम एखन नहि सोचलहुँ अछि। अन्यथा तों पढ़ल-लिखल आदर्शवादी उत्साही युवक छऽ, तोरा तँ अवसर भेटबेक चाहैत छलऽ। तोरे सोकनिक सदृश युवाक लेल तँ नेहरू युवा केन्द्र छैक। परन्तु हमरा बड़ अफसोच भऽ रहल-ए...एखन तत्काल ...तँ...।' हम घुरि अयलहुँ।

महेश प्रसाद चुप आ उदास भऽ गेल छलाह।

—'आब अहीं कहू कि सतऽ सही काज करबा ले अनावश्यक 'बिल्ला' लगायब जरूरी छैक ओतऽ कथी की काज करत आ कोना ?' चन्द्रेश्वर दुःखी आ क्षुब्ध छल।

— आ' दोसर दिस संस्था सभ अछि। रोटी बेलैत कालक आ बँटबा कालक फोटो घिचबबामे व्यस्त अछि।'

लोक जनसाधारणक एहि संकटापन्न हालत कें अपना-अपना पक्षमे एहि सीमा धरि भजा सकैए से सोचलो नहि जा सकैछ। घृणा होइत अछि। आदमी, सेवा आ समाज-कार्यक अर्थमे एहन कमीना सेहो भऽ सकैए। तैयो ई सभ चलिये रहल छैक। जिनका भजयबाक छनि से बाढ़ि तँ बाढ़ि, मुर्दाकें पर्यन्त भजा लैत छथि। आ सत्य पूछी तँ ओहने लोकक जमाना छैक। 'बैनर'क जमाना। बैनर ! चाहे तकरा नीचाँ काज किछु होइत हो।

—'श्रीमती सिन्हा। इलाकामे फकरोंसँ नुकायल छैक हुनकर व्यक्तित्व। आइ काल्हि एहि बाढ़ि-पीड़ित सहायता कोषक लेल, राहतक लेल की-की ने कऽ रहलि छथि ? एक संस्थाक महामंत्री बनलि छथि। पर्समे लऽ कऽ घूमैत छथि जोकान सभसँ दिल्ली धरि जे ओ दलित महिला वर्गक संकट मे कठिन कार्य कऽ रहल छथि। ओकरा सोकनिक स्थितिकें सुधारब ओकरा सभक जीवनकें उठायब हुनकर जीवनक परम ध्येय छनि। आइ-काल्हि हुनक परम ध्येय बाढ़ि पीड़ितक सहायता भऽ गेलनिहें।

—हँ-हँ, हमर बेटी कहि रहलि छलि। पछिले दिन तँ ओ ओकर स्कूलमे आयलि रहथिन, निवेदन करऽ जे अगिला दिन सभ विद्यार्थी अपना-अपना घरसँ कमसँ कम छौ-छौ टा रोटी आनय जे कि बाढ़िग्रस्त क्षेत्रमे भूखल नेन्ना-भुटका सभकेँ बाँटल जयतैक आ सत्ते दोसर दिन हँसोथि कऽ जीपसँ लऽ गेलखिन। आब सोचू कनी १४-१५ सय विद्यार्थी पढ़ैत छैक स्कूलमे। सय डेढ़ सय अनुपस्थितो होइक तैयो अठ्ठारि सय रोटी एकट्ठा भेलैक।

—आरो ओहियो महेश बाबू। एक टा बड़ मजगर घटना भेलैए। श्रीमती सिंहा जे राहत-काज कऽ रहल छथि तकर सत्ये दोसर उदाहरण नहि भेटत, बेजोड़।' चन्द्रेश्वर रहस्यपूर्ण बिहुँसी दैत बाजल आ चुप भऽ गेल।

—से की भेलैक?' महेश प्र० पुछलथिन।

—श्रीमती सिन्हा एक टा-आर स्थानीय हाई स्कूलमे सेहो रोटी जमा करऽ गेल छलीह। रोटी तँ हँसोथि कऽ लऽ अयलीह। दोसर दिन ओ पुरान-धुरान कपड़ा लेल गेलि रहथि। ऐह कल्हुके तँ बात छैक। किएक तँ शिक्षक सभ सेहो खूब सहयोग कयलकनि और अपना विद्यार्थी सभसँ अभिभावक लोकनिक खबरि दियाकऽ ई आग्रह कयलकनि जे पुरान-पहिरल कपड़ा सभसँ सेहो बाढ़िग्रस्त लोकक सहायता करथि। ओ जीप ले बेह कपड़ा सभ लादि कऽ श्रीमती सिन्हा लऽ जाय आयलि रहथि। ओ जीप रोकिकऽ बरन्डापर पयरो नहि धऽ पओने हेतीह कि वयो एक गोटे चिकरैत बाजल —वैह आबि गेली। मोर कुकराही के। मार...।' तावत आरो लोक सभ, विद्यार्थी शिक्षक सभ जमा भऽ गेलैक। श्रीमती सिन्हाक बुद्धिये ने ने किछु अयलनि। परन्तु जखन हल्ला-गुल्ला बढ़लैक आ किछु छौंडा सभ साफ-साफ श्रीमती सिन्हाकेँ गरियाबऽ लगलनि, चोर-बेमान कहलकनि आ तुरन्त भागि जाय लेल कहलकनि नहि तँ हुनका खण्डी-खण्डी कादि दयनि तँ ओ बड़ घबड़ा गेलीह आ जान पर आफत सोचिकऽ जीप दिस पड़ाय लगलीह। भागि नहि पबैत छलीह बेचारी तैयो दौड़लीह कोनो तरहेँ गाड़ी धरि लसे-फेने। पाछाँसँ हुनकापर जुत्ता-चट्टी आ ढेपा अटहा लाधल रहलनि। कोनहुना लुढ़ दऽ जीपमे पैसलीह। ड्राइवर परिस्थिति बूझि गेलैक जे ओ जीप जल्दीसँ खोलिकऽ भागि गेलैक। श्रीमती सिन्हाकेँ खैर चोट तँ नहि लगलनि कतो, परन्तु दुर्दशा-दुर्दशा आ बेज्जति-बेज्जति भऽ गेलनि। जान बँचाकऽ पड़यलीह।'

—अहा, ई तँ बड़ अनुचित बात! एना नहि हेबाक चाही। बेचारी एक टा स्त्री होइत बाढ़ि पीड़ितक हेतु एतेक जान उपाहिकऽ मेहनति कऽ रहल अछि लोक तकरा......आखिर स्कूलक शिक्षक लोकनि कतऽ रहथि जे विद्यार्थी सभ श्रीमती सिन्हा संगे ई व्यवहार...... । महेश प्रसादजीक एहि सत्यक सहानुभूति पर ओ दुनू

गोटे एकहि संग विरक्ति आ रहस्यसँ बिहुँसि रहल छल। तखन चन्द्रेश्वर बाजल— 'परन्तु श्रीमती समाज सेविका सिन्हाजी कार्य की कयने रहथिन सेहो सुनियौ।'

—'की?' महेश प्रसाद पुछलथिन।'

—'जे रोटी ओ स्कूल सभसँ जमा कऽ कऽ अनैत छलीह ताहिमे बहुत रास रोटी तँ अपने गरीब अभिभावकेक रहैत छैक, आ तकरा ओ सरकारी जीप पर ऊघि-ऊघि अनैत छलीह तकरा ओ बाँटि ठीक अबैत छलीह। परन्तु तकर खर्चा ओ अपन संस्था जकर महामंत्री छथि तकरा खातासँ देखबैत छलखिन। समितिक कोषसँ जे हरण कयने छथिन तकर रेकर्ड दुरुस्त रखबाक वास्ते। ऑडिटोक नाटक त होइत रहैत छैक ने समय-समयपर।'

—अच्छा, से कयलखिनहेँ?

—नहि तँ की? संयोग छलैक जे ओही स्कूलक एक टा जागरूक युवा शिक्षककेँ ई जानकारी भेटि गेल रहैक। ओ राता-राती एहि सूचनाकेँ प्रमाणित कयलक आ भोरे श्रीमती समाज सेविकाक कपड़ा जमा कऽ लऽ जाय लेल अबैया रहलिये। ओ तैयार छल। आ हुथि देलकनि। रेबाड़लकनि।'

भला सोचय क्यो! ई राहत-कार्य किछु लोकक व्यवसाय नहि तँ आर की?' ओ क्षुब्ध होइत बाजल।

—ई बात सत्येमे सत्य छैक कि व्यक्तिगत ईर्ष्या-द्वेषसँ त नहि?' महेश प्रसाद शंका उठौलखिन।

—व्यक्तिगत ईर्ष्या द्वेष नहि। ठीके छैक। सुनैत छी जे जेँ कि समाज सेविकाक ओहि संस्थाक अध्यक्षा सेहो कोनो बड़ पैघ पदाधिकारीक स्त्री छथिन आ जातीय राजनीतिमे खूब सक्रिय तिनकर वरदहस्त छनि।' मुकुल बजलै।

—स्वयं श्रीमती सिन्हाक घरमे नियमित कयटा नेता लोकनिक आवन-जैन रहैत छनि। तकर लाभ ओ खूब उठबैत छथि। स्थानीय प्रशासनिक सुविधा पयबा लेल आ ककरो आतंकित करबा लेल, राहत काजक लेल, अपन 'पर्स समिति'क लेल अनुदान ऊपैमे। आर आब एहि सीजनमे तँ ओ एही सभ समाज-सेवाक औचित्य के देखबैत टेलिफोन लगबा रहल छथि। स्वाभाविके छैक जे ई काज नेता लोकनिक सहयोगे प्राथमिकताक संग कयल जा रहल छनि।'

—'ई छथि श्रीमती समाज सेविका। आइ काल्हि बाढ़िग्रस्त सभक सेवा कऽ रहल छथि आ पूजी बढ़ा रहल छथि, पाईक पूँजी, सामाजिक प्रतिष्ठा आ राजनीतिक पवित्र पूँजी...।' चन्द्रेश्वर बाजल। महेश प्रसाद आ चुप रहथि हतप्रभ। मुकुल सेहो चुप रहय। आब चन्द्रेश्वर सेहो।

साँझ साढ़े सात बजैत हेतैक। किएक तँ रेडियोसँ प्रादेशिक समाचार भऽ रहल छलैक। आ, ताहिमे मुख्यत: ईहो समाचार कहल गेलैक जे फलां शहरक श्रीमती समाज सेविका सिन्हा एकसरे एतेक विवटल रोटी बँटबाबक, एतेक रास कपड़ा बँटबाबक साहसिक आ आदर्श कार्य कयलनि अछि। किछु निजी संस्थो सभक चर्चा कयल गेलैक जे सरकार आ जनताक मदति कऽ रहल छैक। अपितु ई संस्था सरकारक काज हल्लुक कऽ रहल छैक।

समाचार तीनू गोटे सुनि रहल रहथि। तीनू एक दोसराक मुँह तकैत। महेश प्रसाद अपन गंजीमे आ ओ दुनू अपना-अपना हाथक अखबारसँ मच्छड़ उड़ा रहल रहथ।

तखने चन्द्रेश्वर कहलथीक—'अजुका' इंडियन नेशन देखलिऐक अछि?' महेश प्रसाद मूड़ी डोलौलखिन—नहि।' ओ पृष्ठ उनटा कऽ हुनका सोझाँ कऽ देलकनि। अन्हार रहैक। लालटेन मंगबा कऽ ओ पढ़लनि जे 'राहत कार्यक सफल संचालन आ तमाम समाज सेवी लोकनिक सेवा भावना एतेक पैघ बाढ़ि समस्याक एहि विभीषिकाक समाधान प्रस्तुत कऽ देबामे सफल भेलए।

महेश प्रसाद अखबार समेटैत चंद्रेश्वर के आपस कऽ देलखिन आ चन्द्रेश्वर फेर ओहि अखबारसँ भन-भन करैत मच्छड़ उड़बऽ लागल।

—तखन की करै जयबऽ?' महेश प्रसाद समस्त किन्तु पराजित सन क्रमे पुछलखिन।

—की करबै? चन्द्रेश्वर निसाँस छोड़ैत बाजल।

—पत्रिका निकालबै। मुकुल अकस्मात उत्साहसँ बाजल।

—पत्रिका? ताहिसँ?' महेश प्रसाद पुछलखिन।

—एहन असामाजिक तत्व सभक कच्चा चिट्ठा छापि-छापि कऽ लोकके चेतबैत रहबै। एतबा त कै‌ए सेबै।'

ओ संतुष्ट होइत चुप भऽ गेल। चन्द्रेश्वरो चुप छल। महेश प्रसाद किछु क्षण चुप रहैत फेर कहलखिन—"बेजाय नहि।" □

मुर्दा मुर्दाक भाग्य

हमरा लोकनि जखन अस्पताल पहुँचैत रही, आ रिक्सा अस्पतालक हातामे पैसिते छल कि पहिल शव-यात्रा, ओही द्वार बाटे बाहर आबि रहल छलैक। शान्त। उज्जर कफन ओढ़ाओल, दटका हरियर बाँसक चचरी पर निश्चिन्त झाँपल मरल मनुक्ख। स्त्रीओ भऽ सकैत छलैक, पुरुषो। पाछाँ-पाछाँ ओहि मृतकक परिवारक लोक सभ शोकाकुल। मुदा संयत ओकरे डेग धरैत जकाँ—पाछाँ।

रिक्सा पर बीमार पवित्री—हमर बच्ची—कें एहि दृश्यसँ डर भेल हेतैक। हम दुनू गोटे एकके बेर सोचलियैक आ कोनो तेहन बात सोचऽ लगलहुँ जे ओकर डेरायल मोनकें आन दिस कऽ दियैक। यद्यपि मनमे धुक-धुक लागल रहय जे अस्पताले छैक, लगले कोनो आने मुर्दा नहि भेटय आ ई दुखिताहि छौंड़ी आर डेराय लागय।

ओहुनो ओ बेशी डेरायलि रहय। हमरा लोकनि अपने डेरायल रही। जे किछु लक्षण ई नवका प्राणघाती रोग मस्तिष्क-ज्वरक सुनल-बूझल छल, सैह बुझाय लागल तँ हड़बड़ाइत ओकरा रिक्सापर लादि कऽ अस्पताल लऽ गेल रहियैक। हम एहि दुआरे घबड़ा गेल रही जे हमरा विश्वास भऽ गेल रहय जे वैह ज्वर छियैक। यद्यपि सभहक ई विश्वास छलैक जे ई रोग एखन बिहारमे नहिये जकाँ अयलैक अछि। पटनामे एक-आध टा घटना भेलैक अछि। ताहि पर स्वास्थ्य मंत्री आ स्वास्थ्य विभाग समेत राजधानीक पैघ-पैघ डाक्टर लोकनि विचार-विमर्शमे लागल छथि। मुदा भागलपुरमे ई-बीमारी एखन नहि पहुँचलैक अछि, से लोकक विश्वास रहैक। तैयो जेँकि मनमे धुक-धुक बनले रहैत छैक लोककें तें ताही चिन्ता-आशंका दुआरे हमरालोकनि घबड़ाइत ओकरा अस्पताल लऽ गेलियैक। खूब माथ-दर्द रहैक काल्हिए सँ, बोखार आ देह टटायब। संगहि एकटा रद्द सेहो भऽ गेल रहैक ओकरा।

अस्पतालक हातामे प्रवेश करिते कालक ई दृश्य भेल। मन आर कोनादन करऽ लागल। ई एना किएक सभसँ पहिने सोझाँमे मुरदा भेटल?

खैर! ओकरा इमर्जेन्सी आ आउटडोरमे देखाओल गेलैक। डाक्टर जांच कयलखिन—बिछाओनपर सुताकऽ पेट, जीह, आँखि आ पूछताछ।

पूर्जा बढ़ा, नहि घबड़यबाक आश्वासन दैत खून जाँचक सुझाव दैत दोसर रोगीमे व्यस्त भऽ गेलाह।

खून जाँच‌ऽ लेल देलाक बाद रिक्शा पर पत्नीकेँ लऽ कऽ पत्नी बवाह कौतैत डेरा चल जाथि, ताही कार्यक्रमक सङ हमरालोकनि अस्पतालसँ बाहर होयबाक उप-क्रम कयलहुँ तँ एकटा दोसर शव यात्रा उत्तरवरिया वार्डसँ—पछिला सँ किछु दोसर प्रकारक शवयात्रा।

लाल कफनमे सजाओल फूल आदिसँ विशिष्ट बनल। पाछाँ-पाछाँ धूप जरैत। लोको सभ साधारणत: सम्पन्न जकाँ। सभक आकृतिपर कुल मिलाकऽ एकटा सन्तुष्ट भाव। लोकक कारिख कतहु नहि। शवयात्रा सम्पन्नताक सभ लक्षणसँ भरल-पूरल। बाजा-गाजा सेहो। यद्यपि ई उपक्रम अस्पतालसँ बाहर मुख्य सड़कपर रहैक। सभ बाजा-गाजावला अनमन नहिना ठाढ़ रहैक जेना दौड़बला मैदानमे प्रतियोगी सभ फटकवा छुटबाक प्रतीक्षा मे साकांक्ष रहैत अछि, दौड़िकऽ पहिने पहुँचबा लेल।

पूरा अर्थी खूब भव्यतासँ सजाओल रहैक आ ऊपरसँ बाँसक मंडप जकाँ बना-ओल रहैक जाहिपर रंग-बिरंगक फूल सभ गाँथि कऽ लगाओल रहैक। खूब नहीवला ओछाओन आ मखमली तकियापर ओहि शवक यात्रा भऽ रहल छलैक। यद्यपि एखन कोनो धूम धड़ाका रहैक नहि, मुदा देखलासँ एकदम बुझाइक जे सभटा धूम-धड़ाका जेना मुरदा मुँह दबने चुप छैक आ जे घड़ी मे बाजब शुरू कयलकैए।

यात्रामे सभ स्वरक, वर्गक लोक। मौन जुलूस जकाँ रहैक। भरिसक सभसँ पाछाँ जे दू तीन टा फिएट-एम्बेसडर सभ ससरल अबैत रहैक सेहो सब डाक्टर सभक नहि, एही भव्य शवयात्राक अंग रहैक।

ओहि शवकेँ सड़कमे मिलिते एकाएक घड़ीघण्ट टनटनाय लगलैक आ बैंड बाजा सेहो आसमान धरि आवाज उठबऽ लगलैक।

कन्हापर गमछाक झोरा जकाँ लटकौने एकटा मुंशीजी-प्रकारक लोक अपन हाथ दऽ कऽ ओहि झोरी सँ एक मुट्ठी तूर, लावा आ पाइ निकालि कऽ सड़कपर छीटि देलकै आ जेना छीटल गहूमपर पड़बा सभ लुधकैए, तहिना नंग-धड़ंग गरीब गुरबाक बच्चा सभ सड़क पर खसैत-पड़ैत ओहि पर झपटल आ पाइ लुटलक। अपना तुरक कोनो छौंड़ा सङे झगड़ा कयलक, फेर शवयात्रा संगे आगाँ बढ़ि गेल एहि उमेदमे जे अगिला बेर मुन्शीजी पाइ लुटौतैक तँ ओकरे हाथ लगतैक पाइ।

शवयात्रा बढ़ि रहल अछि। घड़ीघंट बाजि रहल अछि। बैंड बाजा आसमर्द कऽ रहल अछि, आ अनाथ छौंड़ा-छौंड़ीक टोली सेहो बढ़ि रहल अछि अर्थीक संगे। सभक एक-एक मुद्रा आशासँ जगमग-सिझाइत।

आकि फेर मुन्शीजी झोरीमे हाथ देलकैक आ सभ जेना साँस रोकि कऽ तैयार भऽ गेल। सभक डेगो बढ़ल जाइक आ मालिकक हाथमे रोटीकेँ देखैत कुकूर जकाँ सभक आँखि मुंशीजीक हाथ पर लागल रहैक।

मुंशीजी फेर मुट्ठी लुटौलक आ सभ छौंड़ा सभ एक्के ठाम झपटल। ओकरा ओ धकलैत, ओकरा ओ। केकरो पता नहि छलैक जे आखिर पाइ ककरा हाथ लगलैक।

असलमे पाइ नाम मात्र रहैक। एकबेर मे संभवत: मुंशीजी दू चारि टा नवका दुपइआही लुटबैथ आ भरि मुट्ठी तूर आ लावा...

एहि बेर एक टा छौंड़ा पाइ लुटलक। साहस आ कोशिश मे ततेक जान देलकैक जे खूब जोरसँ खसि पड़ल आ ओकर कप्पार सड़कपर बजरि गेलैक। कारण जखने ओ लुटाओल पाइ लूटऽ कि ओही सङे ओकरा देह पर दू-चारिटा छौंड़ा सेहो कूदि गेलैक। बस, ओकर कपारसँ शोणित बहऽ लगलैक। मुदा ओकर मुनल मुट्ठीमे एक टा दुपइआही आबि गेल रहैक। ओ मुट्ठीमे दुपइआही पाबिकऽ प्रसन्न रहय। कपारसँ टपरैत खूनक ओकरा कोनो फिकिर नहि जेना।

ओकर संगी सभक आँखिमे तथापि ईर्ष्या रहैक जे दुपैआही ओकरे हाथ लागि गेलैक। ओ छौंड़ा ठेहुन परक धूरा झाड़लक आ कप्पारक शोणित पोछलक। फेर दुपैआहीकेँ पैंटक जेबीमे सन्हियाकऽ आँखि गड़ौने मुंशीजीक सङ फेर अनमन रोटीक प्रत्याशामे कुकूर जकाँ बढ़ऽ लागल। उछल—मुड़ी आ नजरि मुंशीक झोड़ा दिस आ डेग सड़क पर।

आँखिसँ ई दृश्य आ कानसँ बाजाक, घड़ीघंटक एवं हल्ला-गुल्ला दूर होइत चल गेल। खाली दिमागमे ओहि कपार फुटलाहा छौंड़ाक चित्र जमल रहल जेकरा ठेहुनमे धूरा लागल छलैक, कने छिलायल छलैक आ कपार फूटि गेल हाथमे लुटलाहा दुपइआही रहैक।

एहि बीच तेसर शवयात्रा देखायल। मनमे एक क्षणक लेल चिन्ता भेल, मोन पाड़ऽ लगलहुँ, कोनो महामारी तँ नहि फैलल छैक शहरमे। ओना, किछु दिन पूर्व तँ रहैक पसरल, मुदा आइ काल्हि तँ नहि? तखन एके दिन एतनी कालमे एतेक एतेक शवयात्रा किऐक? आखिर ओजह की भऽ सकैत छैक एकर?

अस्पतालक ओही द्वार बाटे एकटा खाटे पर मुर्दा राखल चारि कन्हा पर बाहर निकलैत। पूरा झाँपलो नहि। पुरान चद्दरिसँ ओ मुर्दा कहुना माथसँ घुट्ठी धरि झाँपल। दुनू पयर उघारे ओकर।

आहि चारि कन्हा पर ओ रहय, से सभटा करीब करीब नंगा हाफशर्ट आ फाटल गंजी तथा मैल चिक्कट गमछा बला लोकसभ। सभ लोकसँ ठेहिआयल जकाँ। पाछाँ-पाछाँ एकटा ग्रामीण स्त्री, गन्दा पड़िया आ नूआ हिड़ासन केशकेँ झपने, खलिये पयरे, कनैत-विलाप करैत अबैत। एकटा पुरुष ओकरा सान्त्वना दैत। ओ घिकरैत मुर्दाक पाछां-पाछाँ चल अबैत। जेना कय रातिक जागलि हो। ओकरा कनलो ने होइत रहैक। ओ यथासाध्य मुर्दाक सङ्ग चलबाक चेष्टामे लागलि रहल मुदा चारू लोक

किछु बेसिए तेज चलि रहल छल । एहि यात्रामे कुल छौ गोटे । चारिटा कन्हा देनिहार आ एक टा कननिहारि, एकटा सान्त्वना देनिहार बस ।

पुरना जोरबाला खाटपर दूनू पयर उघार मुर्दा । बरारी दिस तेजीसँ बिदा भऽ गेलैक ।

की करीक द्विविधामे एक क्षण ठाढ़ रहिकऽ फेर हम डाकघर दिस गेलहुँ । रिपोर्ट लेल रुकबाक रहय । ताबत दू टा परिचित मित्र भेंटि गेलाह ।

खूनक जाँचक रिपोर्ट एक बजे देत । तखन बजैत छलैक बारह । एक घंटाक समस्या । ताबत डाकघरसँ काजे कऽ आबी । एक टा लिफाफ पोस्टकार्ड कीनिकऽ जखन आबऽ लगलहुँ तँ पौने एक बजैत छलैक ।

अस्पतालक सोझाँ एहि बेर जे शवयात्रा भेटल से दुइयेटा कन्हापर । स्थिति ई छलैक जे कोनो ना दुइये टा लोक मुर्दा लेने आ ओकर चचरी सेहो जेना-तेना बनाओल गेल रहैक । मुर्दाक पहिरन कय ठाम फाटल-चोटल हरियर चदरिक कफन, कय ठाम देह उघार आ सभसँ बेसी ई जे मृतकक मुँह उघार । नाम मात्रक कपड़ा रहैक । एहि शवयात्रामे मात्र दू टा लोक । हताश, हुकमैत आ विवशतासँ असोथकित जकाँ शव लेने ओ दुनू निराधार एम्हर-ओम्हर देखि रहल रहय । भरिसक एहि अति अभागल शवयात्राक कोनो सर-सम्बन्धी नहि रहैक । क्यो ने कननिहार, ने क्यो प्रबोधऽ बला । दू टा पीड़ित अब्बल-दुब्बर कान्ह आ बेढंग बनल चचरी पर माथ ढ़ुकारने शव ।

हमरा देखबाक साहस नहि भेल बेसी । मन कोनादन विरागसँ भरऽ लागल । तेँ फुर्तियेसँ बढ़लहुँ जे रिपोर्ट ली । देखिकऽ किछु कहथ डाक्टर तँ से बुझैत चली डेरा दिस ।

गेलहुँ तँ पता लागल जे जाँच करनिहारि डाक्टरनी साहेब कतहु गेल छथिन । रिपोर्ट दू बजे धरि भेटत । लाचारी घुरऽ पड़ल आ पुनः डाक घर दिस बिदा भेलहुँ ।

अस्पतालक हाता सँ बहरैते सड़क धऽकऽ डाकघर दिस जेँ डेग बढ़ौलहुँ तँ बसे डेग पर घनगर हुआ गाछक तरमे एकटा कफनमे लेपटायल वरख आठे-नवेक बच्चा उत्तरे-दछिने फुटपाथ दिस कऽ राखल आ ओकरा अगल-बगल बहुत रास नवका पाइ सब फेकल देखायल । अबनिहार-गेनिहार ओहि शिशु मुर्दा पर पाइ फेकने रहैक ।

राखल शिशु-मुर्दाक ठीक कातमे एकटा बूढ़—एकमात्र लोक बैसल । ने कनैत, ने बजैत । मात्र बैसल चुपचाप ।

ओ बूढ़ ओहि शिशु मुर्दाक पिता सेहो भऽ सकै छलैक, पैघ भाइ, पित्ती, क्यो ?

मुदा, ओकरा बहुत लगसँ देखबाक साहस नहि भेल । काते-कात गुजरैत काल एकटा बात अवश्य आयल माथमे जे ई बुढ़वा कानि किएक ने रहल अछि ? एकर आर लोक सभ कतऽ छैक ? एहि बच्चा केँ कतबा काल सड़कक कातमे पाड़ने रहतैक । पाइ लऽ कऽ ई मुर्दा की करत ?

काते-कात आगाँ बढ़िकऽ एक क्षण ठाढ़ रहलहुँ । एखनो सड़क पर तुरक छोट-छोट टुकड़ी सभ मामूलियो बसातसँ उधियाकऽ एम्हर सँ ओम्हर कऽ रहल छलैक । फूल सभ पर रिक्शा, टमटम, लोक चलि गेल रहैक से पिचायल, सड़कमे सटल... । कोनो मोटर गुजरै तँ ओकर बसात सँ तुरक टुकड़ी उड़िआइत जाइ ।

बेर-बेर घड़ी देखैत एवं अन्य कएटा दिमागी विचार, तर्क-वितर्क करैत जखन पुनः दू बजबाक क्रम मे अस्पताल दिस चललहुँ तँ स्वभावतः अस्पतालमे पयर देबाक साहस आ धैर्य नहि छल । एतेक कम समयक भीतर एतेक-एतेक रंगक शव-यात्रा देखिकऽ मन खूब उद्विग्न भऽ गेल छल, मुदा रिपोर्ट आवश्यक छलैक तेँ जायबो जरूरी छल । तेँ अपेक्षाकृत आँखिकेँ जमीनमे गाड़ने अस्पतालक अहातामे पैसलहुँ । अजीब-अजीब वातावरण । नहियो चाहैत कानमे ककरो आर्तनाद, ककरो छाती-फाड़ ढकासी पड़ैत रहल । डाक्टर-नर्सक डाँटबाक स्वर । दुर्गन्ध करैत घाव पीजुक भरल लाल-पीयर तूर आ पट्टीक कपड़ासँ आ दवाईक दुर्गन्ध सँ व्याप्त वातावरण मे फेर प्रवेश करैत हृदय खूब कमजोर भऽ रहल छल ।

अस्पतालमे प्रवेश कयल कि एकटा कारी माटि-धूरासँ लेढायल कम वयसक पुरुष अस्पतालक भूमि पर रौदमे चित्त सूतल देखलियैक । एतेक प्रचंड रौद मे एना भऽकऽ कोनो मनुष्यक सूतल रहब स्वभावतः आश्चर्यजनक रहैक । ओतेक नहि सोचैत आगाँ बढ़लौं आ खूनक रिपोर्ट लेबऽ गेलहुँ ।

रिपोर्ट बहुत छानबीनक बाद भेटल तँ से लैत हम निकललहुँ आ अस्पतालक अहातेमे क्वार्टर बला ओहि सम्बन्धी डाक्टरकेँ पुर्जा देखौलियनि तँ विरक्ति आ उपेक्षासँ बिदा करैत कहलनि—'आज नहीं ; डेरा में नहीं । वहीं का काम वहीं । (अर्थात् आउट डोर अस्पतालक कार्य अस्पताले मे) कल सुबह आठ बजे आइयेगा... घर में कैसे चले आते हैं आपलोग ?'

एहन सांघातिक बीमारीक अन्देशा सँ घबरायल मन मस्तिष्क लेने हम काल्हि आठ बजे धरिक लेल अपमानित अनुभव करैत बिदा भेलहुँ । आइ यदि फीस दऽकऽ देखौने रहितियैक तऽ एना नहि ने घुरबितथ । यद्यपि कोनो डाक्टर अस्पताल मे आठ बजे नहि बैसत । कहै लेल हमरा काल्हि देलक आठ बजे अबै लेल किन्तु हम

जनैत छी जे ओ ओहि समय पर कथमपि ने रहत । कए बेरक अनुभव कहैये । रोगी सभ टोहि-टोहि करैत रहत डाक्टर बाबूक कोनो पता नहि ।

हम हारल, चिन्तित हेबे ओकिकें बेगक आगाँ जमीन पर, बाट पर गाड़ने अस्पतालक हातासँ निकलऽ लगलौं तऽ नहियो चाहैत मैदानमे धूरा बला लोक दिस नजरि गेल । हमरा मने जे ओ लोक रौद सँ उठिकऽ आब कतहु छाहरि मे चल गेल हेतै । मुदा आश्चर्य भेल जे सूतल रहय आ ओही मुद्राने निश्चिन्त, ओहिना चित ।

बगल मे एकटा टमटम ठाढ़ रहैक आ पोस्टमार्टम होयबला अस्पतालक कोठलीक देवालक छाहरिमे पाँच-छः टा टमटम रिक्सा बला जकाँ लोक सब थोड़ी धुकैत चिन्तित ठाढ़ रहैक । ध्यान गेल ओ सब गप्प करैत रहैक—मालूम नै, कखनी अयतै डाक्टर बाबू आब कखनी एकरऽ पोस्टमार्टम करतै । भेलऽ । आजुकऽ पूरा दिन एहने चल्ल गेलऽ । की घोड़ा के खियबै आ की घरऽ मे जाइकऽ देबै खाइ लय ?'' बजनिहार चिन्तित आ दुखी छल ।

तखने देखलियैक जे एक-दू टा डाक्टरनुमा लोक आ एकटा पुलिस संगे पुलिस-इन्सपेक्टरनुमा लोक दनदनायल निकललैक तँ ओकरा पाछाँ ओ पाँचो छओ ठाढ़ लोक सेहो अयलैक ।

ओ सभ लोक मैदान दिस आयल । आ ओहि चित्त पड़ल सूतल लोकके घेरिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक ।

हमरा बेसी देखबाक धैर्य नहि छल । जल्दी-सँ-जल्दी अस्पतालक हातासँ निकलऽ लगलहुँ तँ जेना पयरे नहि बढ़य । तथापि अस्पतालक हातासँ बाहर भेलहुँ आ सड़क पर अयलौं ताबत नजरि गेल किछु आगाँ बामा दिस ओहि झमटगर वड़क गाछक नीचाँ जनऽ हाल-हाल धरि एकटा अपंग दाढ़ी-मोछ आ रुद्राक्ष बला जोतखी बैसैत छल । ओकर सुगा लोकक भाग्यक लेख बला कार्ड लोनसँ उठा-उठाकऽ ओकरा स्त्रीक हाथमे धऽ दैत छलैक । ओ लोकक भाग्यक पढ़ित छल । तखन ओ अपंग कनाह जोतखी तरमे पजेबा दऽ कऽ ओठंगा कऽ राखल शीशाक बक्सा मे सँ कोनो-ने-कोनो स्टोन सुझबै छलैक मिराज लोक कें । बक्सासँ निकालिकऽ दैत छलैक आ ओकरसँ दान-दक्षिणा लैत छलैक । ठीक ओहीठाम उज्जर खिदिष्टी कपड़ा सँ झाँपल ओहि बच्चा मुर्दाक बगल मे चुप-चाप उदास बैसल लोक— बच्चा-मुर्दाक अगल-बगल अयनिहार-गेनिहार लोकक फेकलाहा पैसा सबकें समेटि कऽ गनि रहल छल । □

बाप-बेटा

मिथिलाक एक टा गाम । गाममे कोनो स्कूल नहि । ने डाकघर, ने पक्की सड़क । शहर मधुबनी सेहो दूरस्थ । गाम वाला के सभ मौसिम मे बड़ कष्ट । जाड़ गर्मी वा भदवारि मे नें आओर समस्या भ' जाइक । कमलाक बाढ़ि ततेक अबैक जे भरि गौआँ कें पड़ाइत बाट नहि सूझैक । खेतमे लागल फसिल सब दहा जाइक । दरवज्जे-दरवज्जे बाढ़िक पानि हुलकी दैत रहैक । जाइनि सँ ल' क' कोनहुँ टा सौदा सुलुफ बाहर सँ आनब पराभव । लोक कें अन्न अछैत उपास पड़बाक परिस्थित आबि जाइक ।

भरि गामक विद्यार्थी के भरि-भरि डाँड़ पानि हेलैत कोस भरि चलि कऽ मधुबनी स्कूलमे पढ़ऽ जाय पड़ैक । विद्यार्थी सभ एक भोर जे स्कूल जाय से जखन साँझ बेस घऽन भऽ जाइक तखन घुरि कऽ गाम आबय । घर आबि कऽ जे भेटैक से कोनहुना दू कउर खाय आ हाफी पर हाफी छोड़ैत पाठ घोंखिते घोंखिते लालटेन डिबियाक कातहि मे निन्नसँ ओंघड़ा जाय । पोथी पतरा ओहिना पसरले रहि जाइक । धाकनिमे एतबो धैर्य नहि रहैक जे पोथी सब कें सरिया क' राखि ली तखन सूती । इएह खिस्सा गामक सैकड़ें पंचानबे परिवारक रहैक । असोरापर आ आंगनमे पड़िया वा कम्मल ओछाओल ताहिपर असोथकित विद्यार्थी हाफी छोड़ैत वा सूतल ।

रमानाथ सेहो गामक आने विद्यार्थी सब जकाँ मधुबनी जा कऽ वाटसन स्कूलमे पढ़य । ओकरासँ छोट दू भाय बहिन । एक टा बहिन एक टा भाय । से दुनू एखन स्कूल मे नहि पढ़ैक । यद्यपि बहिन जानकी दाइ कयबेर अपन बाप सँग जिद्द ठानय जे हमहूँ पढ़ब गऽ । मुदा ओतेक दूर जा क' बेटीक जातिक पढ़ब संभव नहि रहैक । गाम मे कोनो स्कूल छलैक कहाँ ?

एक दिन रमानाथ पोथी घोंपैत, हाफी पर हाफी छोड़ैत पढ़िआपर ओलड़ि गेल छल आओर डिबियाक कँपैत टेमीक अस्थिर प्रकाशमे पड़िलो जाइत रहय । माय भानसक ओरिआओनमे रहैक । बीच-बीचमे चूल्हिये तरसँ जोर सँ कहैत जे सूति नहि रहिहें बौआ । भानस लगचिया गेलो । जे घड़ी ने उतरलैए । मुदा रमानाथ के ओहि दिन बड़ थकनी बुझाइक ओ मायक बात सुनितहुँ सूतऽ जकाँ लागल । ताबतहिमे ओकर बाबू आंगन अबैत पुछलथिन—'आइ बूझि पड़ैत अछि जे रमानाथ बेसी थाकल अछि ।साँझे राति ओंघाय लागल । बेसी पढ़ाइ भेलैक अछि आइ की ?''

—'बाबू, जानकी किएक नहि पढ़तैक ?'' जवाब मे रमानाथ इएह पुछलक पिता सँ ।

—'कोना पढ़ओ ! गाममे तँ कोनो स्कूल छैक नहि ।' ओ कहलथिन ।

—तँ ओ हमरा संग मधुबनी नहि जा सकैत अछि ?'

—'कतहु होइ से । लोक की कहत बेटी जाति के मधुबनी पढ़ाबय तऽ ?' ओ लाचारी देखौलथिन ।

—'पढ़बो कोनो अधलाहू बात छैक बाबू ?' ओ कहलकनि ।

—'से तँ नहि छैक हौ । परन्च बेटीक विषयमे ओएह बुझबाक चाही एहि समाज मे ।'

मुदा रमानाथकें अपन पिताक बातसँ संतोष नहि भेलैक । ओ गुम-सुम रहल ।

तावत पिता पैलचीपरसँ लोटामे पानि ढारि, असोरासँ ओलती दिश पयर कऽ धोअऽ लगलाह । तखन रमानाथक पटियापर आबि एक कातमे बैसैत, अंगपोछा सँ हाथ पयर पोछऽ लगलाह ।

—'बाबू औ, आइ हमरा विज्ञान मास्टर साहेब बेंचपर ठाढ़ कऽ देलनि ।' रमानाथ किछु दुखी स्वरें बाजल ।

—'किएक, बेंच पर कियेक ठाढ़ कयलखुन ?' ओ पुछलथिन ।

—'किताब जे नहि कीनल गेलय एखन धरि ।' ओ कनी रोषमे बाजल। फेर पुछलकनि—' किताब कियेक नहि कीनल गेलय ?''

—'हाथपर रुपैया नहि आयल तें । आबऽ दैह हाथ मे तँ किन देबहु ओ भरोस देलथिन ।

—'अहाँक हाथमे रूपैया किएक नहि अछि बाबू ?' पुछलकनि ।

—'आइ ई सब की पुछैत छह तों ?' ओ कहलथिन ।

—'बाबू औ, अहाँ मधुबनीमे घर नै कीनि सकैत छी ?' ओ पुछलकनि ।

—'से किएक ?'

—'मधुबनी कतेक दूर छैक । हमरो एकटा घर नहि बना दऽ सकैत छी अहाँ? मधुबनी राखि कऽ नहि पढ़ा सकैत छी अहाँ हमरा ?'

—'कत' सँ बोआ ! मधुबनी डेरा राखब कहाँसँ संभव होयत हमरा बुते ?'

—'से किएक ! आ रमेशक बाबू बुते कोना होइत छनि ?' ओ पुछलकनि ।

—'ओ सब धनीक छथि ।' कहलथिन ।

—'आ हमरा लोकनि !' रमानाथ पुछलकनि ।

—'गरीब ।' पिता जवाब देलथिन ।

—'अपना सब गरीब किएक छी बाबू ?' ओ प्रश्न कयलकनि ।

—'खेती बारी नहि अछि, उपजा बारी नहि अछि ने, ने बाहरे कोनो कमौआ अछि तँ । कहुना कऽ गुजर चलैए । कहुना कऽ पड़ा रहल छिय' ।''

—'रमेशक बाबू के खेती पथारी छनि ?' ओ पुछलकनि ।

—'अवस्से किने । ओ तँ जमीन्दार छथि, दू सए बीघा खेतक जोतदार, गामक सबसँ धनिक लोक । हुनका धनक कोन कमी ?' कहलथिन पिता ।

—'हुनका एतेक खेत आ धन कतऽ सँ आबि गेलनि ?' ओ जिज्ञासा कयलकनि ।

—'बहुतरास उपजा बारी होइत छनि । शीशोक गाछ बिकाइ छनि । बड़का बड़का बँसबाड़ि छनि, खरहोड़ि छनि. से सब बिकाइत छनि । बड़का बड़का पोखरि छनि तकर मखान माछ हजार हजार टाकामे बिकाइत छनि... ।'

—'मुदा ई सब अहाँ के किएक नहि अछि. बाबू ?' ओ बीचहि मे टोकलकनि।

—'सब के नहि ने रहैत छैक एतेक रास वस्तु ।' कहलथिन ।

—'सब के किएक नहि रहैत छैक सब किछु ?'

—एहि दुआरे जे मात्र किछुए गोटय अपन धनक बले. अपना जमा पूंजीक ताकति सँ अनकर वस्तु जात के दखल कऽ लैत छैक । तँ बहुत लोकक हिस्साक वस्तु मात्र किछुए गोटेक कब्जामे चलि अबैत छैक । आनक धन वित्त पर कब्जा कऽ लेनिहार व्यक्ति धनिक बनि जाइत अछि आओर जकर धन वित्त आनक कब्जामे चलि जाइत छैक से लोक भऽ जाइत अछि गरीब ।' पिता खूब शान्त भऽ कऽ ओकरा बुझओलथिन ।

—'धनिक कें सब लोक बड़ मानैत छैक ने ?' ओ पुछलकनि ।

—'हँ, से किएक ?' ओ पुछलथिन ।

—'रमेशो तँ हमरे वर्गमे पढ़ैत अछि । ओ अपन कएटा पोथी हेराय लेलक अछि । मास्टर साहेब ओकरा बेंच पर ठाढ़ नहि करैत छथिन । कहियो नहि । ओ तँ दुइए डेगपर डेरा रखने अछि । टहलि कऽ मजासँ चलि अबैए स्कूल । हमरा तँ पयर बड़ दुखाइत रहैए । आ तैयो बेंच पर ठाढ़ होअऽ पड़ल ।' ओ दुखी भऽ कऽ बाजल । पिताक आकृति क्रोध आ लाचारीसँ उदास भऽ गेलनि ।

—'ओकरा किछु कहथिन से डर भर नहि छनि ? धनिकहा सँ सब डेराइत अछि ।' पिता किछु घृणाक स्वरमे कहलथिन ।

—'कथी लेल बेराइत छैक लोक-धनिकहा सँ ?' ओ पुछलकनि ।

—'बुझा देबह काल्हि । आइ मन बड़ थाकल बुझाइत अछि । कनी एक रती पड़ऽ दैह ।' कहैत पिता ओही ठाम कातमे पड़ि रहलथिन ।

—'अपना सब कहिया धनिक होयब ?' ओ जिज्ञासमे पुछलकनि ।

—'से किएक ?'

—'स्कूलमे हमरा बड्ड जोर सँ भूख लागि जाइत अछि ।'

—'खा कऽ जे जाइ छऽ तइयो ?' ओ पुछलथिन ।

—'से तँ मधुबनी घुमतोए सब पचि जाइत अछि ।' हमरा पाइ कहाँ रहैत अछि । अहाँ कहाँ दैत छी पाइ ? कए टा विद्यार्थी त अपना संगमे जलखै अनैए । खूब खाइत रहैए । नहि त जेबीमे पाइ रखने रहैए । कीनि कीनि कऽ चिनिया बदाम कि बिस्कुट खाइत रहैत अछि । हमरो बड़ मोन होइत रहैत अछि, बाबू औ ।' बेटाक ई बात सुनि कऽ बड़ कचोट भेलनि हुनका । मुदा ओ किछु बजलाह नहि ।

—'बाबू औ, अपना सब सब दिन एहिना गरीब रहब ?' बेटा अनचोकहि पुछलकनि । हुनकर ध्यान टुटलनि ।

—'नै-नै । सब दिन कतहु एहिना गरीब रही ?' ओ बुझओलथिन ।

—'कहिया धरि रहबै ?' ओ पुछलकनि ।

—'हमरो लोकनि सब दिन गरीब नहि रहब । हमरो सबहुक दिन फिरत ।' ओ बुझओलथिन ।

—'अपना सबहक दिन कहिया फिरत ?' ओ पुछलकनि ।

—'फिरबे करतैक दिन । देखहक ने ।' ओ कनी खौंझाइत कहलथिन ।

—'कोना बुझै छियै त अहाँ ?' ओ पुछलकनि ।

—'हमर बाप कहने छलाह ।' ओ शान्त स्वरें कहलथिन ।

—'की कहने रहथि ?' ओ फेर पुछलकनि ।

—'कहने रहथि जे दुखक दिन बीति जाइत छैक तँ सुखक दिन अबैत छैक ।' ओ कहलथिन ।

—'कहिया ?' रमानाथ पुछलकनि ।

—'जल्दीए ।' कहलथिन ।

—'तैयो कहिया ?' रमानाथके पिताक उतरसँ संतोष नहि भेलैक ।

—'जहिया तों खूब नीक जकाँ पढ़ि-लिखि कऽ पैघ भऽ जयबह । 'खूब बुझनुक ज्ञानी भऽ जयबह तखन ।' ओ बुझओलथिन । संगहि संग गाम भरिक लोक सबमे मेल भऽ जयतैक तखने ।'

—'भरि गौआँमे मेल कोना कऽ भऽ सकतैक बाबू औ, एतेक झगड़ा-झाँटी होइत रहैत छैक से ?' ओ चिन्तित होइत पुछलकनि ।

—'तखन झगड़े ने रहतैक अपनामे । जखन सब लोक पढ़ि-लिखि जयतैक, सभ गोटय बात के बुझऽ लगतैक, सब के ई अखिकल आबि जयतैक जे झगड़ा केला सँ की लाभ, बल्कि एकमे रहलासँ लाभ छैक, तखन सभटा झंझटि खतम भऽ जयतैक ने । झगड़ा-फसाद तँ वस्तुए लऽ कऽ होइत छैक ने हओ ? से जखन सभके जाहि वस्तुक बेगर्ता छैक से भेटऽ लगतैक, ककरो सँ वस्तु जबर्दस्ती छीनय नहि जयतैक, हड़पल नहि जयतैक तँ अपनामे झगड़ा बन किएक हेतैक ?'

—'से कोना हेतैक बाबू ?' ओ पुछलकनि ।

—'जेना भरि टोलमे इनार तँ एकहि टा छैक । सभ ओहीमेसँ पानि भरैए खगता भरि । कहाँ ककरो सं झगड़ा होइत छैक ? एकहि इनार सँ अपना जरूरति भरि सब पानि भरि लैत अछि । दोसराके अधलाह कहाँ लगैत छैक ?' ओ बुझओलखिन ।

—'तखन लोक किएक ने बुझैत छैक बाबू ?'

—'लड़ाइ तँ एहि दुआरे ने होइत छैक जे गाममे दू-चारि गोट के बखारी-बखारी धान राखल रहैत छैक, ओहिमे घुड़ा लगैत रहैत छैक आ दोसर दिस गामक बेसी लोकक धिया पुता उपास पर्यन्त पड़ैत रहैक छैक । एको मौनी धान नहि दैत छैक । तखन उपास पड़ैत लोकके तकलीफ होइत छैक आ तामस उठैत छैक । तामस उठैत छैक आ तखन मोन मे लड़ाइक भावना होइत छैक । ई सब विषय पढ़ला गुनला पर बूझै मे अबैत छैक ।'

—'पढ़ि-लिखि लेलासँ झगड़ा सब शान्त भऽ जाइत छैक ?'

—'अवश्ये किने । शिक्षा भेटैत छैक तँ मनुक्खक आँखि खुजि जाइत छैक मनमे विवेक अबैत छैक तखन ओ सभटा बात आ परिस्थितिके नीक जकाँ बूझऽ लगैत छैक । आ जखन मनुक्ख अपना बीचक बात आ समस्याके ठीकसँ बूझि गेल तँ झंझटि किएक ठाढ़ हेतैक ?' ओ बजलथिन ।

—ठीक सँ लोक के कोना बूझऽ अबैत छैक ?' ओ पुछलकनि ।

—जेना क्यो दुखित पड़ल । डाक्टर बजाओल गेलाह । आला लगाकऽ जाँच कयलथिन । रोगक लक्षण पता लगा कऽ ओहि रोगके छोड़यबाक औषध देलथिन । रोगी औषद खयलक आ रोग छूटि जाइत छैक कि नहि ? आदमी निरोग भऽ जाइत छैक कि नहि ?

—'मुदा अपना गौआँ सब दुखित कहाँ छथि ; सभ नीके ना छथि ?'

—'छथि रोगी । रोग की छैक से बुझलहुक ? गरीबी, अज्ञानता आ अपना स्वार्थमे आन्हर भऽ कऽ आपसमे मतभेद आ झगड़ा ।'

—'त एकर कोन दवाइ ?' ओ पुछलकनि ।

—ज्ञानी बनब । विद्या पढ़ब । समाजक दरिद्रताकेँ, लोक-लोकक विभेद केँ खतम करब । अपनहि सुख आ सुभीतामे लटकल नहि रहि कऽ अपन टोलवैया-गौआँकेँ सुख सुभीताक सेहो ध्यान राखि कऽ जीवन यापन करबाक स्वभाव बनौलासँ । बुझलहुक बातकेँ ? पुछैत पिता आगाँ कहलथिन जे 'विद्या सब किछु बुझा-सुझा दैत छैक मनुष्य केँ । कोनो समस्याक जड़ि कतऽ छैक आ की छैक से बुझा दैं छैक । नीक जकाँ पढ़बऽ लिखबऽ त अपने बुझि जयबहुक । तोहूँ मन लगाकऽ पढ़ैत रहऽ ।'

तावत भानस भऽ गेल रहनि । स्त्री ओसारसँ सोर कयलथिन तँ बाप बेटा दुनू गोटय उठि कऽ खाय गेल गेलाह । जल जइतहि जेना नाकमे कोनो गंध पैसि गेलैक । रमानाथ बुझलकैक । आगामे कन्ट्रोलक चाउरक गंध छोड़ैत भात रहैक । भात पर खेसाड़ीक दालि । कोनहुना भात सानि कऽ दू-तीन कौर घोँटैत, घट-घट पानि पीबैत ओ बैसल रहल । नाकमे गरम भातक भभकैत भाप लगैत रहैक । कुच्छ भात आ खेसाड़ीक पनिसोह दालि । ओ बेमन होइत उठल आ हाथ धोअऽ लागल । माय कतबो कहलथिन खाय, ओ नहि बैसल । ओकर मोन फेर देने रहैक ।

ओ अनठा-पनठा कऽ सुतऽ लागल । कतेक काल धरि चेष्टा कयलक । निन्न नहि होइक ।

कए मास पहिलुका एक टा बात मोन पड़ल छलैक रमानाथकेँ । एक दिन ओ रमेशक आँगन गेल रहय तँ रमेश खाइत रहैक । आगामे मकओआ चाउरक भात आ छौंकलाहा दालि आ तीमन तरकारीक सुगन्धि जेना ओकरा साँसे देहमे पैसि गेल रहैक । भरि आँगनमे सुगन्धि पसरल रहैक । एहि क्षण से ओकरा नाक आ मोनमे पैसि गेल रहैक । ओकरा आश्चर्य भेल रहैक जे एहन सुन्दर खेनाइ के पर्यन्त रमेश छोड़ि कऽ उठि गेल रहैक जे "नै नीक लगैए ।" उठैत काल दुधक भरलो बाटी ओकरा पएर सँ लागि कऽ उनटि गेल रहैक । मुदा एको रती अफसोच नहि ।

रमानाथक मोनमे सेहो वालिक समयक स्मृति पैसि गेल रहैक आ भूख सँ ओकर आँत ऐंठल जा रहल छलैक । निन्नो नहि भऽ रहल छलैक । कएटा आन-आन बात मोनमे गड़ऽ लगलैक अपना आँखि आ हृदयमे तखन ओकरा अपना आ रमेशक फर्क आर देखार बुझाय लगलैक । रमेशक कपड़ा-लत्ता, जुत्ता-पैताबा केहन सैंतल आ सुन्दर रहैत छैक ? जखन कि ओकरा अपना एकहि टा पैंट-हाफ सट पर

काज चलैत छैक । पएरमे जुत्ता पर्यन्त नहि छैक । ओकर छोट बहीन आ माय निसभेर सूतल रहैक । ओकरहु लोकनिकेँ कहाँ छैक नीक कपड़ा-लत्ता । ओकरा मोन पड़लैक जे बाबूकेँ सेहो तँ फटले चिटल वस्त्र आ मायक देह पर तँ ओ कहियो आइ धरि धड़ नुआ देखनहि नहि छैक ।

ई बात ओकरा बड़ खराब लगलैक । एतबे नहि, जखन कि रमानाथ अपना घरसँ फराक रघुनाथ काकाक धिया पुता दऽ सोचलक तँ हुनको लोकनिक ओएह हाल । जखन परशुराम भाइक परिवार दऽ सोचलक, जयानन्द पंडितजीक परिवार दऽ सोचलक, सरुपा आ नेपला दऽ सोचलक सबहक बच्चा चिस्ठी पहिरने । क्यो बकरी चरबैत गुजर करैत, क्यो कोनो बाबूक महिसबारी करैत जीबैत अछि, दु कौर भेटैत छैक खायक । एकहु टा छौंड़ा स्कूलक मुँहों नहि देखने होयत । माय खवासिनीक काज करैत छैक । बाप हरवाही चोनिहारी करैत छैक, जाड़ गर्मी खुजले देहे करैत छैक ।

एकर उनटा, गाम भरिमे मात्र किछुए घर छैक जे केहन सुखसँ रहैत अछि जे इच्छा होइत छैक से खाइत पीबैत मजासँ जीबैए । आर अधलाहा साँसे गौआँ त कहुना कऽ घिसियौर करैत ।

—एना किएक छैक ? एकहि गामक लोक सभमे बेसी गरीबे लोक किएक ? आ दू-चारिए टा लोक धनीक कोना भऽ जाइत छैक एहि प्रश्न पर सोचि-सोचि कऽ ओकर बाल मस्तिष्क घोर-घोर होअऽ लगलैक ।

रमेशक बाबू भरि दिन पान जर्दा दकड़ैत, दलानमे शतरंज पसारने हँसी ठट्ठा करैत रहैत छथिन । आइ धरि कहाँ कोनो काज करैत देखलिअनि । तैयो केहन मजासँ सब वस्तु भेटैत रहैत छनि ? हमर बाबू ओतेक भोरे सँ खटैत-खटैत प्राण देने रहैत छथि तैयो हुनका बड़ बहुत त सुक्खी रोटी । साँझक-साँझ रोटी खाइत-खाइत जानपर आफत । भात जे भेटबो कयल तँ ओएह कट्रोलहा चाउरक भभकैत भात ।

फेर रमानाथकेँ ओएह मोन पड़ि गेलैक रमेश आङनक मकओआ भात दालि, तीमन तरकारी, ह्रेराबल दूध । एक बिस मनमे पसरल भोजनक ई सुगन्धि आ दोसर दिस भूखेँ ऐंठल जा रहल आँत ।

ओ करोट पर करोट बदलैत रहल । राति जेना खीत बाढ़ने होइक । ओ घाने नहा गेल आ देह परहक गुदराही गंजी के खोलि कऽ फेर सूतबाक चेष्टा करऽ लागल । मुदा ओकरा बुझाइत रहलैक जेना लगभिचायल छैक, जे घड़ी ले भोर भेलैए । कखन हेतैक भोर ? □

रखवारी

जहन हवा बहि रहल छलै, ओहू गामने तेहन किछु होएब अवश्यंभावी छलैक आ पुरान अनुभवी लोक, जेहो किछु आब बचल छथि, नाकमे नोसि सुड़कैत वा तरहथी-पर तमाकुल थपकैत बेर-बेर ई चर्च करैत छथि—जे गामक दशा दिन-दिन खराब भेल जा रहल अछि। जानि ने भगवानक की इच्छा छनि ? कहाँ होइ छलै एहन दंगा-फसाद ? मामूली मतभेद किछु भेबो कएलै तँ पंचैतीसँ बाहर धरि नहि जाए पड़ैत छलैक। कोनो दलानमे किंवा बेसीसँ बेसी दुर्गास्थानमे तय तसफीया भ' जाए छलै। दुनू पक्ष शान्त। अपन-अपन काजमे लागल। मामिला-मोकदमा तँ केओ घृणाक द्वारे सोचितो नहि छलै।

आब तँ पंच लोकनिक ओ हालत रहल नहि। उचिते ने। जखन पंचैतीमे मुँह देखिक' मुगवा परसल जैत तँ निसाफ की होएतै ? आ जखन निसाफे नहि भेलै त' कथी पंचैती, की कोट कचहरी ? पहिने पंच लोकनि एना नहि करथि। उचिते। लोको पंचैतीएक शरण जाइ छल। आजुक पंचैतीक हालति सएह। गरीब लोक जेबो कतए करओ ?

एक तरहेँ प्रलाप करैत शिवनन्दन चौधरी अपन नाम्हिटा दलानक आगाँ खुट्टीक स्थानपर साबे डोरीक बेल्ट सन बनाक', खड़ाम पहिरने टहलि रहल छलाह आ बजितो जा रहल छलाह।

जेहन गामक वातावरण आइको होइ छैक, कनिया होसुपर आन पड़बाब' जाइत-आइत धनुषा पूछि देलकै—"कोन बात भेलैए काका ? फेर किछु भेलै कि गाममे ?"

—गे तँ की ! हम बताह भ' गेलोहेँ रे ? आब से की पुछै छेँ, जे किछु भेलैए। रातिए पछबाड़ि टोलमे नै बझि गेल रहै ? तूँ सँझरातिए सूति रहल छलेँ की ? ओ पुछलथिन।

—सत्तो। कालिह खेतसँ माथ बड़ टनकै छल, से बिन खेने-पीने पड़ि रहल छलहुँ। खेबो की करितहुँ, ई मड़ुआ रोटी करिकबी खेबाक इच्छा, इच्छे कोन ? ओ बाजल आ जाए लागल।

—से की कहै छ'। एखन तँ बुझ' जे समस्त गाममे सएमे पँचानबे घरक जिनगी बचा रहल छै, इएह करिकवा अन्न, मड़ुआ।

बड़ घृणा करै छलहक तूँ सब कमला पाँक माटिपर अहगरसँ धान उपजाक' खएबाक जमानामे। हौ ! इएह मड़ुआ नेना-भुटकाक जान बचौने छह। देखिहक अगिला साल फेर सगर बाध मड़ुआसँ पीटल रहतह। उपाये की ? एना कतौ साले साल इश्वरक कोप देखलहक ? कखनो खूब पानि। कखनो धरतीपर एत'सँ ओत' धरि दड़ारि फाटल। एहनामे इएह मड़ुआ कि अल्हुआ। हुपसि-हुपसिक' खाउ, ने तँ नेना भुटकाक संगे मरि जाउ।' शिवनन्दन बजलाह।

—नै। आब काका तेसरो एकटा बात छै।' ओ बाजल।

—से की हौ ?

—रघुनाथक पूरा परिवार जर्हाँ गाम छोड़िक' कमाइक लेल पंजाब चलि चाउ।' ओ बाजल।

—से ! धनुकटोलीक मेहो कतेको परिवार ने चलि गेलै सिलीगुड़ी, जलपाइ-गुड़ी, आसाम ?' काका जोड़लनि।

—मुदा जे कहियौ काका, मड़ुआ रोटी खाइयोक' अपन मड़ैया आ एहि माटिकेँ छोड़िके जेबाक मोन नै करै छै। जानि ने कोना लोक गाम छोड़िक' ओतेक दूर चलि जाइए। हम तँ भरि दिनक हेतु कोस भरि मधुबनियो चलि जाइ छी तँ मोन टाँगल रहैए।' ओ बाजल।

—से की करबहक ? केओ कि सखमेँ गाम छोड़िक' जाइ छै ?'

—की करए ? गाममे खेतमे खोनि नै भेटि पबै, लगातार रौदी पड़ए लगै कखनो बाढ़िमे सब दहा जाय। आँखिक सोझाँ नेना भूखसँ मरए लगै तँ मनुक्ख की करए ? मरबासँ नीक तँ ई' जे कतहु चलि जाए। जान तँ बचतै। हौ जान छै तँ जहान छै।' शिवनन्दन काका बजलाह। आब तँ बहुतोके सोच' पड़तै। ओ बड़कीटा निसाँस छोड़लनि।

—हम तँ काका नै जेबै। चाहे किछु होउ। गाम छोड़िक' जेबै ?

—कहिया धरि नै जेबेँ। कोठीक मड़ुआ जहिए सधतौ ताही दिन सोच' पड़तौ। गाममे जीबाक आन कोनो उपाय ? ओहो पुरना रेट पर मजूरी। आब सेहो नहि। तखन ? शिवनन्दन पुछलर्कै।

—कोन उपाय ? ओ चुप रहि गेल। सरकार मजदूरी बढ़ेलकैए। जे राखि सकै छथि से आब रखिते ने छथि जे हमरा लग काज नहि अछि। आब लिअ काज ? उपाये की ?

—मै छौ ! तखन तँ दू-चारि-दस लोकक गाम छी—ई गाम। हुनके रहत। आब एहि उमेरमे जखन हम सोचि रहल छी जे कतहु निकलि चली एहि गामसँ तखन तोँ तँ एखन जुआन छह। माथपर कर्जा आ परिवार छउ। समय अछैत नै चेतब' तँ मै ऐ पार रहब' ने ओइ पार रहब'। शिवनन्दन चेतौनीपर ओकर धड़ आर झुकि गेलै पेट दिसक'।

"अच्छा काका ! कतहु वढ़ैबा अपने नै बिदा भ' जाय खेत दिस। कनिया फेर पड़ले रहि जायत एहिना।" ओ हड़बड़ाइत जाय लागल तँ शिवनन्दन पुछलखिन, "तोहर माथक टनकक एखन की हाल छह ? से तँ कहबे नै केलह।"

—अरे, पेटक ज्वाला सब ठीक क' दै छै काका। एखन लगैए जे ठीक अछि। ओ व्यंग्य आ विवशतासँ मुसकिआइत तीव्रतासँ चलि गेल आगू।

ओम्हरसँ पछवाड़ि टोलक एक मोटे खेत दिस जाइत अभरलै। शिवनन्दन काका चिन्तामग्न खड़ाम खटखटैत टहलैत रहलाह आ कालिह रातिक पछवारि टोलक झगड़ा आ धनुकाक सम्बन्धमे सोचैत रहलाह। एक दिन ओर एही गाम छोड़एबला गप पर धनुका बाजल छल जे किछु लोक लोभक कारणें गाम छोड़िक' जाइत छथि। ई सोचिक' जे ओहिठाम खूब नीक मजूरी भेटत, तँ लोक ओतं नीक जकाँ खाएत पहिरत। ताही लोभमे जाइए सब। मजा लूटै लें।

—सेहो की अधलाह छै ? के अछि जे खूब सुखसँ, शान्तिसँ जीब' नै चाहत, जखन ओकरे सोझां किछु लोक आराम आ सुख-शान्तिसँ जीबैत छथि। हुनकर बहु-बेटा नीक पहिरैत-ओढ़ैत छनि त' ई सब देखिक' सभक इच्छा होइत छैक जे हमहूँ सभ तँ एहिना रहि सकैत छी, अपन-परिवारक संग। आ एहि बातमे जत' सँ कतहु बाट सुझैत छै लोक ओम्हरे चलि पड़ैत अछि, चाहे गाम छोड़िक' शहर वा परदेश। ई तँ एकदम स्वाभाविक बात छै। लोभ नै अछि ई। एकरा रोकल नहि जा सकै छै। रोकल जेबाको नै चाहिऐक। ऐ पर धनुका चुप रहि गेल छल। कनेक कालक बाद बाजल छल—कहै त' छह सोलहो आना सत्ते काका। मुदा तैयो हृदय नहि मानैए गाम छोड़बाक लेल। ओना तों त' बुझिते छह जे जेहो पन्द्रह कट्ठा खेत ठाकुर बाबू बटाइ देने छलाह सेहो ओ ऐ बेर छोड़ा लेलनि तँ ऐ बेर स' ओहि थोड़को सन उपजा-बारीक आधार समाप्त। की करू'''। आ ने जमीन ओ अपने आबाद करथि। सेहो नहि। परती पड़ल रहि गेलनि। मुदा हमरासँ छीनि लेलनि।' ओ दुखी छल।

ई सब एखन धरि चलते धनुका। आब तँ धरि तेजीसँ सोचबा बुझबाक जरूरति आबि गेल छैक। शिवनन्दन बाबू ई सब सोचिते जा रहल छलाह कि ओम्हरसँ नवीन आयल आ बहुत क्रोध आ निरदाम बाजए लागल—ई सभ जे अछि, बड़का जाति द्रोही अछि। ई त' खाली ओकरा सभक संग रहिते नै अछि, ओकरा सभक संग एके थारी-बाटी मे खेनाइ खाइये आ एकसँ एक षड्यंत्र करैत रहैए। ओ त' धनुक-यादव सभसँ मिलल अछि आ ब्राह्मण-मजूरक खेलाफ काज करैए। ओ त' एहन कमीना भ' गेल अछि जे मात्र ओकरा सभक चौकड़ी मे उठैत बैसैत नहि अछि, ओकरे सभक थारी में भोजनो करैए, लोटामे पानियो पिबैए। कहू भला एतेक नैष्ठिक पंडित रहथि

से हुनकर बेटा केहन अजाति भ' गेलनि। ऐ दुआरे नै जे मूर्ख छै, पढ़लकें लिखलकें नै ओ। अँइठ-कुइँठ धरिक विचार नै। ओ भाषण जकाँ झाड़ने जाइ छल।

—नै पढ़लकें-लिखलकें से तोहर बात नीक छह। शिक्षा त' बहुत जरूरी छै जीवन आ नीक समाजक हेतु। हरेक मनुक्खक हेतु। मुदा पंडितक बेटे भेला सँ की हेतै ? ओहो मजदूर अछि गामक मजदूरी क' क' जीवन बितबैए, कोनो पंडिताइ क' क' त' जीबैए नै। आ ओकर सभ संगी सेहो मजदूरी क' क' जीवन बितबैछै। ऐ दुआरे नै मात्र ओकर दुनूक परिस्थिति एक छै, काजमे दुनूक जातियो एक छै। जन-बोनिहारक जाति। ऐ बातके किएक नै बुझै छहक तों सभ ? बुझब जरूरी छह। पण्डितक बेटा भेने ओकरा जीवनमे पढ़बा लिखबाक की अवसर भेटलै ! बापो नै पंडिताइ, पुरहिताइसँ कोनो तरहें गुजर करै छलखिन। सोन नै छह, दवाइये बिना त' मरि गेला एही गाममे। सब जनै छी। तैयो एतेक दिनमे जातिक विचार ? एहि युगमे।

तों सभ एहन गप करै छह—एतेक दकियानूसी। ई देखिक' अजबे लगैए। ओ अपन कचकचाहटि दबैत बजलाह—बल्कि लाज होइए।

—वाह, ऐ नाहे मुर्खे, जच्चा तँ ब्राह्मणक छै। ओ फेर उएह एक सवाल कैलक।

इहो कुतर्क छह तोहर। हम कलकत्तामे 25 साल जीवन बितौने छी। कतेको समाजमे कैक तरहक लोकक बीच घूमल-फिरल छी। ओत आब एहन चर्चो नै होइ छै। ओत' आब लोक सभमे असली चेतना आबि गेल छै, तैं कमसँ कम जाति के ल' क' ओहिठाम कोनो मतान्तर कि झगड़ा-फसाद भरिसके देखबहक। हँ, अपना वर्ग के ल' क' छै।

—माने ?

—इएह कि जेना—कल-कारखानामे जे मजदूर काज करैत अछि, ओकरा सभक हितमे जे बात छै, तकरा लेल सब मजदूर, संगठन बनाक' आ एक भ' क' लड़ैत अछि आ जीबैत अछि। अपन अधिकार ल' क' छोड़ैत अछि। किएक त' एहिमे सम्पूर्ण मजदूर वर्गक आ ओर समाजक शक्ति काज करैत रहैत अछि। ओकरा समक्ष मिल-मालिक आ सरकारके झुकए पड़ैत छैक। जखन कि ओहि संगठनक मजदूरमे कोनो एकहि जातिक लोक रहैत छथि ? मुदा ओत' ओहि संगठनमे हुनक अपन अलग कोनो जाति नै होइछ हूँ सभक उद्देश्य एक रहलाहे भेने सभक स्वार्थक जाति होइत अछि। आ ई बात बुझक चाही। किएक तँ गाममे रहैत हमरा आब कतेक बर्ख भ' गेल, हमरा आब ई बात साफ-साफ लगैत अछि जे गरीब सभ जन-बनिहार सभक जिनगी तँ नै आगाँ बढ़लै कि एक त' आगहर राजनीति ओकरा सभकें भटका क' छोड़ि देने छै। कखनो जातिक नामपर लड़बा देल जाइ छै, त' कखनो धर्म कि कखनो भाषा-बोलीक नामपर।

जखन कि ई सभ समस्या बनौटी अछि। समाजक किछु स्वार्थी लोकक मनगढ़न्त समस्या। लोक सभकेँ बुझक चाहिऐ।

—बनौटी माने ?

हौ! भाषा आ धर्म चाहिकेँ मनुक्ख जीवित रहि सकै छै? जीवाक लेल चाहियैक दाना-पानी। तकर पते नै।'

नवीनक चेहरासँ लगै छलै जेना ई तर्क ओकरा मनकेँ स्वीकार नै भ' रहल छलै। ओ कनेक काल रहल फेर डेग झाड़ैत पुब दिशा मे चलि गेल। भरिसक गुलाब झाक घर दिस ?

एखन थोड़बेकाल पहिने ई घटना घटल छल कि तावत पश्चिम दिसक एक पेरिया पर दु-तीन युवक गप करैत जा रहल छलाह, जकरा शिवनन्दन काका सुनि सकथि—ई शंभुआ छी बाभनटोलीक जासूस। दोस्ती रखैए। मुदा जाति-पाति नै मानैक ढंग रखैए। ओना अछि इहो कट्टर जातिवादी आ ओकरा एकर सबक भेटक चाहियै। ओहुना ई संभव कोना छै जे ओ अपन जातिक खेलाफ दोसर जातिक संग दै। जरूर ओकरा उएह सभ आनि बुझि क' चालाकीसँ हमरासभक बीच पठौलक। भरिसक ई सोचिनो जे ऐ जातिक बहुत लोक ओकर दोस्त छै आर ओ ओकरा सभक लेल ठीक-ठीक जासूसी क' सकैत अछि। ओ सभ यद्यपि बहुत साफ नै तथापि कोशिश कएलासँ सुनबा जोग बजैत गेल छलाह।

शिवनन्दन फेर सोचमे पड़ि गेलाह। केहन विचित्र छै एखन असली रंगताल ? शंभु स्वभाव आ परिस्थिति दुनूसँ ओकरा सभक बीच उठैए-बैसैए ओ कोनो जासूस नै। बल्कि ओकर जाति-बिरादरीक लोक ओकरा मूर्ख आ छोटका लोकक संग उठबा-बैसबाक कारणेँ घृणासँ देखैत छथि आ जातिद्रोही मानैत छथि। ओ गरीब सेहो अछि। खेबाक-पहिरबाक साधन धरि नहि। तेँ अपन जातिवला सभमे ओ माथसँ पएर धरि तिरस्कृत अछि। पढ़लक लिखलक नहि तेँ कतहु कोनो नोकरियो नै भेटि सकै छै। ओहुना कतेक गोटे त' पढ़ल-लिखल अछि। तकरे सभके कोन नोकरी भेटि रहल छै आचार-विचार पूजा-पाठक अभ्यास सेहो नै छै जे लोक ओकरा बापक स्थानपर पुरहिताइ लेल स्वीकार क' लेथि। शुरूमे जखन कम उमेर छलैक, एक धैंच लोकक कैक महींसमेस एकटा पोसिया ल' क' पोसैत छल। पीठपर बैसि क' चराबए। घास काटि क' आनय-खुआबय आ दूध दुहिक' बेचय। कनेक मनेक खर्च निकलि जाइ छलै। पंडितजीकेँ सेहो मददि भेटि जाइ छलन्हि। ऐ तरहेँ दुनू साँझ दूधक आमदनीसँ ओ परिवारक थोड़ेक आर्थिक मददि क' दैत छल।

एक बेर जखन महींस गाभिन भेल त' शंभु जान उपछि क' ओकर सेवा कयलक। जत' तत' सँ, दोसर गामक बाध धरिसँ हरियर घास काटि-काटि क' अनैत

छल आ महींसकेँ खुआक पोसैत छल। ए सेवासँ महींस बेस दुधगरि निकललैक। बिएलै पाड़ीए तरे। इहो खुशिएक बात। जखन दस दिनक बाद महींस शुद्ध भेलै आ दुहल जाए लगलै त' एक मझोलिया बालटीन भरि क' दूध! लोकक आँखि फाटि गेलैक। ई छोटका छौंड़ा कमाल के सेवा केलक महींसक। ओहि बेप समस्त गाममे ककरो महींस एतेक दूध नै दै छलै। आ तकर समस्त गाममे कतहु प्रशंसामे कतहु ईर्ष्यामे चर्च भेलै।

महिसिक मालिककेँ सेहो बड़ा मुश्किल गेलै। आ ओकर मोनमे स्वार्थ भरि गेलै। ओ कोनो तरहेँ महींस पोसिया छोड़ा लेबाक योजना करए लगलाह जाहिसँ महींस पोसिया छोड़ाकए अपन दरबज्जेपर आनि लेथि। मालिक अपन पक्षमे जखन चाहै छै, त' तकर अनेक रस्ता होइ छै। नै किछु फुरलै त' इएह आरोप लगाक' कि दूध देबामे ओ गड़बड़ी करैत अछि—बेइमानी करैत अछि, तेँ महिसिक हिसाब क' क' ओ छोड़ि दै महींस। चाहे हमरा अपने दूध कीनं पड़ैए। मेँ मालिक महींस छोड़ा लेलाह। ई बात सुनि क' ओकर बाल मन धकसँ रहि गेलै। ऐ बेर ओ सोचलक जे दूधसँ जे पाई जमा करत ताहिसँ एक आर महींस कीनत। छोट सन महींसक घर बनायत आ ओकर माय के कूटि-पीसिक' जे गुजर कर' पड़ैत छैक, बाबूके बेराम रहलो पर स्नान क' क' जे घरे-घर पूजा-पाठ करए जाय पड़ैत छनि, ताहि सबसँ छुट्टी भेटि जेतनि। मुदा ई त' दोसरे गप सोझाँ आबि गेलै। ओ भेँट करए गेल महींसक मालिकसँ तँ कथा सुन' पड़लै—देखबामे छौंड़ा छेँ आ हमरेसँ चालाकी। दूध बइमानी करै छेँ?' मालिक ओकरा डपटलक।

—जानथि भगवती! मालिक एक चुन्नक बइमानी नै करै छी। जहाँ अपने दुहबा लेल कक अपन पारमे। शंभु नेखनियाँ करै बाजल।

—किछु नै! हमरा आब दूध दुहबाव' पड़त ओहिठाम। ई नै हेतौ, हमरा कैक गोटे कहलक अछि बहुत दूध होइ छौ महींस के। हमरा पारमे सबटा राखि क' बेचै छेँ। महींस आब' हम अपनहि राखब। हिसाब भ' जेतौ तोहर।'

ओ फेर किछु कह' चाहलक त' मालिक डपटि देलखिन आ कहलखिन—पुरहितजीकेँ कहियहुन भेँट करताह साँझमे। काल्हि महींस हम अपन थैर पर ल' आनब। मालिक उठि क' हवेलीक भीतर चलि गेलाह। ओ छौंड़ा लगभग कनिते अपन घर पहुँचल ठीकसँ किछु कहियो ने सकल माए-बापकेँ। मुदा ऐ चोटक घाव ओहि दिनसँ ओ बदल' लागल।

जी जानक मेहनतिसँ पीठपर बैसि-बैसिक' जाड़ बरसातमे पसर चराक' पोसल गेल दुलारू महींस जे बइमानी क' क' ओकरासँ छीनि लेल गेलै आ गाममे किओ एक शब्दो मालिककेँ नै कहलकै जे अहाँ ई अन्याय क' रहल छी, ऐ लेनाक संग आ पचैसी

तकनै बैसाएल जा सकलै । तखने ओ बुझलक जे गाममे आब ओकर अपन कियो नै छै । माय-बाप सेहो बुझौलकै—''जाय रहो, मालिकक वस्तु छलै ओ ल' गेलै । ऐमे तूँ की क' सकैं छेँ ? हमरा भाग्यमे नै छल ।''

—बाह, पाल-पोस त' हम केलौं । गाभिन भेल, बिआयल हमरा ओहिठाम । ओकेक घास खुओलियै, हम । चरेलियै हम । त' हमर कैना नै भेल । हमरा भाग्यमे किएक नै ? अहाँ के मोन नै जे केहन आयल रहए ई महींस । कयाइ हाथे अबैत रहथि त' अहीं कहलियनि जे हमरे बेटाके' द' दियौ, चराएत, पोसत, आयल रहत । तखन बने रहथि ओ महींस, आ जखन मोटा गेलनि, दुधगरि भ' गेलनि त' लोभ भ' गेलनि आ झूठे हमरा चोर आ बइमान बनाक' महींस खोलवा क' ल' गेलाह । भगवती ओकर एकर दंड देथिन ।

एही बीच जखन धनुकटोलीक किछु छौंड़ा सभसँ जे ओकर संगतुरिया छलैक महींस चरबैत ओकरा सभसँ ओकर संपर्क बढ़लैक त' एक साँझ एक गोटेक बात कहलकै—शंभू, हमरा दूटा महींस अछि, एकटा तोँहीं पोस । दुनू हमरासँ नै सम्हरैए शंभू बापसँ गप केलक । ओ मानि गेलखिन ।'

दोसर दिन महींस दरबज्जापर आबि गेलै । आब इहो एकटा भयानक गप भ' गेलै । कतहु होइ ? धानुकक महींस कतौ ब्राह्मण नेना पोसिया लै ? की युग आबि गेलै ? आ धानुकक एहन साहस ? ओ एही बाधे समस्त ब्राह्मण टोल के नीचा देखबए चाहैत अछि आर किछु नहि । आ पुरहित महींस तुरत आपस करथि । एक आन्दोलन सन चलि पड़ल आ शंभू के ऐ महींससँ हाथ धोअ' पड़लै । महींस घुराब' पड़लै ।

—ई विचित्र छै ने बाबू ब्राह्मणक महींस पोसू त' ओ खोलिक' लऽ जायत जे ई बइमान अछि । धानुकक महींस पोसू त' इएह सब गोटे कह' लगलाह जे ब्राह्मण भ' क' धानुकक महींस पोसत ? की खराबी छै ऐ मे ? आ फेर ई सब के होइ छथि एना बजनिहार ? आ अहूँ—किए मानि लै छी ? ओ बापसँ तर्क कैलक । ई सब की हमरा खेनाइ दइए ? एको साँझक रोटी जनै छी हम ऐ बजनाहर सभक ?

—समाजमे रहि क' मान' पड़ै छै बेटा । एखन तोँ नै बुझबीही । पैघ हेमे तँ बुझबीही ।' ओ बेबस शान्तिसँ बुझौलखिन ।

— मुदा ऐ तरहेँ हम पैघ कोना होयब ? हम त' पहिने मरि जायब बाबू ।

—एना किए बजै छेँ ? एखन हमर पुरहिताइ ते अछि । पिता भरोस देलखिन ।

—मुदा अहाँ बुढ़ैल छी । कहिया धरि जीयब ? तकर बाद ?

पुरहितजीके' एकाएक मोन पड़लैन जे अपन पैघ बेटाक सेहो एक मामुली प्रबन्ध जखन ओ नै क' सकलाह आ भूख आ अभावसँ घबड़ाक' एक दिन ओ एतेक पैघ दुनियाँमे कत' चलि गेल तकर पतो नै लागल । डेढ़ बरिस बाद ओकर एक पोस्टकार्ड एलै जे ओ

ड्योढ़ीमे भनसीयाक काज कर' लागल अछि । अगिला माससँ दू टा टाका मासे-मासे ओ हिनका पठौतनि । एखन दरमाहा ठीक-ठीक तय नै भेल अछि । खेनाइ-भरिपेट खाइ छी आ सुतैले एकटा ओढ़ाओन सेहो भेटल अछि । भोर आ साँझमे चाह सेहो पीबैले भेटैए । कपड़ा सेहो अगिला मासमे देताह ।

ई सब कथा शिवनन्दन जनैत छथि आ ओहि शंभूक आजुक शासित सेहो । शंभू ओही असहायता आओर अभावमे जेना-तेना जुआन भेल अछि आ गामक युवा संगठनक एक शक्तिशाली सदस्य अछि । ओ गामक राजनीतिके' संतुलित क' राखि सकैत अछि । ओ संगठन शक्ति रखैत अछि आओर गामक केहनो राजनैतिक गतिविधिमे ओकर सहमति-असहमतिक एक प्रभाव होइछ । तेँ लोक ओकरा जल्दी छोड़ैए नहि । ओ मालिकोन छि जे ओकर नवकी बिआयल महींस छीनि नेने रहथि । ओहो ओकरा प्रसन्न क' क' राख' चाहैत छथि, आ आइकालिह ओकरा प्रत्येक दरबज्जापर चाहक नेत पुछल जाइ छै । एहन नै जे ओ कतहुसँ उग्रवादी युवक भ' गेल अछि । मात्र समय आ जीवनक अनुभव सभ, गामक परिस्थिति सभ ओकरा एतेक अकिल द' देने छै जे ओ आब बातक ढंग बुझ' लागल अछि आ कतोक बात ओकरा दिमागमे साफ भ' गेल छै । ओ गामक राजनीति बुझि गेल अछि आ अपनाके' तकरे अनुरूप गढ़ि नेने अछि ओ ।

रहरहाँ, बात-बेबातके' ल' क' गाममे झगड़ा होइत रहैत छैक । कखनो आरि छाँटि लेलापर, कखनो कुसियार तोड़ि लेला पर कखनो माल-जालसँ जजात चरा लेला पर । ऐ सबके तसफीयामे ओ कुशल साबित भेल अछि । आ एहिना गाममे अष्टयामक व्यवस्था केना होइ, भोज-भातमे, बिनु बिजलीक ऐ गाममे पेट्रोमैक्स कोना जराओल जाय, से सब धरि ओ बहुत तत्परता आ कुशलतासँ करैत अछि आ लोकप्रिय अछि ।

मुखियाजी सेहो ओकरा मिलाइये क' रखैत छथि । एहीमे हुनका अपन वर्तमान आ भविष्यक चुनाव सुरक्षित लगैत छनि । ऐ तरहेँ शंभू गामक शान्ति व्यवस्थामे महत्वपूर्ण युवक अछि । मुदा विवादास्पद एहि मानेमे कि ओ आजुक एहि युगमे सम्पूर्ण देशमे जखन जातिक राजनीति चलि रहल अछि, तखन ओ जाति विरोधी राजनीति किएक क' रहल अछि ? दोसर जाति बलाक पक्षमे किएक रहैत रहैए ? ई आरोप ओकरापर ओकर तथाकथित स्वजातीय सभक छैक । आ दोसर जे लोक छथि, से भने हुनका मन तकर कोनो प्रमाण नहि छनि, तथापि शंभु के जासूस मानैत छथि ।

शंभु भरि गामक विभाजित विश्वासमे टुकुक विरुद्ध अछि । आ ओ एहि विडम्बनाके' बुझैत अछि । मुदा जेहन तनावपूर्ण वातावरण गामक रहैत छै ताहिमे

ओकर कोनो उपयुक्त आ ठोस अवसर भेटै नै छै जे ओ लोकके वास्तविक स्थिति आ अपन मोन बुझा सकए ।

गामक राजनीति, उपरसँ शंभुकेँ मान्यता दैइयो क' भीतरसँ ओकरा बारेमे ई विश्वास आ संदेह दुनू पक्षक मोनमे बनौने रहैत अछि आ एहिमे लोकक स्वार्थ सिद्ध होइत छैक। शंभु एहि बातसँ सेहो अनभिज्ञ नहि अछि। मुदा ओकर अपन बुद्धि ई कहैत छैक जे जातिवादी संघर्ष बिल्कुल थोड़ समयक हेतु क्षणिक अछि, आ ओहिमे दम नहि छैक। जाति दुइएटा होइत छै—'धनिक आ गरीब' ब्राह्मण क्षत्रिय आ वैश्य, शुद्र ई सभटा ढकोसला छै। ओ अशिक्षित, शिक्षित सभ लोकक सोझाँ पड़ोसी गामक एक बड़हीक उदाहरण रखैत अछि जकरा कोनो महान ब्राह्मण सेहो आदरसँ नमस्कार करैत अछि आ दरबज्जा पर बैसाक' गौरव अनुभव करैत छथि। कोना ? जँ जाति किछु छै त' ओतेक धनिक प्रभुत्वशाली रहितो ओ निम्न जातिक अछि, ब्राह्मणक घर ओ कोना बैसि सकैए ?

दोसर दिस अपनहि गामक ओहि ब्राह्मण भिखमंगाके देखबैत अछि जे खाद्य-अखाद्य सब किछु मांग' आ लेबाक लेल लाचार अछि। ब्राह्मण टोलसँ ल' क' मुसहर टोल धरि भीख मँगैत अछि आ कमाल त' ई अछि जे अधिक मात्रा आ अपनत्व ओकरा ओही टोल सभमे भेटैत छैक। जखन कि अपन ब्राह्मण टोलमे बेसी लोक दुत्कारिए दैत छैक।

ओ ब्राह्मण अछि भीखमंगा। ओ की अछि ? ई सब तुच्छ राजनीति थी। जे तीन साल पाँच साल धरि देशपर राज्य करबा ले' उमगैत अछि, आ जखन गद्दी छिनाय लगैत छैक, तखन जनमै छै ई जाति सँघर्षक राजनीति। शिवनन्दन सेहो एहि तथ्यकेँ नीक जकाँ जानि गेल छथि।

ओ बड़बड़ाइ छथि नवीनक सब मोन पाड़ि क' आ फेर टहलऽ लगैत छथि ओही बेचैनीमे। मुदा एकर आशंका हुनका बनल रहैत अछि जे ई बात एतबे नहि अछि। गाम एकाएक किछु अधिक शान्त आ गंभीर लाग' लागल अछि, आ एहन जखन लाग' लागल अछि त' किछु ने किछु भेलैए। से किछु बहुत बेसिए अधलाहु भेलैए। हुनक आशंकामे अनुभवक एक परिपक्व परंपरा छलनि। से भोर होइत-होइत अंदाज लागि गेलनि। किछु लोक बाध दिसासँ भागल-भागल एलाह आ कोनो तरहेँ दम लैत बजलाह—'बड़ अनर्थ भ' गेल। दुःखहरणके मारि देलकै।' अएह सुनलकै, चौंकल—दुःखहरण ? ओहि गरीब ब्राह्मण लोकके मारि देलकै ? के ? कोना ?

हकमैत समदिया बाजल। ब्रह्मस्थान बला खेतमे ओ कोदारि पाड़ैत छलाह तखने उत्तर भर सँ एक सँ गोटेक हसेड़ी एलै। घेरि लेलकै। पहिने लाठीसँ ढेंगा देलकै तखन कोदारिसँ खण्ड-खण्ड क' देलकै।'

—की ?' हुनकर मुँह खूजल रहि गेलनि।

—हूँ। ओ कहलनि।

—मुदा किएक ? के छलै ओ सब ?'

—कहादनि मुखियाजी अपने हँसेरीक आगू-आगू छलाह, आ मारनिहार के हुकुम अएह देलथिन हँसेरीकेँ। बेचारा दुखहरण चिकरैत रहल छटपटाइत रहल जे किए मारै छें हमरा ? हमर कोन अपराध अछि ? की गलती केलौंहेँ ? मुदा जवाबमे केओ कहैत रहल ई बाभन बाँचि ने पाबौ। खण्ड-खण्ड क' वही आ गाड़ि वही एही ठाम। आ इएह भेलै। बेचारा शंभु सेहो मारल गेल।'

—की शंभु ? से कोना ? एक गोटे अनहद चौंकैत पुछलक।

—गेल रहए ओकरा सभकेँ बुझबए। पता लगलै तँ दौड़ल-दौड़ल गेलै। कहलकै किए झगड़ा करै छ' ? दुखहरणकेँ किएक मारए आएल छह ? तहीपर हँसेड़ी बला सब कहलकै—"एकरो मारि दे। जातिभाइ के मदति करए आयल अछि। हँसेरीमेसँ एक गोटे बाजल—हम कहै छलियौ ने जे ई सार सेहो एतेक दिनसँ हमरा सभक पक्ष लेबाल ढंग रचै छल। भीतरसँ अछि पक्का जातिवादी। कट्टर अछि। बाभनक जासूस छल। हम नै कहै छलियौ।'

शंभु जोरसँ मुदा बिना उत्तेजित भेने बुझेलकै—रे भाइ! बात त' बुझक तों सब। विश्वास करह, तों सब, तों सब जकरा मारि रहल छिही, तकरा किए मारि रहल छिही ? ई गरीब की बिगाड़लकौए तोरा सभक। ई बहुत सज्जन आदमी अछि। ई कोनो लटपट नै रहैए बेचारा। अपन खेत कोड़ि रहल अछि।'

—ई हमरा जातिकेँ गारि पढ़लक।' एक युवक लाठी उठबैत जोरसँ बाजल।

—ई से नै क' सकैए। एकरा आइ धरि केओ गारि पढ़ैत ने सुनलक किये। तोरा संदेह भेलौए जे ओ गारि नै पढ़ने हेतौ।' शंभु आत्मविश्वासक संग नेहोरा करैत बुझाब' चाहलक।

—ई पढ़लकै। आ हमरा जातिके गारि पढ़लकै। हमसब एकरा नै छोड़बै।'

ओ नहि मानलक।

से एक दिस दू बेहथियार लोक-दुखहरण आ शंभु दोसर दिस लाठी-फरसा गँड़ास नेने सए लोक। मारि लागि गेलै। असहाय निरपराध दुखहरणक लहास खसि पड़लैक खेतमे।

ऐ घटनासँ पूरा हल्ला मचि गेलै। आ उत्तेजनामे ओ खतेक' जातिवादिताक उत्तेजनाक रूप ल' लेलक कि आब अस्तित्वक हेतु ई फैसले क' लेब उचित हएत जे गाम हुनकर अछि कि हमरा सभक। रहू कि भूजे मरू। सभ दिनक बवझकसँ ई नीक अछि जे तय क' लेल जाय। आ दू जातिक खेमामे पैघ अन्हर जकाँ संगठनात्मक निर्णयक

पड़ल कयल जाय लागल । आपसमे तनातनी एक-एक क्षण बाढ़िक पानि जकाँ बढ़ैत जा रहल छल ।

ई सब किछु बात जड़िमे जनमि रहल छल । आ ओही दिनक आशंकामे, आओरो गंभीर शंभु युवक लोकनिकें, जाहिमे दुनू पक्षक लोक शामिल, छलाह, पछिला राति एक बैसक कैने छल जाहिमे तय कर' चाहै छल जे असलमे जातिपातिक रूपमे जे हम आपसी भेदभाव आ अकारण बदलाक भावनासँ तमसा रहल छी से उचित नै अछि, भाइलोकनि आ एकरा बुझक चाही हमरा सबके । गामक के नै जनैत छै ओइ आदमी के ? कियो शिकाइत केलकै ?

दुखहरण जेहन पुरुष छल गारि नै द' सकैत छल । ओ बहुत तरहें बुझएबाक कोशिश केलक । दोसर जँ एहन भेबो केलै तँ ऐ बातकें बेहा देही मानक चाहियैं— गारि पड़लकै तँ हुनका सबहक सोझाँ माफी माँगय कहल जाइत । जातीय दंगाक रूपमे एकर समाधान हमरासभक हेतु बड़ महग पड़त आओर अधलाह असर हएत । गामपर आफत आबि जायत । अहाँ सब बुझु परिस्थितिक गंभीरता, विकटता आ भयंकरता । अवश्य केओ प्रपंची अवस्वार्थी ई अफवाह उड़ौलक अछि । एकरा पाछू कोनो बड़का गड़बड़ी छै भाइसब । चेति जाइ जो ।'

मुदा जेना कि आशंका छलै, ओकरा मुँहपर तँ नै परोक्षमे मुखियालोकनि अपन जनसाधारणसँ ई मनवा लेलनि जे शंभु आखिर अपन जातिएक पक्ष लेलक । ओ हमरा सभक हमदर्द नै अछि । आ तखन निर्णय करबामे सफल भ' गेलाह । निश्चय भेलै ओकरा मारल जाय । चाहे जे होइ ।

ऐ रातिक्षा गपक अनेक-अनेक सूचना शिवनन्दन काका के छलनि । आ मोने मोन शंभुक खूब प्रशंसो कयने रहथि जे ई बड़ उचित मौका पर ई कोशिश केलक अछि ? मुदा जखन ई घटना घटि गेलै त' हुनका बड़ धक्का लगलनि । जेना विश्वासो नै होनि । ओ ओहि व्यक्तिकें पुछलथिन—मुखियाजी अपने रहथि हँसेड़ी ल' क' ? आ कहलक दू गोटे कहै छथि, अपनहुँ छलाह । एक दू गोटे कहै छै— अपने नै छलाह ।'

बूढ़ शिवनन्दन कका झुझुआ उठलाह 'ई तँ गोल मटोल गप भेल । अहाँ डेराइ किए छी । साफ-साफ कहू ।' ऐ पर ओ व्यक्ति सेहो झुझुआ उठल—डेराएब किए? हम ऐ झमेलामे नै पड़' चाहै छी ।'

शिवनन्दन कका सोचय लगलाह, आखिर एहि घटनाक जड़ि की छै ? तुरत ओ किछु बुझि नहि सकलाह । ई केहन जातिक झगड़ा कोन उद्देश्य ? ताहूपर दुखहरण । ओ बेचारा तँ गौ बूझल जाइत अछि गाममे । ओकरा संग एहन अन्याय ? माथ घुमि गेलैन दिमाग सोचि-सोचिक' फिरीशान भ' गेलैन । तखन एकाएक हुनका मोन

पड़लनि । हँ, लगभग मास दिन पहिने मुखिया दुखहरणके ओ खेत बेचि देब' कहने रहैक । मुखिया चाहै छल जे ओ दुखहरणक खेत कीनिक' अपना प्लौटमे मिला लेत तँ ओकर प्लौट पैघ भ' जेतैक । बोरिंग आदिक व्यवस्थाक करत तथा खूब नीक फसिल लेल करत । मुदा दुखहरण कहने रहैक इएह ओकर आहार छै, धियापुताक जीवन छै । ओ जमीन नै बेचत । मुखिया पहिने तँ नरमीसँ फेर धमकी दैत कहने रहै जमीन बेचि देब', ओकरा लिखि द' । दुखहरण तैयो नै मानलकै । हम अपने परिवारक आहार बेचि देबै त' रहबै कोना ?' ऐ पर मुखियाजी तमसा गेलाह । ओ तकर बाद स्वभावतः दुखहरणक शत्रु बनि गेलाह । आन कोनो बात नहि सुझलनि दुखहरणसँ बदला लेबाक त' इएह जातिकें गारि देबाक बात ओकर अपराध प्रचारित क' क' अपन समाजक जनमत प्राप्त केलनि आ एक निर्दोषक संग एतेक पैघ अन्याय क' देलनि ।

ई समस्त बात शिवनन्दनक माथमे एकाएक घुमि गेलनि आ ओ दुखहरण ओ शंभु के बारेमे सोचिक' व्याकुल भ' गेलाह ।

दुखहरणक लहास खेतमे पड़ल छल आ हँसेड़ीक संग सभ ओहि ठामसँ भागि गेल छल । शिवनन्दन चिन्तित छलाह । आब एगो एकरोसँ भयानक सिलसिला आरम्भ होएत पुलिसक । समस्त गामक तबाही । ओहिमे सभ बुझनाह, से बुझले नै छनि हिनका लोकनिकें । ई पुलिसिया सब ब्राह्मण आ धानुक वा यादव नै बूझत । ई सबकें लूटत एकरा सभकें सभ किछु सुअवसर लगै छै । एहने सिद्ध होइए ई सब ।

तखने हल्ला भेलै जे शंभु मरल नहि । ओकर प्राण बचले छै । ओ बचि सकैत अछि । मुखियाजी आ अन्य किछु लोक पलनुकान ल' लेने छथि । ओना पुलिसकें ऐ घटनाक कोनो खबरि एखन धरि नै छैक ।

शिवनन्दन कका बुढ़ारीयोमे ललकि उठलाह—रे मुरखाहा सब ! जे बाँचि सकै छौ तकरा तँ बँचयबाक उपाय कर । अस्पताल ल' जाही । अपन शंभुक उमेरक संग ऐ गामक उमेर जोड़ल छौ : बुझै जो ।'

तखन किछु गोटे ताकत आ जोशमे खेत दिस पड़यलाह खाट-ताट ल' क' । मुदा एहि घटनाक पश्चात शिवनन्दन कका सेहो अपन जातिमे जातिद्रोही घोषित क' देल गेलाह ।

□

एकटा रहथ सातु बेचनो उर्फ रस्ताक खिस्सा

जेना कि होइत छैक। सभ छोट-पैघ शहरमे। मास-डेढ़ मास पर। कएक बेर छओ मासपर। यदि कोनो थाना-प्रभारीक बदली होइत छैक। नव प्रभारी सत्ता सम्हारैत अछि। जेना कि होइतहि रहैक छैक। तँ छोट कि पैघ शहरक चौबटियाक पूरा क्रम उनट-पनट भऽ जाइत छैक।

सड़क कतबहि सँ टाँगल ताड़क डमकोला आ फाटल-चीटल प्लास्टिक बला छाहरि कयल परक भ्रम घर, तोड़ि-फोड़ि कऽ फेकि-फाकि देल जाइत छैक। आ चौबटिया पर एक कतबहि मे बैसल चमरू बुढ़ा जुत्ता सीबैत-सीबैत एक आधे एँड़ खा कऽ अपन छोट-छोट रेजकी सन-सन रंग-बिरंगक चमड़ाक टुकड़ीवला मैलहा झोरीकेँ हड़बड़ कऽ ठूसि-ठासि कऽ बन्द करैये आ लत्ते-फत्ते अपन सबटा जुत्ता मरमतिक सरंजाम समेटि कऽ पड़ाइए कोनहुँ आन ठाम।''' आ बत्तीक जाकरीकेँ पटिया जकाँ पजेबा गेंटल पौआपर बिछा कऽ कोनो रेडीमेड कपड़ा बला छोट छिन कपड़ाक दोकानके एकहि मोटरीमे बान्हि कल जोड़ि कऽ ठाढ़ होइत दाँत निपोड़ि कऽ गोहरावऽ लगैये सोझाक हाकिमकेँ जे खाँखीक हाफपेंट, चौड़ा बेल्ट आ मोट-मोट जुत्ता-पैनावा पहिरने भरि ठोढ़ तमाकुल ठुसने डंटा भंजैत खूब जोरसँ सिखबैत रहैत छैक—'रौ हरमजदा सब, ई सड़क छिऐ कि सुजागंज बजार? एना जे तोरा सब सड़ककेँ हाट बना कऽ धेने छेँ से सार सब चल, भरि राति सड़बेँ हाजतमे तखन सोझ हेबेँ। चल'''बहीन'''।'

—'हाकिम''''''।'

—'चोउप मादर''''''। किसका ऑडर से दोकान किया है? बताव''''''।'

ई रुआबदार आवाज सभटा अनुनय-विनयकेँ प्रचण्ड बिहाड़ि जकाँ उड़ा-बुड़ा कऽ तहस-नहस कऽ आइत छैक। अर्थात् ओहि चौबट्टीक चमरू मोची, गनी, रेडीमेड दोकानदार, रामप्रसाद, भूजा-भरड़ी बेचनाहरसँ लऽ रिक्शावला सभक देल आ सातुक दोकन खोलि कऽ बैसनिहारि कमली मायकेँ ई अनुभव होइत छैक जे एतऽ आब गुजर नहि। आब कतऽ गुजर? सब अपना-अपनी कऽ चीज वस्तु समेटैक उपक्रममे चिन्तित, उदास आ हेरायल भोतियायल सन एक-दोसराकेँ देखैत किछु-किछु करैत-धाहैत रहैत अछि। सोझामे दू-तीन मोटे खाँकी हाफ-पेंटवला मोछैल तमाकुल थुकरैत हाकिम सभक गारि-फज्झति आ ऊँच स्वरसँ, अनेरे भ्रम होइत रहैत छैक जेना कोनो जर्जर ट्रक पर बालु लदायल होइ आ ओ बीचे बाट पर भंगठि कऽ चीत्कार कऽ रहल हो। हाकिम सब प्रत्येक चेतौनीकेँ मादर''''''बहीन''''''बाजनी दैत उगलैत रहैत अछि।

-- 'तुरन्त भागो। टिरैफिक जाम करता है। बाप के जमदारी मे बस गिया है। जहाँ एक्के ठो एसीडेंट हुआ कि सभ चले जाओगे भीतर सार लोगन।'

साँसे चौबटिया साफ। अनमन ओहिना दृश्य जेना बीच-बीचमे दू-चारि दिनक लेल हार्डिंग पार्कक सोझाँमे पटना जंकशनक रेल प्लेटफार्मक उत्तरवरिया खाली जमीनक भऽ जाइत छैक जाहि ठामसँ खानाबदोशक टोल अपन तम्बूक, सिरकी उखाड़ि कऽ कतहु बढ़ि गेल हो। देखलापर उखड़ल खूट्टी सभक भूर, फूटल बर्तनक टुकड़ी, चेथरा सब, बोड़ीक शेष टुकड़ी, केशक थोका, कोयला आ छाउर, घोड़ाक लीद, दू चारि दाना चाउर-गहूम पर लुधकल कौआ''''''ई दृश्य, कोनो पैघ छोट शहरक चौबटिया' वा सड़क कातक भऽ सकैत अछि। मुदा हमर खिस्सा भागलपुरक अछि। ओना खिस्सा शुरु भऽ गेल अछि पहिले पाँतिक पहिले शब्दसँ। मुदा आब लियऽ असल खिस्सा :

मचलै हड़बिरड़ो। पड़ाहि लागि गेलैक। किछु लत्ते-फत्ते पड़ायल, किछु सामान समेटैत काल धरा गेल। ओकर टुटलाही बेंच आ छिट्टा पथिया, गिलास, चाह चीनीक डिब्बा आ दूधक डेगची सब ट्रकपर लदा गेलैक। फुटपाथ चेकिंग। सभटा ट्रकपर लदा कऽ थानामे जमा हेतैक—कमली मायक सातुक पथिया सेहो आ हिपर हरियर लाल मेरचाई थोंपल छलैक। स्वाभाविक छैक जे ओ चौबटिया करीब-करीब मुर्दघट्टी बनि गेलैक। पाँचे मिनटक भीतर बसल गृहस्थी मुर्दघट्टी। कमली मायकेँ आँचर धेने ओकर चारि-पाँच बर्खक बेटी डेरायल ठाढ़ि! आदंके सकदम।

—'हाकिम साहेब, येहे हमरऽ जिनगी छौं। ई सत्तू। घुराय दय। हमरऽ बाल बुतरू मरी जयतै''''''। गोड़ पड़ै छियौ।' कमली माय अनुनय कयलकैक।

—'चोउप हरामजादी। इहे डंटा कऽर देब। गैरकानूनी काम करती है और मुँहों चलाती है। चलऽ थाना। आजे बुझाईं''''''।'

कमली माय तकर बाद बौक बनिकऽ ठाढ़ि।

तहिना चमरू मोची ठाढ़।

तहिना रामप्रसाद भूजावला ठाढ़।

तहिना रेडीमेड कपड़ावला गनी ठाढ़।

तहिना चाहवला ठाढ़।

तहिना बुखिया सपरिवार, जे सफाई-सफाई कऽ कऽ तुरंते अपन सड़क कतबहिक खोपड़ीक सोझाँ बैसि कऽ हुक्का धैनहि छल कि ई काँड भऽ गेलैक। सभटा उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ बराबरि कऽ देलकैक। तेँ ओहो सपरिवार बतौर कऽल जोड़ि कऽ ठाढ़। जेना राज दरबारमे पेशी होइत रहल हेतैक कहियो।

खाली हाफ पैंट बला डंटाधारी बुढ़बा पैर बला हाकिम सभक सोझाँ ई कहचरी लागल छल। लोक, टमटम, रिक्सा-गाड़ीक आबा जाही ओहिना छलैक। सभ जल्दी सामान ट्रक पर लादल गेल। किछु पड़ायल सभटा छोड़ि-छाड़ि कऽ से हाकिमकेँ बड़ बुधियार लोक बुझयलनि। बिना जमा खर्चक थोड़-बहुत सम्पत्ति छोड़ि कऽ, भागि गेनाइ हाकिम सभक पक्षमे बुधियारी छलैक। जमो भेलैक आ हाकिमक जवाबदेही किछु नहि। ओ तँ सभटा निजी सम्पत्ति भेलनि हाकिमक। बाँटि-चूटि खयताह। एहिना राज चलैत छैक।

खैर ! ई कचहरी कतबा काल तकर विशेष जानकरी नहि, मुदा घंटा भरिक बादे आदमपुरसँ घंटाघरमे मिलनाहर सड़क दू-तरफी मुर्दघट्टी बनि गेल आ घंटाघरक छहरदेवालीक घेरामे क्यो कतहु नहि। सातुक पथियावाली ने कमली माय, ने आन क्यो दोकानदार। निस्वद् सन क्षण। ततबा निस्वद जे पूबे-पछिमे गेल मुख्य सड़कक कातमे किछु दूरस्थो अस्पतालमे जे रोगी किकहारि कादि रहल छलैक सेहो स्पष्ट सुनल जा सकैत छल।

एहि घटनासँ बहुत रास लोकक दैनिक जीविका आ घर छिना गेलैक, मुदा ई सब तेहन कानूनी ढंगसँ भेलैक जे जनता जनार्दन मे सँ ककरो आपत्ति करबाक साहस नहि छलैक। ओना विरोध करबाक साहस तँ गैर कानूनीयो रहितैक तैयो ने करैत क्यो प्राय:। आ एखन तँ सहजहि ई छिक नियमक खिलाफे रहैक विषय। खैर, कतेक भद्र लोक तमाकुल चुना कऽ हाकिम सभकेँ खुऔलक आ सलाइ बारि कऽ बीड़ी धरौलकनि आ नैतिक समर्थन मे कहलनि जे —एहि दोकानदार सभक चलते जनताकेँ बड़ कष्ट छैक। अनेरे बाट छेकने रहैत छैक। "फलाँ दिन फिल्म देखय जाइत एकटा सम्भ्रान्त दम्पतिक रिक्शा धक्का लागि गेलैक" तँ "फलाँ दिन एकटा इसकुलिया बच्चा पिचा गेलैक' आदि समर्थनकारी गवाही बयानसँ हाकिम साहेबकेँ मनोबल बढ़ाओल जाइत रहल। हाकिम मनोबल गारि-फज्झतिक मात्राकेँ ओर जोर करैत रहलाह आ सभटा अपराधीकेँ तेना दुतकारैत रहलाह जेना ओ सभ जीविका लेल दोकान नहि कयने रहय, ककरो हत्या कयने होइक।

फेर कोना की भेलैक घंटाघर चौबटियापर मे बहुत गोटेकेँ नै बूझल, मुदा दोसर दिन ठीक अपना समय पर, सभ तँ नहि, मुदा छिनायल दोकानदार मे सँ दू-तीन टा अपना-अपनी कऽ ओतऽ उपस्थित छल। पुरना चमरू मोची। एक कात बैसल मन्हुआयल, चिन्तामग्न। भूजावला, मिझायल बीड़ीकेँ सोंटने जाइत जेना ओकरा एहि बातक पते नहि होइक। आ तेसर कमली माय।

घंटाघरक चबुतराबला चौकत्ता सीढ़ीपर उत्तर पट्टीमे बैसलि रहय। चुप। बेटीकेँ नीचेंमे एकटा फटलाहा कपड़ा बिछा कऽ सुता देने रहैक। जेना किछु ने सोचैत,

बहुत किछु सोचैत ओ गुम्म बैसलि रहय। एना भऽ चुपचाप बैसलि चिन्तित मुद्रामे ओकर गोर-नार-मुँह ऊँच दाँत रहलो उत्तर स्निग्ध सुभा रहल छलैक। दस कि साढ़े दस, सएह बजैत रहल हेतैक।

घंटाघरक चौबटियापर पटल बाबू रोड दिससँ एतहि आकाशवाणीक गाड़ी ठाढ़ रहैत छैक। बाबू सब आबि-आबि कऽ चढ़ै छैक आ जाइत छैक। कचहरी दिससँ एकटा बड़का बन ठाढ़ रहैत छैक सर्वोर कौलेजक। ओही लोक सबसँ भरैत छैक आ खुजि कऽ निफकामाझीबला रस्ता धऽ लैत छैक। तकर बाद इएह छोट-छिन दोकान आ ताहिपर गरीब गुरबा वर्गक महिकीक भीड़।

आइ किछु नहि। ने चाहक दोकानपर, ने कपड़ा दोकान पर। ओहि बाटे सवारी लऽ जाइत सब रिक्शावला एक नजरि ओम्हर देखैत बढ़ि जाइत। भरिसक दुपहरियाक भोजनक कोनो आन जगह सोचैत जे चलऽ जायब खाय लेल।

कमली मायकेँ एहि स्थितिमे बैसलि-बैसलि बड़ी काल भऽ गेलैक। गर्मीक मास। तुरन्त छटपटी भऽ जाइत छैक। सुतलि बेटी करोट बदललकैक फेर ठोकि ठाकि कऽ ओकरा सुतौलक। आ किछुए बात सोचने होयत कि ओकरा लगमे एक गोटे आबि कऽ ठाढ़ भेलैक—माथक गम्छा खोलि कऽ मुँह कपार पोछैत। लग आयल आ पुछलकै—'की होल्हीं कमली माय ? आइ कि लोककेँ भूख नै लागतै ?' कमली माय चौंकलि आ ओकरा देखलकैक। भरि आँखि नोर। हबोढकार। मुदा चुप।

—सोझाँ मे ठाढ़ पिडएयाम श्यामकंठ युवा। आकृति कड़गर, केश सीटल। एखनहुँ पसेनासँ भीजल कपार। एक रत्ती थकमकायल बिहुँसी आ कन्हापर राखल गमछा। वयस पचीसक धक मे।

—'की बात होलै ?' ओ खूब सिनेह आ चिन्तासँ पुछलकै। स्त्री मूड़ी नुका कऽ जेना अपन कननाइ रोकबाक चेष्टा कयलक। जबाब किछु नहि देलकैक।

—'बात की होलै ?' बताबऽ नी ?' ओ किछु गंभीर भऽ कऽ खिसियाइत जकाँ पुछलकैक। स्त्री चुप रहलैक।

—'बड़ा मोस्किल बात। पुछै छियौं जे होलऽ छौं की ?'

—'दोरियो भर सतुआ छीनी कऽ लय गेलऽ। रच्छसवा ने। एक्केठो गहिँकी केँ तँ खिलैने छलिए।' ओकर स्वर कननमुँह छलैक।

—'बुझलियै। फूट चेकिंग। बड़ा हरमजवा होइ छै।' ओ युवक क्रोधकेँ कोनहुना जाँति कऽ बाजल।

—"सारऽ कोय नवा बदली होइ कऽ अयलऽ होतै आरू की ? लेकिन तों कमली माय एकदमे बेकूफ छऽ। आबे एतना दिन होय गेल्हौं दोकानीपर बैठतें, अभी तक भी तों कयन्हें एतना डरी कऽ रहैऽ छऽ हे ? मुँहऽमे बोली नै छौ ?' ओ युवक कनी क्रोधित जकाँ छलैक।

—'बोली ? तनी टा तँ बोललियै जे हमर बच्चा भूखक्रे मरी जयतऽ''' ''
एहनऽ खराब गारी देलकऽ खच्चड़ ने जे''''''

—'गारी ?' युवक चौंकैत जकाँ पुछलकै।

—'नै, अच्छत-फूल ! अपना तँ माय-बहिन छै नै हाकिमक्के । आरू तोँ'''
''''''।' कमली माय जेना क्रोध आ विवशतासँ अनुरोध करैत बाजलि आ चुप
भऽ गलि ।

—'हम्म की ?' युवक पुछलकै ।

—'आरू दिन तँ बेसीसँ बेसी दु बजै छलौं तोरा खाय ले आबै मे । काल्हु की
होलही ? अयबे न करल्हु । अयलऽ रहतियऽ तँ हम एतना नै तो'''''''''।' ओ कानऽ
लागलि एहि बेर ।

—'बस बैठी कऽ लगली काने । औरत जात ! बड़ा मोश्किल । अरे काननासँ
जीवन चलै छै । लगली काने । औरत जात । रे अतना कानती रहबे ओतने आरू
कनैतो लोगऽ ।'

—'हम्म औरत जात'''''''''

—'डूबी मरऽ । औरत जात । की होलै ! हाथ गोर नै छौ ? आँख-कान नै
छौ । औरत जात । तोरा किनी जनम भर एहने भोगबे कही है छियौ ।' ओ बीचहिमे
कहलकै तमसा कऽ ।

—'की करतियै हम्मऽ ? तोरा नै आना छलो' काल्हु तँ कही दीतिहेऽ ।

—'कही दीतिहेँ । केना भला । काल आठे बजे एक ठो सवारी मिली गेलै
चम्पा नगरऽ के । फेर ऊ घूरलै चारू तरफ, बिषहरी माय अस्थान, जैन मंडिल । कहाँ-
कहाँ ने'''। होय गेलै देरी भूख खूब लागि गेलै । सोचलियै हिन्हे खाय लौ ।' ओ
एकदम चुप रहि कऽ जेना अफसोच करऽ लागल ।

—'आरू हम्मऽ की जानऽ गेलियै जे है सब कांड होतै । चल्लऽ अयछियौ !
ककरो बापके नोकर की ?'

—'हमरे करमऽ के लिखलऽ । आरू की ?'

ओकर एहि बातपर युवक चुप भऽ गेलैक । तावत हवाक एकटा तेज झोंक
उठलै आ रिक्शा गुड़कऽ लगलै । युवक दौड़ि कऽ गेल रिक्शाक ब्रकमे ससारिकऽ
रस्सी कसलक, एक कात कऽ ठाऽ कऽ कऽ आ फेर घुरिकऽ चलि आयल ।

—'तबऽ ?'

—'हम्मऽ की कहबौ ?'

—'बाबऽ सतुआ नै सनैबही की ?'

—'कहाँ सँ ?' सरधुआ हाकिम ने सत्यानास करी देलकऽ । ओकरो दिनकर
दिनानाथैं सत्यानास करबे करतै । एक ठो अबला के जेतना सताबै छै ?'

—'दिनकर दिनानाथ के फुरसत नै छै कमली माय जे हुनि तोरा वास्ते
हाकिम के कुछ करतै । बेकूफी नै जयतौ तँ एहने तंग करतौ ।'

—'बड़ा मोश्किल । नै हम्मऽ औरत जात की करऽ पारियै ?'

—'कानऽ । की करऽ पारियै ?' ओ क्रोधित रहैक । फेर शान्त होइत कमली
केँ देखैत पुछलकैक—'एकरा की होलऽ छै ?'

—'होतै की रात सँ कुच्छु खयने नै छै । जानिये-बूझी कऽ सुताय देने छियै ।
जागली रहतै तँ कुछ खाय ले माँगबे करतै ।'

—'तोरऽ बुड़बा ? बाप ?'

—'जेना मालुमे नै छौं । देहे जरी जाई छऽ । कहिया तँ चलऽ गेलै हमरा
छोड़ी कऽ अपना बेटा सब कन । हमरऽ के छौ यहाँ है दुनियामे ?'' कनेक सोहछि कऽ
बाजलि आ उदास भऽ कऽ चुप भऽ गेलि । तावतहि खूब जोरसँ एक टा ट्रक हॉर्न
देलकैक से कमली उठि गेलैक ।

युवक के बुझल छैक सब किछु। ओ थोड़हि उठल आ विदा भऽ गेल । सभे
बुझने छलैक तँ पुछलकैक की ? किचकिचबै लेल ?

मिनट पाँच के बाद ओ खलीफाबाग वाली सड़क कातक शहीद मुश्ताक सोशाक
छोटका होटल मे सँ थोड़े मुरही-कचड़ी कीनने, दोनामे लेनेँ पहुँचल आ छौंड़ी केँ दैत
कहलकैक - 'ले ।' छौंड़ी ओँघायल रहैक । हृपसि कऽ लैत बिहुँसलि आ खाय लागलि ।

—'तोँ केन्हे ने खाय छऽ ?' ओ कमली माय के पुछलकैक ।

—'हम्मऽ की खयबऽ ? हमरऽ भूख मरी गेलऽ '''

—'धुत ! भूख मरी गेलऽ। खानी । जेना बेटे मरी गेलऽ होय ।' युवक बजलै।
आ तखन जेना ओ बलजोरी फाँकऽ लागल ।

—'छिया, एहनऽ खराब कँहुने बोलै छऽ ?' ओ तमसाइत बजलैक ।

—'तोँ' ? खाइत पुछलकैक ।

—'खयने छियौ । आइ तँ विचित्र होलऽ । भोरे-भोरे लखना ने तेना जिद्द ठानी
देलकऽ जे चार डंडा बिस्कुट आरू चार गिलास परमेसर कने चा पीयै पड़लऽ । बड़ा
बेज्जान छै लखना । मानबे ने करलौं ।' कमली माय खाइत रहलि ।

—'आबऽ की करबै हम्मऽ'—ओ पुछलकै ।

—'से की ? जे करै छलहे, से करबे ।'

—'बैठे देतऽ बैन ठाँ सतू लै के ?'

—'ओकरऽ बाप ।' युवक कहलकैक—'गल्ती करल्हे एक टका सुंघाइ दितिहऽ तखनीये ओकरा सिनी के । खैर आबऽ की ? फेरु सँ शुरु करै लै लागय ।'

—'आरु पूजी ?'

तै पर युवक चुप भ' गेलैक । छौंड़ी खबखामे मस्त छलि । खायल भऽ गेलैक तँ अभ्यस्त भाव सँ उठि कऽ एक कात छुरछुराइत कल पर गेल आ आँजुरे-आँजुर पानि पीलक । फेर दौड़ले घुरि आयलि । युवक गमछासँ हाथ मुँह पोछि देलकै । ओ चिंतित रहल एम्हर ओम्हर तकैत जेना समाधान लगे पासमे खसल कुँजी रहैक जे तकला पर भेटि जयतैक । अनचोखहि उठल आ कहलकैक कमली माय चलऽ । अभी हमरा साथ चलऽ ।

—'माय गे ! कहाँ ? तोरा साथे हम्मे कहाँ जयबी ?' ओ डेरायलि पुछलकैक ।

—'तेना डेरयलहे जेना बाघ छिकों हम्मऽ । हरजा की छै एकरा मे ?' ओ पुछलकैक ।

—'बाघ केन्हें रहबे तों ? आरु हरजा छै नै ? हम्मऽ तोरऽ के ? तोरा साथे जयबहों, लोगें की कहतै ?' ओ डरायलि कम, लजायलि बेसी छलैक ।

—लोगें । बड़ी डर । की कहतै ? आरु केहने कहतै ? हमरऽ रेक्सा पर आखिर जनानी सवारी बैठे छै कि नै ? भाड़ा दै छिहऽ तों ।'

—'जनानी सवारी आरू हमरा मे कोय फरक नै छै की ?' ओ बजलै । युवक गंभीर भऽ गेलै । फरक तँ छै ।' ओकरा बाद एक क्षण दुनू चुप रहल ।

—'कहाँ लै जयतिहो हमरा ?' ओ जेना मोलायम होइत पुछलकै ।

—'आबे तऽ ओकरऽ बात की ? कहीं कामे वास्ते नी, सैर कराबय बला तँ हम्म के तोरऽ ? हम्म की कमली के बाप छिकां ?' ओ दुखी छलैक ।

—'तोरा खराप लागी गेल्हो । गंगा माय किरिया हम्मे से थोड़े कहने छलियै ? तों तें बल्हीं गोस्साय गेल्हे । हमरऽ तकदीरे छै फुटलऽ ।'

—'फेरु वैहे तकदीर । बड़गाही भाय ई तकदीर ठो भी गजब बात छै । करतौ ई कोय भला काम नै, लेकिन आदमी अपनऽ दोकान दौरी काम-धंधा छोड़ी कऽ रटते रहलऽ । तकदीर'''।'

—'आरु की ? तकदीर नै तँ की ? हमरऽ की कसूर ? कमली बाप अस्सी कोस गाम सँ लानी कऽ यहाँ पटकी देलकऽ । पेटमे है अभगलिया के धरी देलकऽ आरु कलंक लगाय कऽ छोड़ी देलकऽ ! एतना बड़ऽ ! एतना बड़ऽ शहर । कोय कहीं अपनऽ नै जान-पहचान नै ! जनानी जात ! हमरऽ की कसूर छेलै ? केहनऽ अच्छा तँ हम्म गाममे मालिके कन चौका-बर्तन करि कऽ गुजारा करै छेली, बड़ा दुलार सँ, बड़ा मनाय कऽ यहाँ लानी कऽ समुद्दरमे छोड़ी देलकऽ । हमरऽ कसूर की ! कोय कहीं नै । अकेली । औरत

जात । इ युलकौ जिम्मेवारी । अकेल्ले रहतियौं तँ कहियो नै बरारी घाट जाय के धँसी जइतियौं गंगामे । हमरऽ की कसूर ?' ओ कननमुँह भऽ गेलैक ।

—'तकदीर नै तँ आरु की ?'

'युवक के संपूर्ण खिस्सा शुरु सँ अंत धरि बूझल छैक । जखन-जखन ई मौगी तकलीफ मे पड़ैत छैक तँ कोनो लाथे खिस्सा दोहरबैत छैक । युवक धैर्य सँ सबटा सुनैत छैक । ओकरा मनक तागति बढ़बै लेल यसो बेर सुनल खिस्सा फेर-फेर सुनैत छैक । बरु भेटलो सवारी छोड़ि कऽ । मुदा जरूरतपर चेतबैत सेहो छैक । एखनो सैह भेलैक ।

—'ऊ सब मानलिहों । लेकिन कमली माय, ई बताबऽ जे अभी तक तों जिन्दा छऽ, बेटी भी कए बरिस के होय गेलहों, ई सब केना होलै ? बताबऽ तऽ ?'

—'धन्न तों, तोरऽ उपकार हम्म'''' ओ कानऽ लगलैक ।

—'छिः छिः । हमरऽ ई कहना नै छेलऽ । हम तँ ई कहलियौं जे आदमी अपना तागदसँ आरु जहाँ, जे लोक सिनी के बीचऽमे जीबै छैक ओकरऽ तागदसँ जीबै छै, बड़ै छै आगू । बूझऽ तँ वैहे तकदीर । लेकिन तों जे दोकानी पर बैठल्हे से के कहलको ? तोरऽ बाप-माय नै दोकान करले छेल्हौं कहियो ?'

—'कहियो नै ?'

—तों बैठली । जरूरत होतै तँ । खराब की छै । लोक के-मजूर रिक्सावाला सिनी के जकरा कोय घर नै ओकरा सबके खिलाना आरु अपनऽ बेटी के परवरिस करना एकरासँ बड़ऽ आरु की बात छै ? ई बात तऽ तों खुद करी रहली छऽ की कमली बाप करी जाय छौं तोरऽ ?'

कमली माय चुप छलैक-किछु उपकारसँ, किछु चिंतासँ ।

—'आबऽ तँ सेहो आसरा खतम ।' ओ हताशलि बाजलि ।

—'केन्हें ? केकरऽ की बापऽ के लगैलऽ छै ई घंटाघरके चौराहा ?'

—'सब उजाड़ी-पुजाड़ी देलकै तँ आबऽ की !'

—'फेरु बनी जयतै सब कुछ । आरु कुछ अच्छे हालत होतै ।' जेना किछु मोन पाड़ैत ओ कहलकै—''याद छौं कमली माय, जगह इहे छेकै, लेकिन तों एकदम शुरुमे घामसे बैठे छली सत्तू लैकें—हे यहाँ, यैन ठां ।'' कमली मायक आँखि ओकर आँगुरक संकेत दिस गेलैक आ चमकि जेना उठलैक—सत्ते ई बात ओ कोना बिसरि गेलि छलि जे एकबेर आरो एहिना भेल रहैक आ तकरा बाद ओ छाहरिमे जगह पाबि गेलि छलि ।

—'ठीके छै । एक दू दिन आरु एहने चलतै । फेरु'''?'

—'तेकरऽ बाद ।'

—इंतिजाम होना चाहियऽ। अबरी कुछ बच्छा झंझट आरू अच्छे इंतजाम होना चाहिय।'

—की करबहो ? आरू तोरा जरूरत की झंझट करै के। तों तऽ दोकान करै नै छऽ रिक्सावला के की चिन्ता ?'

—'की चिन्ता ? हमरऽ रसोई घर उजाड़ी लेतऽ कोय त हम्मे बैठल रहबै ? है सब दोकान, चाहु आरू बिल्कुट दोकान, वैहे सिनीमे रिक्सावला, ठेलावला मजूरऽ के रसोई घर। तें हमरा सिनी के रसोइये नै रहतै तें खयबै कहाँ ? रिक्सा खीचबै भागलपुरऽ मे आरू खाय ले जयब बाराहाट ?' ओकरा स्वरमे क्रोध आ संकल्प जकाँ भरल बुझाइत छलैक। एक क्षण ठहरि कऽ ओ फेर बजलैक—'अभी सबके, हमरा सिनी सब के ई बात मालमे नै छै कमली माय।'

—'की ?'

—'जे हमरा सबके रसोइ घर उजाड़ी देलऽ गेल छै। मालूम होतै तें सब एक जुट होतै। एक जुट होतै त फेरू दोकान खोलै ले दियै ले होतै। नै दियऽ ठीक एहीन ठाँ—कहीं भी दियऽ। देतै केना नै ? आखिर हमरा मजदूर गरीब गुरबा के गुजारा करै के कुछ जगह चाहियऽ की नै ? हम्मऽ की देशऽ के लोग नै ? हमरो सिनी के त जगह चाहियऽ।' ओ तमतमायल छलैक।

—'तबऽ जगह छिनबे केन्हें करै छै हाकिम सब ?'

—'बइमानी करै छै। ई बईमानी ओकरऽ ऐही बास्ते चली जाय छै जे हमरा सिनी मिलि जुलि कऽ नै रहै छियै। अपनामे झगड़ा करी लें छियै।'

—'केना रहतै मिलि जुलि कऽ ? सब तें अपनऽ हिसाब लगावैमे लागलऽ छै। हमरा बेज्जत करै छै हाकिमे तें सब खैनी जुमाय के दै छै ओकरा सिनी के हाथ पर'''।'

—'नै छै अकिल कमली माय। बुझतै आपने। बल्कि बुझना चाहियऽ है बात-विचार जे आइ तोरा मारी देलखौ', काल्ह ओकरो जनानी बेटी के दियऽ सकै छै।'

—'केना। बुझतै सब नै ?'

—'बुझतै। बुझबै लय लागतै, सबके एकट्ठा होयले लागत। एकजुट। एक जुट होलामे फैदा ई जे हमरा सिनी यदि तैयो कहीं कमजोर पड़बै कि दोसरा मोहल्ला आरू इलाका के हमरे एहनऽ लोक सब हमरा साथे आबी कऽ हमरा वास्ते लड़तै। लेकिन कोय भी लड़तौं तें एकऽ के बास्ते नै कमली माय। अपना एहनऽ सबलोक के पहिने आपसमे एक जुट होय ले लागतौ तखनिये है हाकिम भी तोरा पर जुलुम बंद करतौं।

नै तें एहने चलतऽ रहथौं। आइ तोरा पर, काल हमरा पर, परसू लखना पर। सब पर।'

—'लेकिन हाकिमे तें लाठी भाँजी-भाँजि कऽ डराय धमकाय छै, मारी पईछै ओकरा कोय डर नै छै ?'

—'डर नै छै केहने कि ओकरा ई बात मालूम छै जे हमरा सिनीमे आपसी एकता नै छै, हमरा सनी मे पढ़लऽ लिखऽ कानून के बात जानै वाला कोय ने छै। अपनी हमरा सिनी तकदीर के मानिकऽ सब कुछ लाठी-जुत्ता सही नै छियै। ऊ सब जानै छै जे हमरा सब ओकरऽ कुछ नै बिगाड़ऽ सकै छियै, केहने कि मेल जोलसँ नै रहै छियै। वैहे बात।'

—'तों ई सब केना जानै छहो ? के बतावै छौ ?'

—'कोय-कोय पसिंजरे सब। हम तें रेक्सा भी हाँकै छी आरू बुझयलऽ पढ़लऽ लिखलऽ पसिंजर छऽ तें ओकरा सें कुछ-कुछ पुछि कऽ सीखै भी छियै।'

तावते एक टा मैल कुरता-धोती वला सज्जन युवक के मोर कयलकैक—देखलक कि चोट्टहि ठाढ़ भऽ गलैक। प्रणाम कयलकैक आ दौड़ल ओकरे दिस। फेर किछु गप्प भेलै। युवक घुरि कऽ कमली माय लग आयल आ कहलकैक—'दस बीस मिनट मे आबै छियौं। पासे सँ हिनका पहुँचाय करी कऽ। हिनीये हमरऽ गुरुजी, कमली माय।' ओ कल जोड़ि प्रणाम करैत ई जानकारी देलकैक। अनायासे कमलीयो मायक कल जोड़ा गेलैक। ओतऽ सँ ओ सज्जन प्रणाम कयलखिन। युवक झटकारि कऽ गेल। ओकरा ओतहि रहै लेल कहि कऽ हुनका आदरपूर्वक रिक्सा पर बैसौलक आ खूब उत्साह सँ पायडिल चलौलक। स्टेशन रोड पर बढ़ि गेल।

करीब घंटा भरि मे ओ घुरि अयलै। आ खाली अपन गुरुजी दऽ गप्प करैत रहलैक जे ओ कहैत छथिन निडर बन, एकजुट होइ जो। बात बुझहीक, अन्याय नै सहै। देखहीक, दुनिया बदलतौ। गुरुजी के मयो ने—बाल मे बच्चा। सबटा बच्चा ओकरे। भरि नगरक मजूरक परिवार ओकरे। ओ जेना गुरुक चर्चा करैत-करैत विभोर भऽ गेल। कनेक कालक बाद बाजल "गुरुओ सैहे बोलै छै। अपना मे मिलि के अपनऽ माँग लै कै जिला अधिकारी कन जो, नै सुनै छौ त कमिश्नर कन जो। ओह्रो नै सुनै छौ तें एहीनठाँ चौराहा पर परिवार के परिवार बैठी जो। हिलै नै। लाठी तें लाठी, बन्दुक आरू मिशिनगन सें भी डरैं नै। कहैं कि हमऽ केना रहियऽ ? हमरऽ परिवार केना रहतऽ कहाँ ? तों इन्तजाम करऽ, हम्मे काम करै वास्ते तैयार छियौ। हमरा सब तैयार छी। हमरऽ इन्तजाम धराबऽ।'

साँझ मे कोनहुँ-कोनहुँ तरहेँ सबकेँ एकट्ठा कयल गेल आ फेर बैसार भेल । छोट मोट सही, भीड़ भेलैक । खाकी वर्दी डंडा धारी सभ सेहो टहलि कऽ चल गेलाह । सब तय करैत गेल जाहि मे मुरहो घुघनी दोकानदार सँ लऽ कऽ रिक्सा ड्राइवर धरि छल । आ सब एना बेर-बेर अपन दोकान बनायब आ उजारल जयबाक समस्या के पहिल बेर एतेक गभीर भऽ कऽ सोचलक आ तय कयलक जे ई भोन्नाइ बन्द होयबाक चाही । तुरन्त बन्द होयबाक चाही ।

सब पहिल बेर एक रंग सँ एतेक उत्तेजना आ निर्णय लेबाक भावावेश मे एक ठाम जमा छल । भोरे ओ प्रदर्शन बनितैक । जिला अधिकारी, कमिश्नर लोकऽ जइतैक ।

भरिसक बेह किछु बात भेलैक । घंटाघर चौराहाक एहि बेरक ई सफैया अर्थात् फूट चेकिंग, नव रूपेँ सोझाँ अयलैक । एतऽ धरि सम्बा चार अर्को छाहरि कऽ ओ छोटका दोकानदार सब, अपन-अपन दोकान लगौलक । चारा कलक व्यवस्था करैत गेल आर तकरा बाद कएटा जिला पदाधिकारी, थाना प्रभारी, पुलिस अधिकारी सभक बदलीयो भलैक, मुदा ओहून अन्यायपूर्ण फूट चेकिंग नहि भेलैक । आब कोनो झंझट होइत छैक कि सब मधुमाछी जकाँ लुधकि जाइत छैक ।

ओइ दिन कमली माय साहुक दोकानक कात मे सुतलि रहय । गर्मी बड़ तीख रहैक । लोकक आवा जाही कम । खबनिहार सब लगभग जा चुकल छलैक । एक आध टा बीड़ी सोँटि रहल छल । आब धरत रिक्सा आ जायत, ताही क्रम मे बैसल कयो तमाकुल चुनबैत, कयो माथ माथ मे झरकी सँ बचबा वास्ते गमछा के सम्हारि कऽ लपेटैत ।

कमली माय नैं खयने रहय । भूख बड़ी काल सँ लागल छलैक । ई कऽ लोऽ तँ खा लेब, छिपली धो कऽ राखिये दिवैक तँ खा लेब, आदि सोचैत भूखले छलि । समयो तीनक अमलमे भरिसक । एक टा बाबू के छत्ता ओढ़ने जाइत देखि कऽ कमली माय पूछबो कयलकै । ठीक तीन बजे छैक ।

—'कहाँऽ रहलै ई ।' एक रत्ती चिन्ता भऽ गेलै ओकरा । एहि चिन्ता मे किछु क्षण आरो बीति गेलैक । फेरो ओहो समय बीति गेलैक । फर एक के जाइत पुछल-कैक—साढ़े चारि । आब ओकरा खूब चिन्ता भेलैक—'की होतैऽ ? कहीं रिक्सा तँ नै धक्का लागी गेलै ? मोन तँ ठीके छलै । काल्हु त ठीके रहै । कहीं राती त नै बेमार पड़ी गेलै ?'

तावते एक टा छौड़ा जकाँ रिक्सा वाला आबिकऽ कहलकै—'मौसी, जानै छऽ ओकरा तँ रिक्सा साथे थाना मे बन्द करी देनै छै ।'

—'आयँ' ? ओ बरायलि । 'कैन्हैं ?'

'मामूली एकठो मोटर बला के मोटरऽ के चुत्तड़मे एकरऽ रिक्सा के रिम लागि गेलै आरू जरा-सा दाग लागी गेलै । एतने बात पर ।'

—'आबऽ । ओकरा जेल मेँ बंद रहै ले होतै ? के खाय ले देतै ओकरा ?'—कमली माय जेना युवक रिक्सावला वास्ते नहि, अपन बेटी कमली वास्ते छटपटा गेलि हो ।

—'हमरा जरा देखाय देबहे तौं, कहाँ बन्द छै ?' कमली माय विनती कयलकै ।

—'खिलाबऽ नी । चलिहऽ । पाँच बजे मे । एकठो दुठो टाका भी दै ले होतै बहाँ ।'

—'मिलै ले देतै नी ?'

ओ छोटकी तराजू बटखारा सँ सातु तौलि कऽ अलनुनिया रिकबी मे देलकै । ओ सानिकऽ गोली बना-बना गीड़ऽ लागल ।

कमली माय केँ एक-एक छन असह्य छलैक । इवर-इवर पानि देलकै । समेटलक आ बगलवला के थोड़े काल दोकान देखऽ कहि संगे लगलैक ।

बड़ साहस कऽ जखन थाना गेल त बड़ जोगाड़ लगा कऽ ओकरा भेंट करऽ देलकै हाकिम सब । जग गेलै तँ बकारे नै फुटलै । कानऽ लगलै । कमलियो कानऽ लगलै ।

—'कैन्हे कानै छऽ ? ई सभ एहने नाटक मजाक छै । सब ठीक होय जयतै । चिन्ता के बात बिलकुल नै ।' ओ बिहुँसि रहल छलैक ।

—'चिन्ता के बात नै ? हम्मऽ मरी रहलऽ छी आरू···तोरा···।'

—'विचित्र बात कमली माय । आय लोगें कुछ नै कहतौं !' जेना ओ खौंझबैत पुछलकैक ।

—'हमरा सँ यैह कहय वास्ते थाना आबी गेली छऽ ! ओइ दिन भी त हमें याही लेल कहने छेलियौं ।'' ओ कटाक्ष मे बिहुँसि रहल छलैक । कनेक चुप रहि कऽ पुछलकै—''आइ हम्मऽ तोरऽ केऽ ?'' ओकरा व्यंग्य पर खूट खोलैत ओ मोड़ल टाका ओकरा दिस बढ़बैत कहलकैक—'ई राखऽ । तोरऽ बाँकी छलौं ने हमरा पास । दै ले अयली छी ।' ओ मूड़ी निहुँरा कऽ कानब रोकि रहल छलि । आ लज्जित छलि । मूड़ी निहुरौनहि बजलैक—'आबऽ की होतै ?'

—कुच्छु नै ।' ओ निफिकिर हँसलैक । रुपैया के हाथमे लैत ओ बजलैक—'असल दोस्त के काम करने छऽ तौं कमली माय । असल । बस यैहे चाभी सँ ई ताला खुलथौं आ हम्मऽ बाहर आबी जयबऽ ।'

—'सच्चो तऽ।' ओकरा जेना विश्वासे ने भेल होइक ।

—'सच नै तँ झूठ ?'

—'हमरा बड़ी डर लागै छै आरु चिन्ता'''।'

—'कोय काम नै डरै के, ने चिन्ता करै के ।'

—'कमली माय आबऽ हमरा फंदा सँ निकलना आबी गेलऽ छै। आबऽ हम छूटै के रस्ता चीन्ही गेलऽ छियै । चलना आबी गेलऽ छै।' ओ बड़ उत्साह मे छल ।

ओ टुकुर-टुकुर अपना दिस तकैत कमली के गाल छुबि कऽ दुलार करबकैक आ कमली माय के कहलकैक—'कालकऽ खाना तोरे रसोइ मे खयबहो, चिन्ता नै ।

ओ आत्मविश्वास सँ विहुँसि रहल छलैक आ कमली माय विश्वासक अतिरेक मे कानियो रहलि छलि आ आँचर सँ नोरो पोछि रहलि छलि ।

☐

श्याम अंकल एहेन कियेक छथिन्ह ?

ग्रीलक गेट के बाजब आ दुआरि पर आबैत आहुटि के निसारैत मीनाक्षी के पूरा विश्वास भऽ गेलैक जे आगंतुक आओर कियो नहि श्याम अंकल छथि । केबाड़ खोललक, ओकर अनुमान सही निकल लय । आठ-दस दिनका बेस घनगर दाढ़ी बढ़ौने, मैल चिक्कट कुर्त्ता-पैजामा पहिरने, हाथ मे एकटा साधारण अटैची आ चिप्पी पर चिप्पी लागल पुरनका चप्पल के धारण केने श्याम अंकल उपस्थित छलाह् । हुनकर पैरी छुबैत मीनाक्षी के घिन लगलय तथापि ओ एहि क्रिया हेतु अपना के तैयार केलक । परञ्च ताहि सँ पूर्वेहि श्याम अंकल 'खुश रह् बौआ' कहैत घर मे प्रवेशकऽ एक कात अटैची के ओंघरऽबैत सोफा पर धंसि गेलखिन्ह् आ अंगैठी मोड़ करऽ लागलखिन्ह् ।—"मम्मी के नञ देखय छियौ ? पापा कतऽ गेलखुन्हें ?'—घर में नहि ककरो देखि अंकलक प्रश्न पूछब वाजिबे छलैन्ह् ।

—"ऊ सब थोड़बे काल पहिने निकललैय यै । कतेक बाजल अछि ?" श्याम अंकल खूब जोर सँ हँसऽ लागलखिन्ह् तऽ एकाएक अखियास भेलय मीनाक्षी कें—'आ श्याम अंकल के हाथ मे घड़ी कहाँ छैन्ह् ? ओ व्यर्थे ई पूछि अंकल के कष्ट पहुँचेल कैन्ह् ।' ओ उठल, भीतर घर जा कऽ देबाल घड़ी मे समय देखि आएल आ श्याम अंकल सँ बाजल—"यैह घण्टा भरि भेल अछि हुनका दूनू गोटे के गेना । 9 बजे तक घुरि आबय जाय जेताह् ।"—"कोनो बात नैय । तों निके छेने ? घर में सभ किछु ठीक-ठाक अछि ?" मीनाक्षी मूड़ी डोला देलक, 'ठीक अछि' कहैत श्याम अंकल घरक सभ सामान पर अपन दृष्टि दौड़ाबय लगलाह् । अचानक भीत पर टांगल कैलेन्डर मे बानरक फोटो देखि कऽ बाजि उठलाह्— "अच्छा बेटी ! ई फोटो तोहर पापा सँ बहुत मिलय छौ ने ?"—मीनाक्षी के बड़ जोरक हँसी लगलय ठीक यैह बात पापा एक दिन मम्मी सँ कहैत रहथिन्ह्— ऐ फोटोक शकल श्याम सँ बड़ मिलय छै ।'—जाहि पर मम्मी कहलथय—हमरा तऽ अहाँ—दुनू के गप्पक किछु थाह ने लगय यै । हमरा तऽ ऐ फोटो के आधा शक्ल श्याम बाबू सँ आ आधा अहाँ सन लागल । ऐ गप्प पर ओहो खूब जोर सँ हंसऽ लागल छल आ ओकर पापा गंभीर भऽकऽ बड़बड़ाए लागैए रहथिन्ह्- 'पता नैय गदहा कतऽ अछि आइ कालिह् ! एतऽ एनो तऽ दू-तीन महीना भऽ गेलय ।'

ई बात मन पड़ैते ओ बाजलि—"पापा अहाँ के बड़ याद करय छलाह् किछुवे

दिन पहिने तऽ अहाँ के खूब चर्चा भेल छलै-ए । अंकल ऐ बेर अहाँ बहुत दिन पर एलौ कतऽ रही एते दिन ?''

—श्याम अंकल एकटा दीर्घ श्वांस लेलथिन्ह । हुनकर मुखमंडल पर सँ हास्य ओ कोमल भाव विलीन भऽ गेलैन्ह । एतबा धरि ओ अंकल के पामियो तक लेल नहि पुछने रहैन्ह । ओ धरफड़ा गेल । उठलि, चाह् बना अनलक । चाहक चुस्कीक संग श्याम अंकलक मुँह पर हास्य घुरि आएल रहैन्ह—'अरे, तोहर तऽ कमालक हाथ छौ ! एतेक बढ़ियाँ चाह तऽ तोहर मम्मियो नहि बना सकथुन्ह । ओना बूझल छौ बौआ ? तोहर मम्मी के चाह् बनौनाय हमहीं सीखौ ने छी । मुदा तू तऽ हमरो गुरु ।'

मीनाक्षी अपन प्रशंसा सुनि बिहुँसऽ लागलि । ओकर इच्छा होय अंकल सँ किछु-किछु पूछी । परञ्च की पूछी, एहि पर ओझरा जाइत रहै । आंटीक बारे मे पूछि सकय छल मुदा हुनका देखना तऽ युग बीति गेलय । बच्चा सभ कऽ पूछि सकय छल । ओ दुनू तऽ एखन बड़ छोट-छोट हेतय । पोरकै साल तऽ मम्मी दुनू भाय लेल स्वेटर आ मोजा बुनि के अंकल के लऽ जाय लेल देने रहैन्ह तऽ अंकल रकम्ना पसारि देने रहथिन्ह—' हम एखन घर नहि जा रहल छी । बाहर कतऽ-कतऽ उघने फिरू ?'' आ मम्मी कहैन—''कोनो क्विंटल-दू-क्विंटल तऽ अछि नञ जे अहाँ के ठेला करऽ पड़त । एकरा लऽ जेबाक अछिये, चाहे जैना लऽ जाय ।''—ओ ना-नुकुर कइये रहल छलाह कि पापा बीचे मे टपकि पड़लथिन्ह—''की जमाना आबि गेलय यै ! आब गदहो मे विद्रोहक भावना जागि रहल छय । दिन-राति बोझा उठबय बला, एखन कहय यै 'कैना कतऽ-कतऽ उठाएब बोझ ?''

—''अहाँ हिनका आओर पानि चढ़ऽबियौन्ह ।''—मम्मी तमसाइत बाजि उठलि-लऽ तऽ हिनका जाइये पड़तैन्ह, चाहे घोड़ा बनि कऽ लऽ जाथि आ कि गदहा बनि कऽ लऽ जाथि ।''

''आहा-हा ! हम घोड़े ठीक छी । हमरा आशीष जकाँ गदहा तऽ नहिये बनाउ । ई बेचारा गदहा तऽ अहाँक सेवा मे लगले रहैत अछि ।''—एहि पर सभ गोटे हँसऽ लगलाह आ एही बीच अंकलक जिद् सेहो टुटि गेलैन्ह ओ दुनू बौआ भाय लेल स्वेटर लऽ जाय लेल तैयार भऽ गेलाह । मीनाक्षी के मन भेलय ओही दुनू भाय के बारे मे पूछैन्ह मुदा पूछि नहि सकल । अंकले प्रश्न केलखिन्ह—''एखन तों की कऽ रहल छलै बौआ ?''

—''पढ़ैत रही, परसू सँ एग्जाम जे अछि ।''

—जा ! तखन तऽ तोहर बहुत नोकसान भऽ गेलौ । पढ़ गऽ खूब मेहनति सँ पढ़ आ नीक रिजल्ट आन । जो'''जो उठ !'' —मीनाक्षी उठि गेल ।

मीनाक्षी अपन रूम मे पढ़य के खूब यत्न करय छल परञ्च मन पढ़ाइ हेतु

स्थिरे ने होइक । रहि-रहि कऽ ओकर दिमाग मे श्याम अंकल नाचऽ लागथिन । ओ देखि रहल छल जे ड्राइंग रूमक सोफा पर अधलेटल अंकल आँखि मुनि कऽ किछु सोचि रहल छथि । आँखि बन्द छैन्ह, मुदा सुतल नहि छथि । ललाट पर बड़ मेंही कम्पन भऽ रहल छैन्ह । 'ई अंकलो बड़ विचित्र जीव छथि । आइकाल्हि तऽ आरो विचित्र भऽ गेलाह अछि । हिनकासँ लऽ ने स्नेह कएल जा सकय यै आने घृणे । मम्मी-पापा तऽ खैर हिनका लेल आनें छथिन्ह परञ्च पता नञ आंटी हिनका कोना सम्हारैत हेथिन्ह । छोट-छोट बच्चा आ अंकलक विचित्र स्वभाव, तै पर सँ स्कूलक नौकरी ! ई तऽ धनि कही हुनके जे कोना सम्हारि रहल छथि !! —मीनाक्षी सोचि रहल छल ।

आइ मीनाक्षीक दिमाग मे श्याम अंकलक स्वभाव हिलकोर मारि रहल छलय । ओ चाहय छल जे जानी, श्याम अंकलक स्वभाव एहेन किये छैन्ह ? ओ सदिखन एके रंगक उदासी किएऽ ओढ़ने रहैत छथि ? स्वाद लैत उदासी या जिनगी के लुत्ती पजारैत उदासी, खीझायल उदासी या हारल उदासी, मिला-जुलाक बस एके तरहक हँसैत उदासी! प्रसंगवश अपन मम्मी पापाक कृपा सँ कतेक बेर श्याम अंकलक उदासीक दर्शन केने अछि । ओ हु-कर उदासी सँ प्रत्यक्ष जुड़ऽ चाहैत अछि । गंभीर उदासी, बढ़ल दाढ़ी, अस्त व्यस्त वस्त्र आ की-कहाँ दन बड़बड़एब सभ के नीक सँ बूझऽ चाहैत अछि । परञ्च कहियो सफलता नहि भेटलैक । आन भेला सन्ताँ सभ स्थिति मे श्याम अंकल ओकर समीप रहल छथिन्ह । कोरा में लैत कनहा पर बैसबय सँ लऽ कऽ खिस्सा सुनय के गप्प हो वा साइकिल चढ़य के, फुकना कीनय के बात रहो वा चटपटी बर्फ, सभ लय प्रायः सभटा स्थिति मे ओ हुनके खोजने अछि । हँ, एम्हर दू-तीन वर्ष सँ ओकरो बुझा रहल छैक जे श्याम अंकल ओकरा लेल अनचिन्हार सन भेल जा रहल छथि । ओकर मन उबिया गेलैक । उठल, गैस चुल्हिया पजारि, चाह् बनाबऽ लागलि ।

—दोबारा चाह् अनलें, लाऽ हमहूँ यैह चाहैत रही । तोहर पढ़ाइ में तऽ हर्जा भेले हेतौ ? की करबीही, हमरा सँ सभ के सदखिन हर्जे सहऽ पड़लैये, जन्म लैते माय मरि गेल । लगले बाबू जी से हो चलि गेलाह ! तऽ से हर्जा, तीनू सहोदर भाय के पैतृक सम्पत्ति मे हमरा नामे सेहो बखड़ा लगबऽ पड़लैन्ह तऽ सभ के से हर्जा । पढ़ाइ मे एम० एस-सी थर्ड क्लास भेने फोर्थ क्लास के नहि हेबक हर्जा । मोटा-मोटी यैह बूझ जे हमरा जनमिते चारू दिस हर्जे-हर्जा भेल । तें तोहर पढ़ाइ मे हर्जा भेलौ तऽ कोनो बात नै । जो आब पढ़ गऽ । नीक सँ पढ़िहें । परसू सँ ने परीक्षा छौ ?'' हँ मे मूड़ी डोलबैत मीनाक्षी चलि गेल ।

कतबो प्रयास करैए मीनाक्षी जे अपन पढ़ाय मे ध्यान लगाबी परञ्च ओकर मन श्याम अंकल दिसि सँ दोसर दिस घुरबे नै करय । रहि-रहि कऽ बस एक्के टा प्रश्न नाचि

उठै जे श्याम अंकल एहेन किये छथिन्ह ?' घुन-घुन में लागले छल एतबे मे श्याम अंकल ओकरा लग उपस्थित भऽ कहलथिन्ह—"की पढ़य छें बौआ ? हमरा तऽ मने नहि लागैए । एलबम कतऽ छौ ? ला कनी ओकरे उलटा कऽ मन बहटारी ।"

मीनाक्षी हड़बड़ा गेल, ओकरा ठीक सँ ध्यान नहि छै जे एलबम कतऽ राखल छै । ओकरा मम्मी ओरिया कऽ राखने रहय छै । ओ ताकऽ लागल-ताख पर रैक पर, अटैची, पेटी सभठाँ ताकलक, मुद कतौ नञ भेटलय । एतबे मे अंकल पुछलखिन्ह—"बौआ कोनो नवका कैसेट तऽ नञ एलौ ? यदि नञ त कनी वएह कैसेट लगा दे । मन बड़ बेचैन अछि । सुनऽ चाहैत छी ।"

वएह कैसेट माने बेगम अख्तर के पूर्वी, फेर रेशमा के 'हाय रब्बा दिल नहीं लगदा ।' पूरा वातावरण जेना कानऽ लागल हो । ओ दोहरा तेहरा कऽ कैसेट सुनऽ लगलाह । ई हुनकर पुरान स्वभाव । फेर बीचे मे पूछि बैसलाह—"की बौआ एलबम एखन तक नहि भेटलौ ?"

—"खोजि रहल छी अंकल !" कहैत ओ आलमारी खोललक । देखय पैं मम्मी अपन कपड़ा के बीच में नुका कऽ एलबम रखने अछि ओकरा निकालि ओ अंकल के देलक आ बदला मे हुनका सँ भरि-भरि छिट्टा आशीर्वाद 'युग-युग जी', 'हमरो ओरदा लऽ के जी' लेलक । संगाहि हुनकर आदेश जे 'ओ आब पढ़ गऽ । परीक्षा छौ तोहर । खूब मन लगाकऽ पढ़क चाही ।'

श्याम अंकल भाव-विभोर भऽ सोफा पर बैसि तन्मयतापूर्वक एलबम उधारिकऽ फोटो देखऽ लगलाह । ओम्हर मीनाक्षी के मन पढ़ाय पर सँ उबिया गेलैक । ओ अंकल लग आबिकऽ किछु गप्प करऽ चाहलक । ड्राइंग रूम मे अबिते देखैये अंकल सोफा पर चित्त भेल पड़ल अलबम के उघारने छाती पर राखि कऽ सुति गेल छथि । हुनकर दुनू आँखि सँ नोरक टघार बहल छैन्ह जे आब सुखा गेल छनि । स्थिति देखि ओकरा बड़ असमंजस भेल त ओ सोचऽ लागल परञ्च ओकरा कोनो थाह नहि भेटलैक । ओ अंकल के छाती पर सँ एलबम उठा, ओरियाकऽ अलमारी मे राखि देलक । मम्मी-पप्पा के आबऽ मे देरी भऽ रहल छलैक । ओ सुतबाक प्रयास करऽ लागल । मुदा श्याम अंकलक ई अजीब ढंग सँ सूति रहबाक स्थिति आ आँखि सँ बहल नोरक टघार ओकर मनोदशा के झकझोरि देलकैक । ओ बेउस गंभीर भऽ गेल ।

घर मे अबिते जखन दूनू गोटय श्याम के देखलन्हि तऽ दूनू के मुँह सँ एक संग बहरेलैक—"ई कखन एलैथ ?"—मीनाक्षी किछु जवाब दय ताहि सँ पूर्वहि मम्मी

अंकलक कपार छूबिकऽ देखलक जे कहीं बोखार तऽ नैय लागि गेलैन्हें । आखिर एतेक जल्दी सूति रहबाक प्रयोजन की ? दूनू गोटय अंकलक विषय मे सोच-विचार करऽ लगलाह, ऐ घुनधुन मे रहबे करैथ जे भोजन लेल हुनका उठबियैन्ह की नहि, ताबे मे मीनाक्षी बाजि उठलि—"कहय छलाह कतेक दिन सँ सुतलहुं यै नंय, एतऽ नींद आबि रहल अछि-कतेक कठिन स तऽ दू टा स्लाइस खुवेलियैन्ह यै ।"

भरि राति मीनाक्षी के नींद नहि भेलैक । कछमच्छी मे अगबे श्याम अंकलक स्वभाव अकुलाइत रहैक । बड़की टा राति जेना तेना बीतल, भोर भेल । मुदा आहि, रे, बा ! ड्राइंग रूम एना खाली रहय जेना राति मे एतऽ कोय रहले ने होय । ओना ई गप्प ओहि घरक लोकक लेल कोनो नवीन नहि रहैक तथापि मीनाक्षी के आइ बड़ कोनादन लगलै । ओ आलमारी मे एलबम निकालि ओकर बिचला पन्ना मे साटल पोस्टकार्ड साइजक फोटो जेकरा राति मे श्याम अंकल निहारि-निहारिकऽ छाती पर राखि सूति रहल छलखिन्ह से अपन मम्मी के देखबैत हुनका सँ पुछलक—"मम्मी ई के छथिन्ह !"

"ई भोरे-भोरे एलबम देखौनाय तोरा की फुरेलौ ?"

—"तों बता ने मम्मी । ई किनकर फोटो छियै ?"

—"तोहर रमा पीसीक'''कियैऽ ?"...पूछैत मम्मी गंभीर भऽ गेलखिन्ह ।

—'हम कहियो देखलियै नय ! एखन कतऽ रहय यै ?"

—ओ मरि गेलखुन्ह बेटी !" कहैत लगभग कानऽ लगलखिन्ह मम्मी ।

—"कहिया मरि गेल ?"

—"तोहर जन्मो सँ पहिने ।"—एहि बेर तऽ हिचुकी बहार भऽ उठलय मम्मी के । मीनाक्षी एहि पर बिनु ध्यान देने प्रश्न करैत रहलि ।

—"मम्मी तोरा बूझल छौ श्याम अंकल एहेन कियै छथिन्ह ?' —मम्मीक मुँह पर जेना खूब भरिगर ताला लागल हो । ओ हिचुकि-हिचुकि कऽ हबो ढकारे कानऽ लगलखिन्ह । मीनाक्षी एकटा गूढ़ रहस्य मे डूबि श्याम अंकलक उबियाएल स्वभाव के जोड़बाक प्रयास करऽ लागलि । श्याम अंकल की रहल हेताह. ई जोखऽ लागलि ।' आखिर बिनु कहने कतऽ गेल हेताह अंकल ?"—मीनाक्षी प्रश्न केलक तऽ अखबार पढ़ैत पापा चुप्प रहि गेलखिन्ह, मम्मी सेहो शांत । तखने ओकरा अकस्मात् फनफुसकी मे मम्मी के कहैत पापा के रतुका गप्प मन पड़लय । अंडरग्राउन्ड अछि, पता नञ कियै ।'—ओ झटकिकऽ पापा लग आएल आ हुनका सँ पुछलक—"पापा ! अंडरग्राउन्ड माने ?"—पापा चौंक उठलखिन्ह आ अखबार के तेजी सँ पढ़बाक प्रयास

करऽ लगलखिन्ह । ओ मम्मी लग गेलि, मम्मी ओकरा बुझौलखिन्ह—"जे लोकक लेल छिपिकऽ काज करै ये माने नुका कऽ ।"

—"काज चोरा कऽ कियैऽ कएल जाय छै ? जँ खराब काज होय तऽ एकटा…"

—"नै नीको काज कतेक बेर चोरा कऽ करऽ पड़ैय छै जे सरकार कहीं जहल नहि कऽ दिअय ।"

दोसर दिनुका अखबारक मुखपृष्ठ पर श्याम, अवलक एकटा अस्पष्ट फोटो आ गिरफ्तारीक समाचार छपल छल । ओ एकटा गुप्त मीटिंगक संदर्भ मे महेन्द्रू मोहल्लाक एकटा गुप्त इलाका में चारि बजे भोरे पकड़ाएल छलाह ।

समाचार पढ़ि पापा अखबार मम्मी दिस बढ़ा देलखिन्ह । मम्मी अवाक् ! मीनाक्षी सेहो खबरि पढ़लक । ओ बेचैन भऽ उठलि । ओकर माथ मे कतेको प्रश्न खहौलिया काटऽ लगलैक । ओ सोचऽ लागल आइ जरूर अपन इतिहासक प्रोफेसर सँ पूछत—मैडम नीको काज लोक चोराकऽ कियैऽ करै ये । आ सरकार ओकरा…?"
प्रश्नक भार के उठौने मीनाक्षीक डेग कॉलेज दिशि बढ़ि रहल छलैक । ☐

बच्चे सभटा के नहि, हुनका पत्नीकेँ सेहो ई प्रस्ताव तेहन नव आ आकर्षक लगलनि जे ओ लोकनि चौंकि उठलीह ।

—की सत्ते अपना सभ घूमऽ जायब बाबू जी ? दोसर बेटाकेँ जेना विश्वासे नहि भऽ रहल छलैक । ओ पिताकेँ बड़ मनोरथसँ देखि रहल छल जेना ।—'हँ सत्ते, तोरा विश्वास नहि होइत छौक ? ओ बड़ दुलारसँ बेटाकेँ देखैत बजलाह । ओना एहि बीच बेटाक संग आनो बच्चा आ पत्नी सभहक आँखि उत्सुकतामे गनेश शंकर बाबूक मुहेँ पर गड़ल छलैक । गनेश बाबू ई अनुभवो कऽ रहल छलाह । जखन ओ अपन बेटाक प्रश्नक उत्तर दऽ चुकल छलाह तखन हुनका ई बात बड़ अखरलाह लगलनि जे आखिर सभ गोटा केँ हुनकर ई प्रस्ताव एना विचित्र किएक लागि रहल छैक । हिनका सभकेँ विश्वास किएक नहि भऽ रहल छनि । हुनकर मन भीतरसँ क्षण भरि लेल खौंझा गेलनि ।

—'की बात छैक पार्वती' ? ओ पत्नी दिस तकैत पुछलथिन ।

—नहि, बात की रहतैक । मुदा की सत्ते चलबैक' ? पत्नी पुछलथिन ।

—'विचित्र बात अछि ! किएक पुछैत छी ? जखन कहलहुँ तँ हँसी किएक बुझि पड़ैत अछि' ? ओ अपन खौंसाहटि केँ दबैत बजलाह ।

—'कतऽ जयबैक ? पत्नी फेरो बिहुँसैत पुछलथिन । ओ सोचय लगलाह । तावत बच्चा सभक उत्साह चलैत पंखा जकाँ एकाएक स्थिर भऽ गेल । ओ सभ दम साधने ओहि परिणामक आशंकामे माय-बापकेँ देखैत रहय कि बस एतहि आबि कऽ गप्प कटि जाइत छैक आ फेर सभ किछु कटु भऽ जाइत छैक । ओकर बादो घरमे सभ घंटो चुप्प रहैत अछि । मुन्नी, मुकेश अपन-अपन किताब कापी लऽ कऽ एक दिस बैसि जाइत अछि । बड़का दुनू बच्चा सेहो घरक कोनो काजमे व्यस्त भऽ जाइत अछि । पार्वती अपन सुरवा-कोराक नारिकेर तेल बला डिब्बा आ पुरान कपड़ा निकालैत छथि । फेर कोनो फ्रॉकक रफ्फू करऽ वा ढील भऽ गेल बटनकेँ मजगूतीसँ टाँकऽ मे व्यस्त भऽ जाइत छथि । अपनो गनेश बाबू अपन जेबीसँ मोचरल-नोचरल सिकरेटक डिब्बा तकैत बहार करैत छथि आ फेर ककरो दीयासलाइ दऽ जयबाक लेल कहि, सिकरेट जराकऽ बिना कपड़ा बदलने बैसि जाइत छथि ।

बच्चा सभ एहि आशंका मे स्तब्ध छल । गनेश बाबू एक-एक बच्चाक मुँह निहारैत जेना पढ़लनि आ बहुतो दिनक बाद एतेक स्नेह आ ममत्व सँ बिहुँसैत बजलाह—तोरा सभ केँ नहि अयबाक छौक की । तैयार किएक नहि होइत छह फटाफट । देरी भऽ जयतौक तँ सभ चौपट ।' हुनक वाक्य समाप्तो नहि भेल छल कि सभ बच्चा ओही अंदाजमे कुदैत-फनैत छिरिया गेल जेना सर्कसमे अपन कवाइत देखौला पर सुन्नर सुन्नर पोसुआ जानवर ।

मणीश बाबू जखन अपन बच्चा सभक ई उल्लास देखलनि तँ मनेमन भीजि गेलाह। हुनकर मनक एहि प्रतिक्रियाक बड़ सूक्ष्म लक्षण हुनक आँखिक-कोनमे उमरि गेलनि जकरा पत्नी पार्वती बूझि गेलथिन आ लग जाय हुनक बाँहि पकड़ि बजलीह—'अहाँ एना किएक भऽ गेलहुँ। कोन जरूरत छल घूमऽ जयबाक। हाथमे पाइ अबितैक तँ देखल जयतैक, जेना एतेक दिन नहि, तँ किछु दिन आरो नहि घुमितहुँ तँ की भऽ जयतैक। ओहुना एकर हुनुक परीक्षा होयतैक।'

'की भेलैक आइए घूमि ली तँ? भला कहू कतेक दिनसँ कहुने छिऐक आ एकटा ई छोट-छिन कार्यक्रम नहि बना सकलहुँ। हम एहि शहरमे अपन सम्बन्धीओ सभसँ भेंट करय नहि लऽ जा सकलिऐक। बच्चो सभ आखिर चाहैत होयतैक जे एहि घरसँ निकली। कतहु घूमी-फिरी। से हमरा बड़ जरूरी बुझायल। चाहे जे होअय। आइ एकरा सभकेँ लऽ कऽ बहरयबैक अवश्य।'

'कहऽ जयबैक से तँ निश्चय होयबाक चाही।' पतिक मध्यवर्गीय आकस्मिक मूड चिन्हैत पत्नी समर्पित भऽ कऽ पुछलथिन। एहिबेर पति फेर सोतरयला। कोनो खास स्थानक नाम नहि कहि सकलथिन।

ओम्हर उत्साह आ खुशीसँ कुदैत बच्चा सभ भीतर जाकऽ तैयारी करऽ लागि गेल आ जहिना माय-बापक ई छोट सन विचार विमर्श कानमे पड़लैक तँ सभ ठमकि गेल। छोटकी मुन्नी जे पूछि रहल छलि—'दीदी हम कोन फ्राक पहिरब, ओ चुप्प भेलि ठाढ़ि छलि, किएक तँ ओही काल दीदी ठोढ़ पर आंगुर दऽ चुप्प रहबाक इशारा कयलकै। गप्प सुनऽ दिअऽ। मुकेश कपड़ाक जूता पयरमे पहिरि लेने छल मुदा ओहिमे एकटाक फीता गायब छलैक। पेन्ट-शर्ट जे शरीर पर छल ओएह पहिरने। दोसर ओहिसँ नीक छलैके नहि।

दीदी एहि परिस्थिति सभकेँ नीक जकाँ जनैत छलैक तेँ आशंकित भऽ गेलि जे कोनो आश्चर्य नहि जे ओ सभकेँ तैयार कऽ दिअय आ माय-बापक एहि विचार-विमर्शक परिणाम ई बहराय जे 'आइ आब छोड़ू फेर कहिओ चलब।'

एहि आकस्मिक बाधा सँ मुन्नी कानऽ कानऽ पर भऽ गेलि। किएक तँ ओकरो बुझा गेलैक जे फेर आइ घूमऽ जायब पार नहि लागत। ओम्हर हुनका सभक गप्प कानमे पड़ि रहल छलैक। मुन्नी अधिकतर माय पर बाल सुलभ खीझने कचकचा रहल छलि जे माँ कोनो ने कोनो बखेड़ा तेहन ठाढ़ कऽ दैत छैक जे सभटा बनल बनाओल कार्यक्रम बिगड़ि जाइत अछि। परन्तु तखने किछु ऊँच स्वरमे पिताक चेतौनी कानमे पड़लैँ।

'की भेलऽ?' तोरा सभ जल्दी तैयारी किएक नहि कऽ रहल छह?' सभक मुँह पुनः पसरि गेलै। फेर तेजी सँ सभ तैयार होमऽमे लागि गेल। मुन्नी फेर अपन समस्या दोहरौलकैक। दीदी किछु असमंजसमे पड़ि गेलि। फेर बुझौलकै—'की हेतै? ओएह पहिर ले। खूब नीक लगैत छौ।' ओ ओकरा आगाँ जे फ्राक बढ़ौलकैक से खूब पुरान भऽ गेल छलैक। फलेक ठामसँ ओकर कशीदा उघरि गेल छलैक। दोसर जे ओएह पहिरि कऽ घरोमे काज चलबैत छलि आ बाहरो जायत? से ओकर बाल मन केँ पसिन्न नहि पड़ैत छलैक। ओ थोड़ेक नाकुर नुकुर कयलक मुदा दीदीक ई बुझौला पर जे 'कपड़ा लत्तामे की होइत छैक, कपड़ा नीक नहि रहलासँ मनुष्य नीक नहि रहि जाइत अछि की? मनुष्य पोशाकसँ थोड़े चीन्हल जाइत छैक।' दीदी माँ सँ एहि गप्पकेँ वर्षोसँ सुनैत आ मानैत आबि रहल छलि। से ओ बहिनी केँ बुझा-सुझा केँ कहय लागलि। तो तँ अपने तेहन सुन्दरि छेँ जे तोरा नीक कपड़ा पहिरबाक आवश्यकता नहि। नीक कपड़ा तँ ओकरा चाहिऐक जे देखबामे नकपिच्ची होअय।' ओ बुझासुझाकेँ ओकरा फ्राक पहिरा देलकैक। मुदा मुन्नीक ओ प्रफुल्लित चेहरा झमायले रहि गेलैक।

'—देख मुन्नी तोँ यदि कपड़ा लऽ कऽ दुखी हेबेँ तँ बुझि जो! फेर ओएह हेतौ जे हरदम होइत छैक। बाबूजी दुखी भऽ कऽ घूमऽ जायब छोड़ि देथुन। दीदी बुझेबाक ढंगे चेतौलकैक—देख हमर कुर्ती किछु छोट अछि। पिघुलका सीअनि खोलि देबऽ पड़लै-ए। अछलाह लगैत छैक। तँ की भेलैक कपड़ा तँ छैक। हम इएह पहिरिकेँ बहरायब। मुकेशोक कपड़ाक तँ इएह हाल छैक। मनुक कपड़ाक सेहो इएह हाल छैक, कपड़ासँ की होइत छैक। कपड़ासँ थोड़े मनुष्य बड़का भऽ जाइत छैक वा नीक भऽ जाइत छैक।'

दीदी वयसक हिसाबसँ किछु अधिके गंभीर आ सोझरायल भाषामे ओकरा सभकेँ बुझा रहल छलैक। आब मुन्नीक मुखाकृति देखलासँ साफ पता चलि रहल छलैक जे आब ओ मनसँ जयबा लेल तैयार भऽ रहल अछि। तावत, एकटा जुताक फिता कसने दोसर खुजले छोड़ने मुकेश दौड़ि कऽ दीदीकेँ पाँजमे पकड़ि पुछलकैक—'हम सभ आइयो नहि जयबैक दीदी?'—'के कहलकौक नहि जयबैक? तोँ तैयार भेलेँ? देख तोँ फेल नहि फेरलेँ। थकरि ले।' ओ उत्साहित भऽ कऽ चलि गेल। मनु आ दीदी सभ अपन-अपन पुरनका कपड़ा मे सँ बीछिकऽ पहिरि जुलूसक रूपमे चिहुँकैत माय लग आयल ओकरा सभकेँ देखि मायक मन प्रसन्न होयबाक बदलामे भीतरसँ टूटि गेलैन। ई हुनक आँखि कहि देलकनि। बड़की बेटी आँखि पढ़ब जानि गेल छैक।

माय रोज पहिरऽ बला साड़ीमेसँ नीक छिटबामे कठिनताक अनुभव करैत छलीह। बड़की बेटी ताकिकेँ कहलकै—'इएह पहिर सकैत छेँ माँ! आर कोनो दोसर काजक नहि छैक।' माय बिना किछु सोचने साड़ी हाथमे लेलक आ पहिरऽ लागलि। बेटी हुनकासँ आँखि नहि मिलौलक।

ओहि घरमे एहिसँ किछु मिनट पहिने नचैत खुशी जेना टाङ्गमे मचोर पड़ि गेलाक कारणे एक कोनमे बैसल काँहि काटऽ लागल।

दू कोठलीक एहि घरमे जेना सभ घटना गप्प सप्पसँ जुड़ल रहय । तैओ किछु जोरसँ दोसर चेतौनी दैत पिता बजलाह जे—'लगैए जे तों सभ चौपट्ट करबें । कतेक देरी लगैत छौक तैयार होबऽ मे !'

एहि चेतौनी पर सभ फुर्तिगर भऽ गेल । माँ बड़की बेटीसँ पुछलथिन—'केश ठीक छौ ?' ओ साधारण रूपेँ अपन धनगर लम्बा केशक जुट्टी लपेटलनि आ चप्पल पहिरि तैयार भऽ गेलीह । असलमे ओहि कालमे नहि भेटलैक । पता नहि कोन बच्चा राखि देलकैक अकरा तकबामे घंटो लागि जायत । ओ अपन बेटिएकेँ अपना बना लेलनि । ओ अधिक काल, बिना अपनाक एहिना काज चला लैत छथि ।

दोसर कोठलीमे गणेश बाबू किछु सोचमे बैसल छलाह । चेतौनी बड़ कऽ बैसि गेल छलाह । सभहक पयरक शब्द सुनि उत्साहित भऽ ठाढ़ भऽ गेलाह ।

हुनका देखितहि सभ हतप्रभ भऽ गेल ।—'ई की तों सभ एखनो धरि तैयार नहि भेल छें ?'

—'आबकी, सभ तैयार छैक. चलू ।' पत्नी हुनक आश्चर्यक अर्थ बुझैत कहलथिन । मुदा गणेश बाबूकेँ डकमूड़ी लागि गेलनि । सभ बच्चाकेँ मूड़ीसँ पयर धरि निहारलनि आ फेर पत्नीकेँ, आ चुपे ठाढ़ रहलाह । पत्नी एहि दृष्टि सँ परिचित छलीह । गणेश बाबूक मनक ई हाहाकार ओ कतेको बेरि एकान्तमे सुनि चुकल छलीह बच्चाकेँ सूतल रहलापर ।

—'की बात छैक ? आब कहीं अपने देरी कऽ रहल छी ।' पार्वती बजलीह आ बेटीकेँ आदेश देलनि जे ओ केवाड़मे ताला लगाबय ।

गणेश बाबूक आँखि जेना बेचैनीसँ सभ लोक पर दौड़ रहल छलनि— बेटाक पयर पर नजरि बऽ कऽ बजलाह—'ई एही जुत्तामे जायत ?' हुनक स्वर टूटल आ पस्त छल । पत्नी देखलथिन आ अत्यन्त हड़बड़ा गेलीह । बजलीह—'की करू ई छौड़ा छैक विचित्र । खूब जोर-जोरसँ बान्हि कऽ फीताकेँ तोड़ि देलकै आ एकटा फेकियो देलकै कतहु आ आब एखन'''?' पत्नी विवशतासँ भरि गेलीह । फेर एकाएक बजलीह-'मुन्नी कनी तों अपन जुतामे देख तँ, जूता तँ बेकार छौक । भरिसक फीता होइ ।' आर संयोग-वश जे फीता निकलल से काजक फीता छल । फेर फीता लगाओल गेल ।

मुदा गणेश बाबूक मुँह एतेक बिगड़ल छल जे लगैत छल जेना ओ दुखि-ताह होथि । ओ एक गिलास जल मंगलनि आ बैसि गेलाह । बेटी घर बन्द करबाक बदलामे हुनका जल आनि कऽ देलकनि । ओ गट-गट कऽ पीबि गेलाह आ निरीह दृष्टिसँ पत्नीकेँ देखलनि । पत्नी हुनक नजरिकेँ चिन्हलथिन । आ फेर ओ दोसर दिस ताकय लगलीह ।

—'कतेक दयनीय लगैत छै सभ किछु नै ?' ओ पत्नीकेँ पुछलथिन ।

—'कतेक दयनीय लगैत छैक ?'

—'ठीक तँ छैक । चलू उठू । मुदा आबो अहाँ कहि नहि रहल छी जे जयबाक कतऽ अछि । बीच बाटमे जा कऽ तँ निश्चित नहि करब ?' पत्नी वातावरणकेँ हल्लुक करबाक प्रयासमे कहलथिन ।

—'हमर तँ मोन बैस गेल पार्वती । भला कहू, एहि ड्रेस मे हिनका सभकेँ लऽ कऽ जाहि घर मे जायब से की सोचतैक ।'

—'अहाँ तँ अनेर गप्पमे ओझरा गेलौं । हम जँ जायब तँ अनकर घर थोड़बे जायब ? जतय जायब से अपने सम्बन्धी सभ जायब । जँ हमर सम्बन्धी छथि तँ हमर हालति अवश्य बुझैत होयताह । एहन महगीमे एतेक कम दरमाहा, एही पाइसँ तँ सभ किछु करय पड़ैत अछि, बच्चा सभक पढ़ाइ लिखाइ, मकान भाड़ा सभटा एही दर-माहासँ । आ दोसर जे कपड़ा लत्ताक कोनो अन्त छैक । कतबो नीक पहिरय लोक मुदा ओहूसँ नीक आ दामी कपड़ा भेटि जाइत छैक बजारमे ।'

—सभटा ठीक छैक । परन्तु जीवनमे, समाजमे रहि कऽ एहि गप्पकेँ छोड़ि नहि सकैत छी । कोन ठेकान हमरा आ हमर बच्चा सभकेँ एहि ड्रेसमे देखि कऽ हमर सम्बन्धीयोकेँ हीनताइ बुझाइनि । तखन उलटे एकटा समस्या ।' ओ बजलाह । —'बाह, सम्बन्धी कपड़ा सँ थोड़के चिन्हल जाइत छैक । अहाँ आब ई सभ छोड़ू, उठू ।'

मुदा ओ नहि उठलाह । बच्चा सभ ओहिना एहि गप्प सँ आशंकित भऽ गेल छल । कोनो आश्चर्य नहि जे एहि ठाम आबि कऽ जयबाक कार्यक्रम रद्द भऽ जाय । किएक तँ एहन होयब कोनो नव गप्प नहि छैक से ओ सभ बाहर निकलि कऽ परिणा-मक प्रतीक्षा करय लागल ।

—'हिनका सभकेँ एहि हालत मे देखि मोन होइत अछि जे अपन मुँह अपने नोचि ली । हम अहाँ लोकनि केँ नीक सन कपड़ा तक नहि दऽ सकैत छी । हम सभ मनुख सन कपड़ा पहिर कऽ निकलि नहि सकैत छी ।' ओ उत्तेजित होइत बजलाह ।

पत्नी बुझौलथिन—'बच्चा सभ की सोचतैक ? उठू चलू । एतेक उत्साहसँ बच्चा सभ तैयार भेल अछि । नहि गेलासँ एकर सभक मन दुख भऽ जयतैक । उठू ।'

गणेश बाबू लगभग मने मन निश्चय कऽ चुकल छलाह जे एहि दशामे ओ हुनका लोकनिकेँ बाहर लऽ जयबाक गप्प छोड़ि देथि । मुदा ओहि क्षण हुनका ई मनमे अयलनि जे एहि तरहेँ कोनो ने कोनो समस्याक कारणे ओ कतेको बेर बच्चा सभकेँ तैयार करबा कऽ फेर बाहर घूमै लेल जयबाक कार्यक्रम रोकि देने छथिन । बच्चा सभ तँ जेना एहि गप्पक लेल अभ्यस्त भऽ गेल अछि । ओकरा सभकेँ आश्चर्य होइत छैक घूमऽ जयबाक गप्पसँ । ई गप्प ठीकसँ बुझैत छैक । एक बेर तँ ओ अपन

कानेसँ सुनलथिन । बच्चा सभ अपनामे गप करैत छलनि जे बाबू जीक घुमड लs जयबाक कार्यक्रम जखन भs जाय तखने शुरू । कहैत तँ ओ कतेक बेर छथिन ।'

सुनि कs हुनका तामस नहि दया अयलनि । ताहि द्वारे आइ तँ जेना होयत' बच्चा सभकेँ घुमयबाक जरूर । बहरीमे बच्चा सभ आशा आ निराशामे उबैत डुबैत प्रतीक्षा कs रहल छल । मुदा ई लोकनि एखनि धरि बहरायल नहि छलाह । गप्पे करैत छलाह । आब बच्चा सभ खौंझा रहल छलनि ।

तखन जा कs ई लोकनि बहरयलाह । घरमे ताला लगाओल गेल । पार्वती पूर्ण सावधानीकेँ ध्यानमे राखि पुछलथिन 'पानि भरि कs राखल अछि की नहि ? एहन ने हो जे ओतेक रातिकेँ घूरी आ पानिए नदारद । एहि कलक कोनो भरोस नहि ।'

—'सभटा देखि लेलियैक । बर्त्तन बासन धोल-धाएल छैक । आबि कs कोनो तरद्दुत नहि करय पड़तीक ।' बच्ची बाजलि ।

ओ लोकनि धीरे-धीरे सड़क पर बढ़लाह । बेटा अपन पिताक बामा हाथ आ छोटकी दहिना हाथ धयने खुशीसँ चिचिआय लागल । पाछू-पाछू पार्वती ओ दुनू टा बड़का बच्चा ।

—'किछु सोचलहुँ कतय जयबाक अछि ?' पार्वती अपन पतिसँ पुछलनि ।

—'चलू बस स्टैण्डपर विचारि लेब ।' ओ बजलाह तँ बड़की बेटी आँखि दाबि कs अपन मायकेँ देखलक आ पिताक स्वभाव पर बिहुँसलि । पत्नी सेहो बिहुँसलीह ।

ओ लोकनि पाँच मिनट चललाक बाद बस स्टैण्ड पहुँचलाह । कोनो बस नहि छलैक । एकटा बसक अयबाक समय भs गेल छलैक । दुपहरियाक समय । गर्मीक मौसम । उमससँ भरल । ओतs गाछो नहि छलैक ! कोनो छाँह नहि छलैक ने कोनो दोकान आदिक छाहमे भs कs ओ लोकनि आर लोक सभक संग, प्रतीक्षा करय लगलाह ।

—सोचैत छी बससँ सोझे चिलकोहरा चलल जाय रामेश्वर भाइ ओतs । बहुत दिनसँ नहि गेलहुँ अछि । भेटल छलाह तँ उपराग दैत छलाह । मुकेशकेँ तँ ओ देखनहुँ नहि छथिन ।' एकाएक गणेश बजलाह तँ पार्वती सेहो उत्साहित भs गेलीह ।

—'हँ बड़ नीक स्वभाव छनि । बहिनो दाइ बड़ स्नेही स्वभावक छथिन । नीक रहत ।'

आर तखन फेर सभ बस अयबाक प्रतीक्षा करय लागल । लगभग बीस मिनटक बाद बस अयलैक आ सभ बच्चा बड़ उत्साहसँ ओहिपर सवार भs गेल । सभसँ पाछू पति पत्नी । भीड़ बड़ कम छलैक । टिकट कटौलाक बाद कन्डक्टर बस खोलबाक लेल कहलकैक । बस धीरे-धीरे ससरब शुरू भेल तखने लोक सभ भागि कs पौदान पर लटकs लागल । देख कs बच्चा सभकेँ अहुमे आनन्द अबैत छलैक ।

ओ बस कतेको स्थान पर रूकैत आखिर चिलकोहरा पहुँचल । ओ लोकनि उतरि रामेश्वर भैयाक घर दिस चलि पड़लाह । ओ जाइत छलाह बड़ उत्साहमे, तैओ लगैत

छलैक जेना ढंगमे उत्साह नहि होअय । उत्साह जेना सेरा गेल होअय । फेर चलैत-फिरैत दस मिनटक बाद ओ सभ बंगला नुमा घरमे पहुँचलाह । खूब खुजल जगह छलैक । बड़ पैघ हाता । पश्चिम सोहानी पुरक ओकरा समहक अपन दम घोंटू गन्दा गली सन नहि ।

रामेश्वर भैया गणेश बाबूक पिसियौत भाइ छथिन । बिहार सरकारमे कोनो अफसर छथिन । गेट लग पहुँच कs जखन ई काफिला रूकल तँ थोड़े काल जेना भीतर जयबाक साहसे नहि होइत छलैक । तैयो ओ लोकनि धीरे-धीरे अहातामे जा कs बरण्डा पर पहुँचलाह । सोर कयलथिन । एकटा चपरासी सन आदमी आयल । ओ सभकेँ एँड़ीसँ मूड़ी धरि देखैत पुछलकनि—'की अछि ? साहेब घर पर नहि भेंट करैत छथिन ।'

—'जनैत छी । जा कs कहून गणेश शंकर आयल छथि ।' ओ किछु रोबसँ कहलथिन । आ ओ घुमि गेल । लगभग दु-तीन मिनटक बाद एकटा सज्जन बहरयलाह । भद्र सन बड़ भव्य । बच्चा सभ तावत ठाढ़ छल आ अगुता रहल छल । पार्वती माथ पर आँचर धs कs एक दिस ठाढ़ भs गेलीह । ओ साहेब जखन अयलाह तँ गणेश बाबू प्रणाम कयलथिन । बच्चा सभ सेहो प्रणाम कयलकनि । साहेब जेना अमौकर्यसँ चिन्हैत बजलाह—'ओ ! गणेश ! एम्हर कोना अयनाइ भेलs ? आबs ।' आ भीतर मुड़ि गेलाह । हुनका पाछू पाछू बच्चा समेत इहो सभ भीतर गेलाह एकटा भव्य ड्राइंग रूममे हुनका बैसा कs ओ भारी भीतर चलि गेलाह ।

नहि जानि किऐक गणेश शंकरक सपरिवारकेँ बुझाय लगलनि जे किएक अयलाह ? एतs सभ गोटाक आँखि साहेबक व्यवहारकेँ देखने छल आ किछु नीक नहि लागल छलैक । बच्चा सभ जेना बड़ असुविधाक अनुभव कs रहल छल । ओ स्वयं अपन गंदा पयर आ चट्टी समेत ओहि सजल—सजाओल ड्राइंग रूममे जयबासँ घबरा रहल छलाह, बच्चा सभ तँ आर धकमका रहल छलैक ।

—'बाबू जी हम सभ किनका ओतs आयल छियनि ?' के छथिन ई ? मुकेश 'अचानक पुछलकनि अपन पितासँ बड़ धीरेसँ फुसफुसाइत । मुँहसँ बुझाइत छलै जेना ओकरा विश्वास नहि भs रहल छलैक । ओ कोठलीमे चारूकात तकैत छल ।

—'कक्का ? मुन्नी धीरेसँ जेना अविश्वास करैत पुछलकैक—हम सभ प्रणाम कयलियनि तँ कनिको नहि कहलनि नीके रहू ?' पिता बेटीक माथपर हाथ फेरैत बजलाह—'कोनो बात नहि ।'

—'बाबू जी कखन चलब एतयसँ ?' बड़की बेटी अगुताइत पुछलकनि तँ पिता एकाएक चिन्तित भs गेलाह आ बजलाह—'एखने चलैत छी ।'

तखने साहेब फेर ड्राइंग रूममे अयलाह आ कनी असमंजस देखबैत बजलाह—

असलमे टी० वी० पर बड़ नीक प्रोग्राम दऽ रहल छै, मे सभ ओकरे घेरने बैसल अछि।' ओ बिना सकोचके बेधड़क कहि गेलाह। 'ताहि परसँ एनेक लोक सभ आबि गेल अछि अड़ोस पड़ोसक। बैसबाक जगह सेहो नहि बाँचल छैक नहि तँ अहूँ लोकनि ओतय चलि कऽ बैसितौं···।'

—'जी नहि भैया. एखन हमरा सभ चलिते छी। एम्हर आयल छलौं। बच्चा सभकेँ सेहो बहुत दिनसँ कहने रहिवैक लेकिन मौका नहि भेटैत छल। आइ मौका भेटल से घूमऽ लेल निकललौं।'

—'एम्हर आबी तँ फेर आयब कहियो।' ओ बजलाह।

गणेश बाबू प्रणाम कयलथिन। बच्चो सभ बिन मोने प्रणाम कयलक। अहातामे बहुत रास फूलक गाछ छलैक। ओ फूल देखि कऽ बुनु छोटकाक मोन बड़ खुशी भेल छलैक। लोभा गेल छल। मुदा जयबा काल घुरियोकेँ नहि देखलक ओ सभ। जल्दीसँ निकलि कऽ ओ सभ सड़क पर अयलाह। आ चलऽ लगलाह।

तखने गणेश बाबूक कानमे आवाज पड़लनि मुकेश दीदीसँ पुछि रहल छलैक—

—'दयनीय माने की होइत छैक दीदी ?' दीदी डाँटि देलथिन। किछु नहि बजलीह।

—'बाजू ने दीदी, दयनीय माने की होइत छैक ?' ओ दोबारा पुछलकैक।

—दयनीय माने जकरा पर दया आबय।'

—दया आबय माने ?'

—'गरीब।' दीदी कहलकैक आ पुछलकै— किएक पूछै छें ?

—'हम सभ गरीब छी ? ओ पुछलकैक। बाबूजी जे घरमे कहैत छल-खिनहेँ।' आउ दीदीकेँ घटना मोन पड़लैक।

गणेश बाबू सुनलनि। चलैत-चलैत पत्नीकेँ देखिकऽ बुनु गोटा अपमानक अनुभव करैत छलाह। बजैत किछु नहि छलाह। आ बीच-बीचमे बच्चा सभहक बाँहि पकड़ि कऽ सड़कक काते कात चलबा लेल कहैत छलथिन।

—'बाबूजी पानि पीयब।' मुन्नी बजलैक। ओकर मुँह रौद आ पसीनासँ लाल भेल छलै।

—'अखने थोड़े कालमे बस स्टैण्डपर पहुँच जायब। ओतय पीबि लेब।'

—'बड़ प्यास लागल अछि।'

—'बस, आबि गेलहुँ।'

ओ लोकनि तेजीसँ चलय लगलाह। बस स्टैण्ड पहुँचलाह, कल बन्द छलैक पानिक कोनो प्रबन्धो नहि छलैक। बगलमे एकटा पानि बेचय बला छल। पन्द्रह पाइए गिलास दैत छलैक। पानिक भाव बूझि गणेश बाबू क्रोधमे बड़बड़यलाह – अन्हेर छै। मुदा पानि देखि बच्चा सभहक प्यास जेना आरो बढ़ि गेलैक। पियास ओना तँ लगभग सभकेँ लागि गेल छलैक। पन्द्रह पाइए प्रति गिलास पानि, मात्र बच्चे सभकेँ पियाकऽ बसक प्रतीक्षा करय लगलाह।

गणेश बाबू पार्वती आ दीदी अपन-अपन मोनसँ पन्द्रह तिया पैंतालीस पाइक बचतक चक्करमे अपन प्यास खतम कऽ लेलनि। भऽ सकैत अछि रस्तामे काज दिअय। सम्भव: इहो ने बस ततमे कतहुँ काज दऽ दिअय कतहुँ कम नहि पड़ि जाइ। इहो संभव भऽ सकैत अछि। पार्वती अपन पति आ दीदी अपन पिताक आदतिसँ बड़ परिचित अछि। एहि द्वारे बुद्धिसँ सदिखन तैयार रहैत अछि, परिस्थितिक मोकाबिला करबाक लेल।

—अहाँके अप्रलाह लागल ओतय जा कऽ ने ?' पार्वती पुछलथिन।

—स्वाभाविक अछि। विकट जमाना छैक। अपने आग्रहसँ बजौलनि। हम की जनैत छलहुँ जे एहने आग्रह आ हमर एहने भाइ।' ओ क्षुब्ध भऽ कऽ बजलाह।

— जाय दिऔक। हमरामे आ हुनकामे भाइक सम्बन्ध भैओ नहि सकैछ। ई भाइमे, माने, ममिऔत पिसिऔतमे एतेक अन्तर कोना होयतैक ? ओ तँ कोनो आन लोक लगैत छथि ?' पत्नी बजलीह।

—हुँ अफसर छथि। अफसरकेँ ठाठ छैक, रुतबा छैक। सभ छैक। हम तँ निर्धन छी। मामूली काज करैत छी, कोनो तरहेँ बच्चा सभहक संग निर्वाह करैत छी।' ओ बजलाह।

—'हमरा विचित्र लागल जे बहिनदाइ एकोबेर हुलकियो देबऽ नहि अयलीह। बड़ कोनादन लागल टी० वी० मे बड़ नीक प्रोग्राम भऽ रहल छलैक, तैं सँ की।'

—'छोड़ू चर्चा। आब एकर चर्चा हरदम लेल बन्द।' ओ संयत क्रोधमे बजलाह।

—बाबूजी अहाँ कहलहुँ जे काका छथि। मुदा ओ तँ एकोबेर पानिओ दऽ नहि पुछलनि। हमरा कतेक जोरसँ प्यास लागल छल। हम सभ तँ नयो अबैत अछि तँ तुरंत पानि दऽ पुछैत छिऐक जे भरिसक रस्तामे चलला सँ प्यास लागि गेल होइक ! मुन्नी पुछलकनि।

—हेँ बाबूजी, आ पूरा घरमे देवालपर कतहु सरस्वतिओक फोटो छलै एकोटा ? आकि विद्यापतिक, तुलसी दास आ कबीर दासक कोनो फोटो छलनि ? केहन कका छथि ?' मुकेश आश्चर्य व्यक्त कयलक तँ गणेश बाबू आ हुनक पत्नीक मुँह पसरि गेलनि।

—हँ बेटा। गड़बड़ छलैक। ताही द्वारे तँ ओतय सँ अपना सभ जल्दी चलि अयलहुँ। आब चलू दोसर ठाम चलैत छी घुमऽ फिरऽ।'

पत्नीसँ ओ परामर्श कयलनि जे ओ लोकनि अपन भातिज ओतय चलताह। रस्तामे बससँ उतरि कऽ मुस्किलसँ एक मिनट पड़त। ओतय सुभीतासँ बैसब। बहुत दिन भेंटो भेना भऽ गेल। ओ लोकनि दू बेर घर आबि चुकलाह अछि।' पत्नी सहमति देलथिन।

बस अयला पर ठसाठस भीड़। तैओ ओ लोकनि कहुनाक चढ़ैत गेलाह अपेक्षित स्टाप पर उतरलाह। फेर गेलाह भातिजक घर। बाहरसँ सभ किछु शान्त छल।

कौलबेल पर आँगुर देलनि। दु-तीन प्रयासक बाद केबार खोलि कऽ जे व्यक्ति बाहर भेलाह से स्वयं हुनक भातीजे छलाह।

—'अरे अहाँ कक्का ?' ओ कहलथिन।

—हँ, हम सभ गोटय छी। आइ घुमऽ निकललहुँ। बहुत दिनसँ हिनका सभकेँ एक प्रकारे परतारि रहल छलियनि।' ओ बजलाह।

—'आउ ने।' ओ सामान्य ढंगसँ स्वागत करैत अयबाक आग्रह कयलथिन।

ओ लोकनि धीरे-धीरे केबार लग पहुँचलाह। आ भीतर जे हुनकी देलथिन तँ ओतय ठाढ़े रहि गेलाह। कोठली कसमकस भरल छलैक। बीचोमे स्त्री-बच्चा बैसल।

—'टी० वी० पर सिनेमा चलि रहल छैक ने! से लोक जमल अछि, आब ककरा मना करियैक ?' लाचारी ओ तारतम्य मे पड़ैत, जेना संकोच सँ बजलाह।

गणेश बाबू आ हुनक स्त्री जेना आँखिएमे निश्चय कयलनि। बच्चा सभ एतहु ओहिना थोड़े काल असमंजसक स्थितिमे ठाढ़ रहल फेर अगल-बगल चलऽ फिरऽ लागल। भातिज बेचारे धर्म संकटमे पड़ि गेलाह। की करथि? बजलाह—'देखू। एतेक दिनक बाद अहाँ लोकनि अयबो केलहुँ तैओ बैसा तक नहि सकलहुँ।' ओ क्षमा प्रार्थी सन लगैत छलाह।

—'नइ-नइ कोनो गप नहि। हम सभ फेर कहियो आबि जायब। एखन चलैत छी।' गणेश बाबू जेना भातिजकेँ संकटसँ उबारलनि।

बच्चा समेत ओ चलय लगलाह तँ भातीज सीढ़ी धरि छोड़य अयलथिन।

परञ्च पुनहुएतहु अनुपस्थित छलथिन। पार्वतीकेँ एहि गप्पक धक्का लगलनि। ओ बजैत किछु नहि छलीह परन्तु भीतरसँ कानि रहल छलीह। की परिस्थिति छैक। हिनकर पैह भातिज! आइ हिनका लग टी० वी० वा दुनियाँक आन कोनो नीक उपयोगी साधन, की उपलब्ध नहि छनि? कतय सँ? नोकरीयोतँ ई पैह बला करैत छथि। मुदा एतेक हौंसा एतेक साधन कतयसँ भऽ गेलनि'

ओ लोकनि सड़कक कातेकात चलि रहल छलाह आ चुप्प छलाह। बच्चा सभ अपेक्षाकृत निश्चिन्त भऽ चलि रहल छल। जकरा देखि कऽ पति-पत्नी अपना केँ आर अपराधी आ दुखी अनुभव कऽ रहल रहथि।

एतेक दिनक बाद तँ बच्चा सभ केँ घुमयबाक अवसर भेटल छल। जेबी मे पाइ नहि छल तैयो ई सोचि निकललहुँ जे बहुतो दिनसँ बच्चा सभ के मनोरंजनोक लेल घरसँ बाहर कतहु नहि लऽ जा सकलियैक अछि। एकरा सभकेँ कतहुँसँ घुमा-फिरा अनबाक चाही।' आ अयलहुँ तँ पैह सभ भऽ रहल अछि। की विचित्र संयोग छैक।'

—आब अपना सभ कतय जायब बाबूजी?' मुन्नी पुछलकनि तँ पिताकेँ व्यंग्य सन लगलनि। ओ ओकर मुँह देखलनि फेर ओ अपन पत्नीक मुँह देखलनि आ पुछलथिन—आब!

—'हम की कहू!' पत्नी कहलथिन।

फेर थोड़े सोचि कऽ पैह बजलाह—'ओ हुजै टहलि कऽ पहुँचय योग तँ दूरी छैक। कमलेक घर पर चलैत छी। ओकरो सँ बहुत दिनसँ भेँट नहि भेल अछि। बेचारीक पति कतेको माससँ ससपेंड छलथिन। भेँटो कऽ लेबनि।'

बच्चा सभ ऊबि चुकल छल। मुदा जयबाक छलैक तेँ ओ सभ ओही दिस जाय लागलह। बच्चा सभ थाकि गेल छल। कखनो-कखनो पति पत्नी ओकरा सभक उत्साहकेँ बढ़बैत आगू बढ़ल जा रहल रहथ।

ओतय जखन पहुँचलाह तँ वातावरण मे कोनो फर्क नहि छलैक। ओतहु सभ टी० वी० घेरने छल मुदा ओतऽ पार्वतीकेँ दोसरे प्रकारक किछु आर विचित्र लगलनि। हिनका लग एतेक पाइ कतयसँ अयलनि! कतऽ ई ससपेण्ड छलाह! खैर जे होइक। पहुँचला तँ कमला बैसौलथिन अपने लगमे आ अपन पति आ बच्चा सभहक सङ्ग टी०वी० मे व्यस्त भऽ गेलीह। कुशल क्षेमो नहि पुछलथिन जे कोना छी! कोना अयलहुँ एम्हर! बच्चा सभ कोना अछि!

ओ सभ बैसलाह थोड़े काल। बच्चा सभ तँ खास कऽ कछमछ करऽ लागल। अगुता गेल छल।

—माँ चल ने जल्दी। चल ने माँ एतऽ सँ। आ तखन सभ उठि कऽ चलय लगलाह। एक गिलास पानिओ तक लेल नहि पुछल गेलनि। ओ सभ चोटा गेलाह। निकललाह तँ बच्चा सभकेँ फेर प्यास लागि गेल छलैक।

धीरे-धीरे साँझ भऽ रहल छलैक। घूमऽ बला मूड बच्चा सभक मिझा गेल छलैक। तैयो अंतिम रूपसँ गणेश बाबूके अपन एकटा अभिन्न स्मरण अयलनि। ओकरा ओ बहुत स्नेह करैत छलथिन। आइ काल्हि सचिवालय मे कोनो विभाग मे किरानी अछि। भेँट भेना कतेक वर्ष भऽ गेल। एकहि नगर मे रहिओ कऽ···। ओकरो देखिए लेल जाय। मुदा किछु सोचि कऽ अनठा देलखिन।

सम्बन्धी-यात्राक ई अनुभव बड़ विचित्र छल हुनका सभक लेल। ओ लोकनि पयरे सड़क पर चलय लगलाह। साँझ होयबाक कारणेँ सड़क किछु व्यस्तता सँ भरल लागि रहल छलैक। बच्चा सभकेँ संग मे लऽकऽ चलबामे कने बेसी सतर्क भऽ कऽ चलय पड़ि रहल छलनि। पार्वती आ गणेश भीतरसँ दबि गेल रहथि आजुक एहि यात्राक अनुभव सँ।

बच्चा सभ भुखलो छल थकलो छल, मुदा बाजि नहि रहल छल किछु। पति-पत्नी सोचैत रहथि जे ई केहन घुमनाइ भेलैक। एहिसँ एकरा सभकेँ की मजा भेटल होयतैक। मनोरंजनक नाम पर घुमबहु अयलियैक तँ बेचारा सभकेँ भुखले पेटे पयरे-पयरे सड़क नापऽ पड़ि रहल छैक। ओ आत्म ग्लानिसँ भरि गेलाह। कोना परतारियैक?

—'भूख लागल-ए बाबू जी ।' मुकेश बाजल ।

—'हमरो लागलए बाबू जी ।' मुन्नी बाजलि ।

दुनूकें आश्वासन दैत कहलखिन 'एखने किछु कीन दैत छी, कनेक रुकू ।' आ फेर चलय लगलाह । ओ जनैत छलाह जे जेबीमे कतबा पाइ अछि । सभक मिला कऽ बसक किरायो टा नहि निकलि सकत । मुदा किछु ने किछु करहि पड़त । बच्चा सभ भुखायल अछि । पत्नी कें देखलनि तँ ओ चलैत-चलैत मूड़ी झुका लेलखिन । भरिसक मनेमन कानि रहल छलीह ।

—'एहन लगैत अछि पार्वती, जेना एहि पूरा शहरमे अपना सभ बाहरी आदमी छी । एतय जेना क्यो नहि अप्पन । हमरा सब कतय जायब आब भला अहीं सोचू ।' ओ बजलाह तँ स्वर काँपि रहल छलनि । पतिक गप जेना पार्वतीकें आब मनेमन तैयार कऽ देने होअय । बजलीह—

'यदि एतबहि गोटाकें सम्बन्धीक मानल जाय तँ ठीके अपन क्यो नहि अछि । लेकिन ई कोना भऽ सकैत अछि । बहुतो होयताह अपन । हमरा जकाँ हमर, परिस्थितिमे हमरे सन मिलैत जुलैत लाचारीमे जे जीवन बिता रहल होयताह ओ हमर अप्पन छथि । बहुतो अछि एहन ।' जेना बुझौलखिन ।

—'हम सम्बन्धीक गप करैत छलहुँ । आब तँ ककरो घर जायब कठिन अछि एहि टी० वी०क द्वारे ।' पति, जेना हताश भऽ कहलखिन ।

—'एतेक पाइ पर्यन्त नहि अछि जे एकरा सभकें किछु खुआ सकितैक । सिनेमा देखबाक तँ सपनो नहि देखल जा सकैत अछि ।' पति अपन आर्थिक विपन्नता सँ दुखी होइत बजलाह ।

—'नहि, सिनेमा नहि । अपना लोकनि एकरा सभके कतहु एहन मनलग्गू ठाम लऽ चलैत ।' पत्नी कहलखिन । पतिकें ई विचार नीक लगलनि आ चलि पड़लाह । बामा कात बला सड़क पर । ओ लोकनि चलल जा रहल रहथि ।

बच्चा सभ थाकल आ हताश छल । चलैत-चलैत पत्नीक चप्पलक औंठा बला चमड़ा टुटि कऽ खसि पड़ल ओ पयरकें घिसिया-घिसिया कऽ चलय लगलीह । ओ प्रयास करैत छलीह जे पतिकें पता नहि चलनि । ओ गुमसुम चलि रहलि छलीह । गणेशक मोनमे अयलनि जे किएक नहि शहीद पार्कमे चलि कऽ थोड़ेक काल बैसी बच्चा सभक संग । ई विचार एकाएक मोनमे अयलनि ।

—'एतेक पैघ शहरमे हमरा लगैत छल जे हमर अपन बहुत लोक अछि । आइ भ्रम टुटि गेल । वास्तवमे हमर अपन क्यो नहि अछि । सभ दोसर सन दोसरा लोक । हम तँ असगर छी ।' पति फेर बजलाह दुखसँ ।

—'फेर ई भ्रम । सोचबैक तँ बहुत लोक अछि अप्पन । हम सबहि जकरा

अप्पन बुझैत छलिऐक ओ अप्पन नहि भेलाह, ने धन, ने पद, ने प्रतिष्ठा-कोनोमे नहि । तँ द्वारे हुनका सम्बन्धीक मानलासँ पैघ मूर्खता आर की होयत ।'

—'ई टी० वी० सबटा सम्बन्धकें खण्ड खण्ड कऽ राखि देतैक अगिला पाँच-सात बरखमे । देखैत रहब अहाँ ।' ओ बजलाह ।

—टी० वी० किएक ! आदमी अपने एना कऽ रहल अछि । सम्बन्ध खतम होय बाक जड़ि टी०वी० कहाँ छैक ! ओ तँ अछि सम्बन्धीक, विचार ओकर स्थिति जे ओकर आर्थिक सामाजिक सुरक्षा आ सुविधा उत्पन्न करैत अछि जाहिमे बहुतो लोक ओकर उपयोगिताक परिधिसँ बाहर रहि जाइत अछि । सम्बन्धकें आब एहि प्रकारें बुझऽ पड़त नहि तँ तकलीफ आर बढ़त । हम आर कष्ट काटब, हमर बच्चा हमरोसँ बेसी कष्ट काटत ।'

ओ लोकनि पार्कमे पहुँचि गेल रहथि । ओतुका दृश्य देखि कऽ पति पत्नी, हृदय विचित्र उल्लाससँ भरि गेलनि । ओतय बहुत रास हुनके सनक माय-बाप अपन बच्चा सभक संग गप्प सप्प कऽ रहल छल । मैले कुचैले कपड़ा बला विपन्न बच्चा सब निर्विकार भावसँ खेला रहल छल, सभ खुशी छल ।

मुन्नी आ मुकेश अपने तुरक बच्चा सभक संग खेलाय लागल । एतुका फूलक गाछ सभकें देखि कऽ भूख-प्यास सभटा बिसरि गेल छल । दीदीकें दुलारसँ छिड़िआइत कहय लागल—'दीदी ओम्हर ओहि दिस चल ने, देख केहन सुन्दर-सुन्दर फूल छै ओम्हर ।' दीदी ओकरा सभकें लऽ कऽ ओहि दिस चल गेलि ।

बच्चा सभकें एहि तरहेँ मुग्ध देखि पति-पत्नी एकटा गाढ़ तृप्तिक अनुभव कयलनि एहि पार्कमे । बच्चा सभ उन्मुक्त भऽ दौड़ि रहल छल, खेला रहल छल ।

ओ लोकनि चारू दिस आँखि दौड़ौलनि । ओतय उपस्थित लोकक कपड़ा-लत्ता देखि कऽ मोनमे एहन विश्वास होइत छलनि जे ओ सभटा हिनके सन परिवारक लोक अछि । एहन लोक, जे बुझि नहि पड़ैत छल जे अप्पन नहि छी । एना लगैत छल जेना एकके गामे टाक नहि प्रत्युत बराबरिक स्थिति बला आदमी अछि सभ । एहि अनुभवसँ हुनका सभकें बड़ शान्ति भेटलनि । आब दुनू गोटे एक कात हरियर आ मोलायम दूभि पर लोर्भा-लोभी बैसल रहथि ।

—हमरा तँ लगैत अछि पार्वती जेना एखन अपना सभ जाहि दुनियाँमे रहैत, छी, जाहि शहरमे रहैत छी ताहिमे भरिसक दू दुनियाँक लोक अछि । एकटा दुनियाँक लोक बड़का-बड़का भव्य घरमे अछि आ एहि दुनियाँक लोक, अपने घरमे बंद भऽ टी० वी० देखि रहल अछि आ दोसर दुनियाँमे अछि अपना सभ सन लोक जे एतय पार्कमे वा एही प्रकारक, कतहु खाली जेबी, भारी मन लेने बाहर मनोरंजन कऽ रहल अछि अपन थाकल बाल-बच्चा संग । आ एहि दुनू दुनियाँक विभाजन कतेक साफ-साफ देखाइत छैक । नहि ?'

हमरा सभ तखनसँ ओहि दुनियामे भटकि रहल छलहुँ जे हमर अछिए नहि।
हमर दुनियाँ तँ ई अछि—हमर लोक ई लोकनि छथि आ हमर बच्चाक संगी ई बच्चा सभ छैक जेकरा संग ओ खेला रहल अछि।'

बच्चा सभ खेलाइत दोसर दिस निकलि गेल छल। गणेश अपन स्त्रीकेँ आवेशसँ देखलनि आ दूभिपर राखल हुनकर हाथपर अपन दहिना हाथ रखैत पुछलखिन,—'की सोचि रहल छी पार्वती ?

साँझ बेसी भऽ गेल छल। एक-दू कऽ लोक सभ पार्क सँ जा रहल छल। गणेशो बच्चा सभकेँ सोर पारलनि। ओ सभ दौड़ैत आयल आ बड़ खुशी छल।

ओ जेबीसँ हँसोथि कऽ निकाललनि तँ ओहिमेसँ पचहत्तरि टा पाइ बहरयलनि। सोझाँ दऽ कऽ 'चना जोर गरम' बला जा रहल छल। सोर कयलखिन। पत्नी टोकलखिन 'जे पाइ अछि तँ रखने रहू। अनेरो एहिमे किएक खर्च करैत छी ?'

—'बाह, इहो भाइ तँ हमरे एहि दुनियाक अंग छथि। हमर पाइमे हिनको हिस्सा होइत छनि। हमरा एकरा बाँटि कऽ जयबाक चाही। पत्नी बिहुँसलीह जेना गणेशक आँखि अन्हारोमे देखल जा सकैत अछि।

—'बच्चा सभ भुखले अछि पार्वती।' गणेश बजलाह चना जोर गरम बला लग आयल आ फकड़ा पढ़ैत पुड़िया बनबय लागल।

'आब दुनिया बदलई भैया'
सबहक घरे घर रुपैया,

भुखले बचो ने आब रहुवैया,
पढ़तै बुतरु तेहन पढ़ैया,

तेहने लहरि भरल छै हम्मर चनाचूर गरम।

भरिसक चारि-चारि दानाकेँ सभहक हिस्सामे बदाम पड़ल होयतनि। सभ पार्कमे पानि पीबय लागल।

अंततयसँ दू किलोमीटर पयरे चलबामे बच्चा सभ थाकल नहि, खुशीसँ दौड़ल चलल जा रहल छल आगुए-आगू।

मुन्नी अपन दीदीके कहि रहल छल—'आब अपना सभ एतय सभ छुट्टीमे आयल करब दीदी ? आयब ने ? एतऽ हमरा दू तीन टा दोस्तो बनि गेल आइ। बाजू आयब ने ? माँ आ पिता समटा सुनि रहल छलखिन आ आनन्द आबि रहल छलनि।

▫

इत्यादि



लेखक

□ वृत्तांत नहि

अपना हाथक पूरा ओजन
हमर अपनहि गर्दनि पर लटकि गेल-ए।
इयेह ओही दिनक तँ गप्प थिक
अस्पताल प्लास्टर कऽ देलक-ए।
हमर जुआन छोट भाय
अपन दुनू मोचड़ल पंजा-हाथ कें
पेट पर रखने
हमरा सोझाँ मे आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल-ए।
हमर माथक भार हमरा गर्दनि पर
अंटकि गेल-ए।
हमर बेटा नोचैत अपना माथक केश/
आँखि सँ चिनगी उगलैत
पढ़िते-पढ़िते पोथी कें एक कात फेकि
बिजलौका जकाँ चमकि कऽ
अकस्मात ठाढ़ भऽ गेल-ए! □